राष्ट्रीय प्रतीक

चक्रध्वज

Chakradhvaja

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्र ध्वज

चक्रध्वज

Chakradhvaja

NATIONAL FLAG

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की है। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

राष्ट्र ध्वज

राष्ट्र ध्वज के उद्भव तथा अधिग्रहण की कथा निस्संदेह आकर्षक है। व्यक्तिगत विचारों तथा जातिगत व राजनैतिक विचारधाराओं ने राष्ट्र ध्वज के वर्तमान स्वरूप की संकल्पना तथा परिकल्पना को स्पष्टतः प्रभावित किया है।

यह प्रमाणित नहीं है, पर सामान्यतः ऐसा विश्वास है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समस्तर पट्टियां थीं। मध्य की पीले रंग की पट्टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा था। सबसे ऊपरी पट्टी हरे रंग की थी, जिस पर कमल के आठ पुष्प अंकित थे और नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर श्वेत सूर्य तथा दायीं ओर एक श्वेत अर्धचन्द्र और तारा अंकित था। कुछ विद्वानों का दावा है कि कोलकाता के पारसी बागान चौक पर 7 अगस्त, 1906 ई को ध्वज पर कोई तारा अंकित नहीं था।

राष्ट्र ध्वज का प्रथम डिजाइन, 1906 ई.

मैडम कामा ध्वज, स्टुटगार्ट जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया, 1907 ई.

ध्वज के विकास की कहानी में हम एक अन्य ध्वज का संदर्भ पाते हैं, जिसे मैडम भीकाजी कामा और उनके निर्वासित क्रान्तिकारी दल द्वारा स्टुटगार्ट, जर्मनी में सन् 1907 में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया। कुछेक परिवर्तनों को छोड़ कर, यह झण्डा पहले झण्डे से मिलता – जुलता था।

राष्ट्र ध्वज

राष्ट्र ध्वज के उद्भव तथा अधिग्रहण की कथा निस्संदेह आकर्षक है। व्यक्तिगत विचारों तथा जातिगत व राजनैतिक विचारधाराओं ने राष्ट्र ध्वज के वर्तमान स्वरूप की संकल्पना तथा परिकल्पना को स्पष्टतः प्रभावित किया है।

यह प्रमाणित नहीं है, पर सामान्यतः ऐसा विश्वास है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समस्तर पट्टियां थीं। मध्य की पीले रंग की पट्टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा था। सबसे ऊपरी पट्टी हरे रंग की थी, जिस पर कमल के आठ पुष्प अंकित थे और नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर श्वेत सूर्य तथा दायीं ओर एक श्वेत अर्धचन्द्र और तारा अंकित था। कुछ विद्वानों का दावा है कि कोलकाता के पारसी बागान चौक पर 7 अगस्त, 1906 ई को ध्वज पर कोई तारा अंकित नहीं था।

राष्ट्र ध्वज का प्रथम डिजाइन, 1906 ई.

मैडम कामा ध्वज, स्टुटगार्ट जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया, 1907 ई.

ध्वज के विकास की कहानी में हम एक अन्य ध्वज का संदर्भ पाते हैं, जिसे मैडम भीकाजी कामा और उनके निर्वासित क्रान्तिकारी दल द्वारा स्टुटगार्ट, जर्मनी में सन् 1907 में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया। कुछेक परिवर्तनों को छोड़ कर, यह झण्डा पहले झण्डे से मिलता – जुलता था।

राष्ट्र ध्वज

राष्ट्र ध्वज के उद्भव तथा अधिग्रहण की कथा निस्संदेह आकर्षक है। व्यक्तिगत विचारों तथा जातिगत व राजनैतिक विचारधाराओं ने राष्ट्र ध्वज के वर्तमान स्वरूप की संकल्पना तथा परिकल्पना को स्पष्टतः प्रभावित किया है।

यह प्रमाणित नहीं है, पर सामान्यतः ऐसा विश्वास है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समस्तर पट्टियां थीं। मध्य की पीले रंग की पट्टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा था। सबसे ऊपरी पट्टी हरे रंग की थी, जिस पर कमल के आठ पुष्प अंकित थे और नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर श्वेत सूर्य तथा दायीं ओर एक श्वेत अर्धचन्द्र और तारा अंकित था। कुछ विद्वानों का दावा है कि कोलकाता के पारसी बागान चौक पर 7 अगस्त, 1906 ई को ध्वज पर कोई तारा अंकित नहीं था।

राष्ट्र ध्वज का प्रथम डिजाइन, 1906 ई.

मैडम कामा ध्वज, स्टुटगार्ट जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया, 1907 ई.

ध्वज के विकास की कहानी में हम एक अन्य ध्वज का संदर्भ पाते हैं, जिसे मैडम भीकाजी कामा और उनके निर्वासित क्रान्तिकारी दल द्वारा स्टुटगार्ट, जर्मनी में सन् 1907 में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया। कुछेक परिवर्तनों को छोड़ कर, यह झण्डा पहले झण्डे से मिलता – जुलता था।

राष्ट्र ध्वज

राष्ट्र ध्वज के उद्भव तथा अधिग्रहण की कथा निस्संदेह आकर्षक है। व्यक्तिगत विचारों तथा जातिगत व राजनैतिक विचारधाराओं ने राष्ट्र ध्वज के वर्तमान स्वरूप की संकल्पना तथा परिकल्पना को स्पष्टतः प्रभावित किया है।

यह प्रमाणित नहीं है, पर सामान्यतः ऐसा विश्वास है कि राष्ट्र ध्वज के प्रथम डिजाइन में तीन समस्तर पट्टियां थीं। मध्य की पीले रंग की पट्टी पर देवनागरी लिपि में नीले रंग से वन्दे मातरम् लिखा था। सबसे ऊपरी पट्टी हरे रंग की थी, जिस पर कमल के आठ पुष्प अंकित थे और नीचे की लाल पट्टी पर बायीं ओर श्वेत सूर्य तथा दायीं ओर एक श्वेत अर्धचन्द्र और तारा अंकित था। कुछ विद्वानों का दावा है कि कोलकाता के पारसी बागान चौक पर 7 अगस्त, 1906 ई को ध्वज पर कोई तारा अंकित नहीं था।

राष्ट्र ध्वज का प्रथम डिजाइन, 1906 ई.

मैडम कामा ध्वज, स्टुटगार्ट जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया, 1907 ई.

ध्वज के विकास की कहानी में हम एक अन्य ध्वज का संदर्भ पाते हैं, जिसे मैडम भीकाजी कामा और उनके निर्वासित क्रान्तिकारी दल द्वारा स्टुटगार्ट, जर्मनी में सन् 1907 में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में फहराया गया। कुछेक परिवर्तनों को छोड़ कर, यह झण्डा पहले झण्डे से मिलता – जुलता था।

NATIONAL FLAG

The story of the origin and adoption of the National Flag is indeed a fascinating one. Personal, racial, and political ideologies have influenced the concept and design of the flag as we see it today.

It is not confirmed, but commonly believed that the first National Flag had three horizontal stripes. The middle yellow colour had *Vande Mataram* in blue written across it in the Devanagari script. Eight lotus flowers were embossed on the top stripe which was of green colour and on the bottom red stripe there was a white sun on the left, and a white crescent and star on the right. Some scholars assert there was no star on the crescent on the flag that was hoisted on August 7, 1906 in the Parsee Bagan Square in Kolkata

In the story of the evolution of the flag, we come across another flag which was unfurled at the International Socialist Congress at Stuttgart, Germany in 1907 by Madame Cama and her band of exiled revolutionaries. This was similar to the first flag except for a few changes. The design of the eight lotus flowers was different, the sun on the bottom red stripe was shifted to the right of the flag and the crescent to the left. There was no star on the crescent. This flag was smuggled into India by Indulal Yagnik, the socialist leader of Gujarat.

In 1917, by the time the third flag was hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak during the Home Rule Movement, our freedom struggle had already taken on a significant momentum. Five red and four green horizontal stripes arranged alternately on the flag on which seven stars in the *saptrishi* configuration were superimposed. On the top left hand corner was the Union Jack and the top right hand corner, a white crescent and star. The inclusion of the Union Jack symbolized the goal of Dominion Status, and hence was not accepted by a large number of people.

Flag of the Home Rule Movement, 1917 hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak

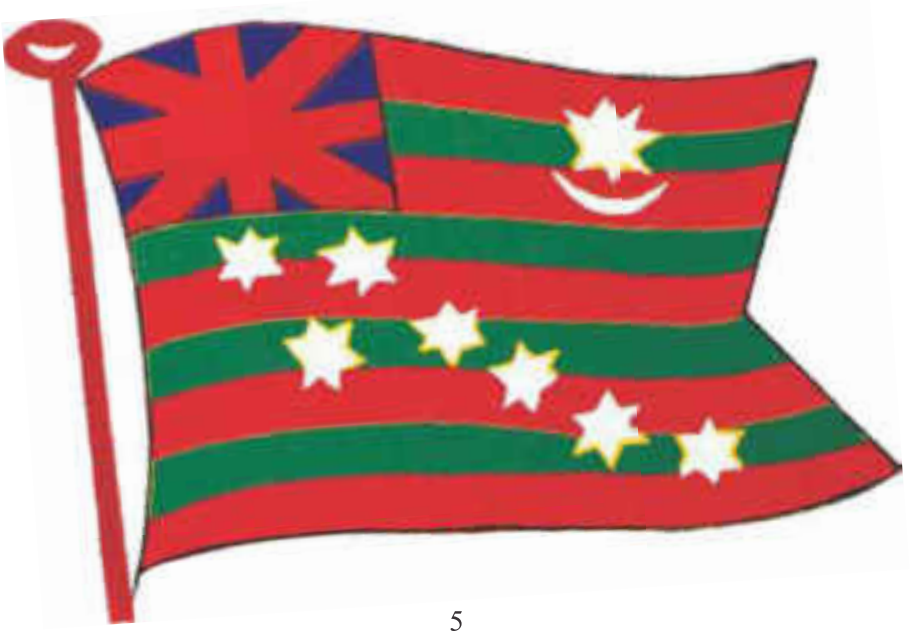

आठ कमल–पुष्पों की परिकल्पना भिन्न थी। निचली लाल पट्टी पर अंकित सूर्य को ध्वज के दायीं ओर तथा अर्धचन्द्र को बायीं ओर अंकित कर दिया गया था। अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं था। गुजरात के समाजवादी नेता इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा यह ध्वज भारत में चुपके से लाया गया था।

सन् 1917 में जब गृह शासन आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक तथा डा. एनी बेसेण्ट द्वारा तीसरा ध्वज फहराया गया, उसके पहले ही हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। इस ध्वज में पांच लाल तथा चार हरी समस्तर पट्टियां एकान्तर से व्यवस्थित की गई थीं, जिस पर सप्तऋषि की आकृति में सात तारे बने हुए थे। सबसे ऊपरी बायें कोने पर ब्रिटिश ध्वज और ऊपरी दांये कोने पर एक श्वेत अर्धचन्द्र व तारा अंकित था। ब्रिटिश ध्वज को शामिल करना स्वामित्व की स्थिति के ध्येय को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करना था। अतः इसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1921 में बेज़वाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) में संपन्न अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के दौरान आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक ध्वज की परिकल्पना तैयार कर उसे महात्मा गांधी को दिखाया। इसमें दो रंग थे – हरा तथा लाल। प्रगति का परिचायक एक बड़ा–सा चरखा भी अंकित था। गांधीजी ने इसमें एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया। तत्पश्चात् इस ध्वज में तीन रंग हो गए – सफेद, हरा तथा लाल और बीचोंबीच नीले रंग से चरखे की आकृति इस पर अध्यारोपित कर दी गई। इस ध्वज का सन् 1931 तक संपन्न सभी कांग्रेस अधिवेशनों में उपयोग किया गया, हालांकि कांग्रेस के एक आधिकारिक ध्वज के रूप में इसकी स्वीकृति का कोई प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होता।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सन् 1931 में करांची (अब पाकिस्तान में) में संपन्न बैठक में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता से संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया, जो आधिकारिक रूप से कांग्रेस को स्वीकार्य हो। ध्वज में निर्धारित रंगों के साम्प्रदायिक अर्थ प्रतिपादन के कारण पहले ही ध्वज में प्रयुक्त रंगों के महत्व पर पर्याप्त बहस हो चुकी थी।

कांग्रेस द्वारा नियुक्त सात सदस्यों की एक समिति ने सादे केसरी ध्वज का सुझाव प्रस्तुत किया, जिसके ऊपरी बांये कोने पर लालिमा युक्त भूरे रंग से चरखे की आकृति बनी हुई थी। इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

हमें याद रखना चाहिए कि वर्ष 1931, ध्वज के विकास के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना थी। इस वर्ष तिरंगे ध्वज का हमारे राष्ट्र ध्वज के रूप में अभिग्रहण किए जाने संबंधी एक प्रस्ताव पारित किया गया। केसरिया, श्वेत तथा हरी पट्टियों से युक्त तिरंगे को स्वीकृत करते हुए प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि इन रंगों का कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं है और इसके अर्थ को निम्न रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए :

केसरिया – हिम्मत और त्याग
श्वेत – सत्य और शान्ति
हरा – विश्वास और शौर्य

इस ध्वज की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में चरखे की एक आकृति अध्यारोपित थी। इस ध्वज का आकार तीन चौड़ाई गुणा दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को पहली बार राष्ट्र के रूप में कांग्रेस की आधिकारिक स्वीकृति प्रदान की गई।

The tricolour approved by Gandhiji, 1921

Flag proposed in AICC session in 1931

During the All India Congress Committee (AICC) meeting at Bezwada (now Vijaywada), in 1921, a youth from Andhra Pradesh designed a flag and took it to Mahatma Gandhi. It had two colours - green and red and a large *charkha* (spinning wheel) symbolising progress. Gandhiji suggested the addition of a white stripe. The flag had three colours - white, green and red and a *charkha* superimposed in blue in the centre. This flag was used at all Congress Sessions till 1931 though one does not find any record of acceptance of this as the official Congress Flag.

In 1931, when the All India Congress Committee met at Karachi (now in Pakistan), a resolution was passed stressing the need for a flag which would be officially acceptable to the Congress. There was already considerable controversy over the significance of the colours in the flag mainly due to the communal interpretations of these colours.

A Committee of seven members appointed by the Congress suggested a plain saffron flag with a *charkha* in reddish brown on the top left hand corner. However, it was not accepted by the All India Congress Committee.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

We should remember that the year 1931 was a landmark in the history of the evolution of the flag. A resolution was passed adopting a tricolour flag as our National Flag. Approving the tricolour with saffron, white and green stripes, the resolution clearly stated that the colours had no communal significance and were to be interpreted thus :

Saffron for courage and sacrifice
White for truth and peace
Green for faith and chivalry

संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 ईस्वी को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। रंग पहले वाले ही रहे तथा ध्वज पर प्रतीक स्वरूप सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने चरखे का स्थान ले लिया। यह प्रस्ताव संविधान सभा में पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

"हम कृतसंकल्प हैं कि भारत का राष्ट्र ध्वज समस्तर होगा, जिसमें गहरा केसरी, श्वेत व गहरा हरा रंग समानुपातिक रूप में होगा। श्वेत पट्टी के मध्य में चरखे को प्रस्तुत करने के लिए गहरे नीले रंग में एक चक्र होगा। चक्र की यह परिकल्पना सारनाथ स्थित सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की कंगनी के शीर्ष फलक पर दिखाई देती है। चक्र का व्यास लगभग श्वेत पट्टी की चौड़ाई के बराबर ही होगा। ध्वज की चौड़ाई और लंबाई का अनुपात सामान्यतः 2'x3' होगा।"

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

पंडित नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत ध्वजचक्र एक समकोणात्मक फलक था, जो तीन समकोणात्मक पट्टियों अथवा समान चौड़ाई वाली उप – पट्टियों से बना था। सबसे ऊपरी केसरी और नीचे की पट्टी हरे रंग की थी। बीच की पट्टी श्वेत थी, जिसके मध्य में गहरे नीले रंग से अशोक चक्र की परिकल्पना अध्यारोपित थी। ऐसा सुझाव दिया गया था कि सभी परिस्थितियों में चक्र को ध्वज के दोनों ओर स्क्रीन प्रिंटिंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, अन्यथा दोनों ओर चक्र को मुद्रित, स्टेंसिल अथवा कशीदाकारी द्वारा अंकित किया जाना चाहिए। ध्वज के लिए प्रयुक्त किए गए वस्त्र का ही अध्यारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

It carried a *charkha* in navy blue on the white band. The size was three breadths by two breadths. This resolution for the first time conferred official Congress recognition on the tricolour as the National Flag.

" On July 22, 1947 the Constituent Assembly adopted this as Independent India's National Flag. The colours remained the same, the Dharmachakra of Emperor Ashoka replaced the *charkha* as the emblem on the flag". This resolution was moved by Pandit Jawaharlal Nehru in the Constituent Assembly.

" Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal colour of deep saffron (Kesari), white and dark green in equal proportions. In the centre of the white band there shall be a wheel in navy blue to represent the charkha. The design of the wheel (chakra) which appears on the abacus of the Sarnath Lion Capital of Ashoka.

The diameter of the wheel shall be approximate to the width of the white band. The ratio of the width to the length of the flag shall ordinarily be two breadths by three breadths."

Flag adopted by the Constituent Assembly, 1947

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

The flag presented by Pandit Nehru to the Constituent Assembly was a tricolour rectangular panel, made up of three rectangular panels or sub panels of equal width. The colour of the top panel is Indian saffron *(Kesari)* and of the bottom panel Indian green. The middle

" झंडा सभी राष्ट्रो के लिए एक अनिवार्यता है। लाखों इसके लिये मर चुके हैं। निस्संदेह यह एक प्रकार की मूर्तिपूजा है जिसको खण्डित करना एक पाप होगा। क्योंकि, झंडा एक आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। यूनियन जैक के फहराने से अंग्रेजो के हृदय उन भावों से उद्वेलित हो उठते हैं जिनकी गहराई का अनुमान लगाना कठिन है। अमेरिकनों के लिए तारों और पट्टियों का झंडा अत्यंत व्यापक अर्थो से युक्त है। दूज का चांद और सितारा इस्लाम के श्रेष्ठतम शौर्य की याद दिलाता है।

हम भारतीयों–हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी तथा अन्य सब जिनका घर भारत है – के लिए यह आवश्यक है कि हम एक ही झंडा स्वीकार कर लें और उसी के लिए जियें तथा मरें "

– महात्मा गांधी

panel is white, bearing in the centre the design of Ashoka *chakra* in navy blue. It was suggested that the *chakra* should preferably be screen printed on both sides of the flag, or otherwise printed, stenciled or suitably embroidered on both sides in all cases. The super-imposed cloth must be of the same material as that of the body.

Pandit Jawaharlal Nehru, India's first Prime Minister unfurling the National Flag from the ramparts of historic Red Fort, Delhi on August 16, 1947

" A flag is a necessity for all nations. Millions have died for it. It is no doubt a kind of idolatry which it would be a sin to destroy. For, a flag represents an ideal. The unfurling of the Union Jack evokes in the English breast sentiments whose strength it is difficult to measure. The stars and stripes mean a world to the Americans. The star and the crescent will call forth the best bravery in Islam. "

" It will be necessary for us Indians – Hindus, Muslims, Christians, Jews, Parsis and all others to whom India is their home –to recognize a common flag to live and to die for. "

– Mahatma Gandhi

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ

राष्ट्र ध्वज के विषय में राष्ट्रीय नेताओं की सूक्तियां / विचार एकत्रित कीजिए।

विश्व भर के राजाओं और सरदारों के समान हिन्दू पुराणों के नायक भी अपने व्यक्तिगत प्रतीक चिह्नों के साथ ध्वज लेकर चलते थे। भीम, अर्जुन, कर्ण, टीपू सुल्तान, कुतुब–उद्दीन–ऐबक, अकबर, शिवाजी, झाँसी की रानी – लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप के प्रतीक चिह्नों को ढूंढिए।

राष्ट्र ध्वज के विकास व अभिग्रहण से संबद्ध सभी घटनाओं को सूचीबद्ध करने का प्रयास कीजिए।

भारत के राष्ट्र ध्वज के विकास पर एक प्रदर्शनी आयोजित करिए।

विविध अवसरों पर राष्ट्र ध्वज का प्रयोग किए जाने से संबंधित विविध दिशा–सूचकों तथा संशोधनों को अभिलेखित करने के लिए कतरन पुस्तिका (स्क्रैप बुक) का प्रयोग कीजिए।

भारतीय राष्ट्र ध्वज की कहानी पर आधारित एक नाटक का मंच प्रस्तुतीकरण करने हेतु आलेख तैयार कीजिए।

ध्वज व ध्वज फहराने के लिए भारत की प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों को एकत्रित कीजिए, जैसे हिन्दी में ध्वज और ध्वजारोहण।

विश्व भर में ध्वज पर अंकित शब्दों / संदेशों को उनके संबधित अर्थ सहित एकत्रित कीजिए।
उदाहरण के लिए, भारतीय वायुसेना के ध्वज पर अंकित नारा है – नभ स्पर्श दीप्तम्।

राष्ट्र ध्वज की प्रशंसा में एक गीत लिखिए।

अन्य देशों के राष्ट्र ध्वजों के चित्र एकत्रित कर उनके रंगों तथा डिज़ाइनों के प्रतीकार्थ का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Collect various quotes/views of national leaders about the National Flag.

Heroes in Hindu mythology or Indian history carried flags with their personal emblems in battle, just like kings and chieftains the world over. Identify the emblems of Bhishma, Arjun, Karna, Tipu Sultan, Qutub-ud-din Aibak, Akbar, Shivaji, Rani Lakshmibai of Jhansi, Maharana Pratap etc.

List all the incidents associated with the development and adoption of the National Flag.

Design and display an exhibition on the development of story of our National Flag.

Use a scrap book for recording the various directives and amendments made from time to time on the use of National Flag on various occasions.

Develop a script to stage a drama on the story of the Indian National Flag.

Collect words used in regional languages for Flag and Flag hoisting such as *dhvaj* and *dhvajarohan* in Hindi.

Collect words/messages with respective meanings written on Flags all over the world. For example, the motto of Indian Air Force is *Nabh Sparsh Deeptam*, which is written on their flag.

Write a song in praise of the National Flag.

Collect pictures of National Flags of other countries and write a brief description of the symbolic meaning of their colours and designs.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, in service teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

References

Agrawal, V.S., (1964), "The Wheel Flag of India (Chakra-Dhvaja), Varanasi.

Chatterji, Suniti Kumar, (1944), "The National Flag : A Selection of Papers, Cultural and Historical," Kolkata.

Constituent Assembly of India-Debates, (July 22, 1947).

Khare, M.D., "Tradition of Chakra Triratna, Symbols of Ancient Seals", Journal of Indian History, Vol. 42'.

Mookerji, Radhakumud, "Our National Insignia", The Illustrated Weekly of India, (January 26, 1969).

Publications Division, (1963), "Our Flag.

The National Flag Code.

Young India, (April 13, 1929), reproduced in the Harijan, August 3, 1947.

Photo Credits

Press Information Bureau, New Delhi.

"India's Struggle for Independence". NCERT (1986).

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training, 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

NATIONAL FLAG

The story of the origin and adoption of the National Flag is indeed a fascinating one. Personal, racial, and political ideologies have influenced the concept and design of the flag as we see it today.

It is not confirmed, but commonly believed that the first National Flag had three horizontal stripes. The middle yellow colour had *Vande Mataram* in blue written across it in the Devanagari script. Eight lotus flowers were embossed on the top stripe which was of green colour and on the bottom red stripe there was a white sun on the left, and a white crescent and star on the right. Some scholars assert there was no star on the crescent on the flag that was hoisted on August 7, 1906 in the Parsee Bagan Square in Kolkata

In the story of the evolution of the flag, we come across another flag which was unfurled at the International Socialist Congress at Stuttgart, Germany in 1907 by Madame Cama and her band of exiled revolutionaries. This was similar to the first flag except for a few changes. The design of the eight lotus flowers was different, the sun on the bottom red stripe was shifted to the right of the flag and the crescent to the left. There was no star on the crescent. This flag was smuggled into India by Indulal Yagnik, the socialist leader of Gujarat.

In 1917, by the time the third flag was hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak during the Home Rule Movement, our freedom struggle had already taken on a significant momentum. Five red and four green horizontal stripes arranged alternately on the flag on which seven stars in the *saptrishi* configuration were superimposed. On the top left hand corner was the Union Jack and the top right hand corner, a white crescent and star. The inclusion of the Union Jack symbolized the goal of Dominion Status, and hence was not accepted by a large number of people.

Flag of the Home Rule Movement, 1917 hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak

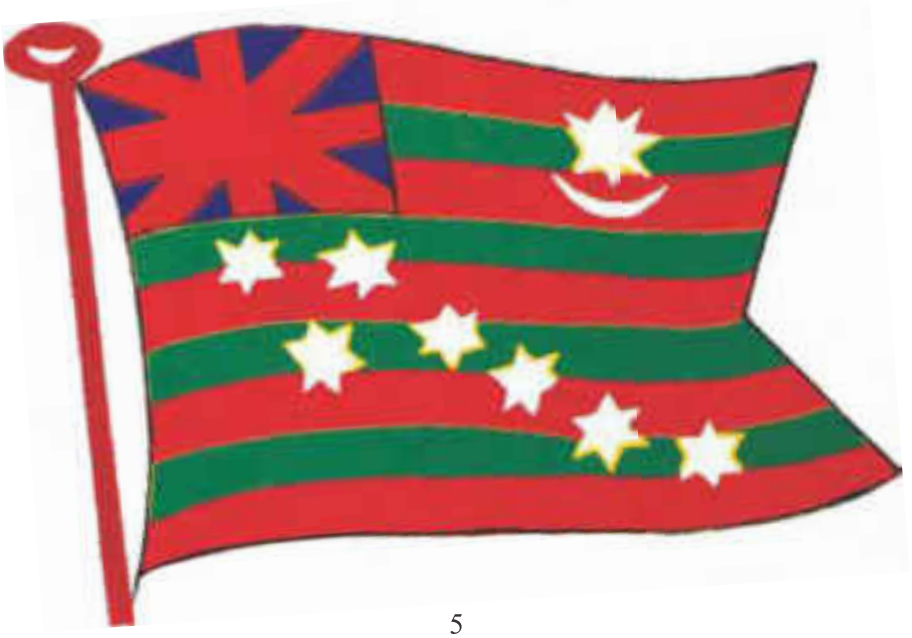

आठ कमल–पुष्पों की परिकल्पना भिन्न थी। निचली लाल पट्टी पर अंकित सूर्य को ध्वज के दायीं ओर तथा अर्धचन्द्र को बायीं ओर अंकित कर दिया गया था। अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं था। गुजरात के समाजवादी नेता इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा यह ध्वज भारत में चुपके से लाया गया था।

सन् 1917 में जब गृह शासन आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक तथा डा. एनी बेसेण्ट द्वारा तीसरा ध्वज फहराया गया, उसके पहले ही हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। इस ध्वज में पांच लाल तथा चार हरी समस्तर पट्टियां एकान्तर से व्यवस्थित की गई थीं, जिस पर सप्तऋषि की आकृति में सात तारे बने हुए थे। सबसे ऊपरी बायें कोने पर ब्रिटिश ध्वज और ऊपरी दांये कोने पर एक श्वेत अर्धचन्द्र व तारा अंकित था। ब्रिटिश ध्वज को शामिल करना स्वामित्व की स्थिति के ध्येय को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करना था। अतः इसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1921 में बेज़वाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) में संपन्न अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के दौरान आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक ध्वज की परिकल्पना तैयार कर उसे महात्मा गांधी को दिखाया। इसमें दो रंग थे – हरा तथा लाल। प्रगति का परिचायक एक बड़ा–सा चरखा भी अंकित था। गांधीजी ने इसमें एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया। तत्पश्चात् इस ध्वज में तीन रंग हो गए – सफेद, हरा तथा लाल और बीचोंबीच नीले रंग से चरखे की आकृति इस पर अध्यारोपित कर दी गई। इस ध्वज का सन् 1931 तक संपन्न सभी कांग्रेस अधिवेशनों में उपयोग किया गया, हालांकि कांग्रेस के एक आधिकारिक ध्वज के रूप में इसकी स्वीकृति का कोई प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होता।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सन् 1931 में करांची (अब पाकिस्तान में) में संपन्न बैठक में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता से संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया, जो आधिकारिक रूप से कांग्रेस को स्वीकार्य हो। ध्वज में निर्धारित रंगों के साम्प्रदायिक अर्थ प्रतिपादन के कारण पहले ही ध्वज में प्रयुक्त रंगों के महत्व पर पर्याप्त बहस हो चुकी थी।

कांग्रेस द्वारा नियुक्त सात सदस्यों की एक समिति ने सादे केसरी ध्वज का सुझाव प्रस्तुत किया, जिसके ऊपरी बांये कोने पर लालिमा युक्त भूरे रंग से चरखे की आकृति बनी हुई थी। इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

हमें याद रखना चाहिए कि वर्ष 1931, ध्वज के विकास के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना थी। इस वर्ष तिरंगे ध्वज का हमारे राष्ट्र ध्वज के रूप में अभिग्रहण किए जाने संबंधी एक प्रस्ताव पारित किया गया। केसरिया, श्वेत तथा हरी पट्टियों से युक्त तिरंगे को स्वीकृत करते हुए प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि इन रंगों का कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं है और इसके अर्थ को निम्न रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए :

केसरिया – हिम्मत और त्याग
श्वेत – सत्य और शान्ति
हरा – विश्वास और शौर्य

इस ध्वज की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में चरखे की एक आकृति अध्यारोपित थी। इस ध्वज का आकार तीन चौड़ाई गुणा दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को पहली बार राष्ट्र के रूप में कांग्रेस की आधिकारिक स्वीकृति प्रदान की गई।

The tricolour approved by Gandhiji, 1921

Flag proposed in AICC session in 1931

During the All India Congress Committee (AICC) meeting at Bezwada (now Vijaywada), in 1921, a youth from Andhra Pradesh designed a flag and took it to Mahatma Gandhi. It had two colours - green and red and a large *charkha* (spinning wheel) symbolising progress. Gandhiji suggested the addition of a white stripe. The flag had three colours - white, green and red and a *charkha* superimposed in blue in the centre. This flag was used at all Congress Sessions till 1931 though one does not find any record of acceptance of this as the official Congress Flag.

In 1931, when the All India Congress Committee met at Karachi (now in Pakistan), a resolution was passed stressing the need for a flag which would be officially acceptable to the Congress. There was already considerable controversy over the significance of the colours in the flag mainly due to the communal interpretations of these colours.

A Committee of seven members appointed by the Congress suggested a plain saffron flag with a *charkha* in reddish brown on the top left hand corner. However, it was not accepted by the All India Congress Committee.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

We should remember that the year 1931 was a landmark in the history of the evolution of the flag. A resolution was passed adopting a tricolour flag as our National Flag. Approving the tricolour with saffron, white and green stripes, the resolution clearly stated that the colours had no communal significance and were to be interpreted thus :

Saffron for courage and sacrifice
White for truth and peace
Green for faith and chivalry

संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 ईस्वी को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। रंग पहले वाले ही रहे तथा ध्वज पर प्रतीक स्वरूप सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने चरखे का स्थान ले लिया। यह प्रस्ताव संविधान सभा में पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

"हम कृतसंकल्प हैं कि भारत का राष्ट्र ध्वज समस्तर होगा, जिसमें गहरा केसरी, श्वेत व गहरा हरा रंग समानुपातिक रूप में होगा। श्वेत पट्टी के मध्य में चरखे को प्रस्तुत करने के लिए गहरे नीले रंग में एक चक्र होगा। चक्र की यह परिकल्पना सारनाथ स्थित सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की कंगनी के शीर्ष फलक पर दिखाई देती है। चक्र का व्यास लगभग श्वेत पट्टी की चौड़ाई के बराबर ही होगा। ध्वज की चौड़ाई और लंबाई का अनुपात सामान्यतः 2'x3' होगा।"

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

पंडित नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत ध्वजचक्र एक समकोणात्मक फलक था, जो तीन समकोणात्मक पट्टियों अथवा समान चौड़ाई वाली उप – पट्टियों से बना था। सबसे ऊपरी केसरी और नीचे की पट्टी हरे रंग की थी। बीच की पट्टी श्वेत थी, जिसके मध्य में गहरे नीले रंग से अशोक चक्र की परिकल्पना अध्यारोपित थी। ऐसा सुझाव दिया गया था कि सभी परिस्थितियों में चक्र को ध्वज के दोनों ओर स्क्रीन प्रिंटिंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, अन्यथा दोनों ओर चक्र को मुद्रित, स्टेंसिल अथवा कशीदाकारी द्वारा अंकित किया जाना चाहिए। ध्वज के लिए प्रयुक्त किए गए वस्त्र का ही अध्यारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

It carried a *charkha* in navy blue on the white band. The size was three breadths by two breadths. This resolution for the first time conferred official Congress recognition on the tricolour as the National Flag.

" On July 22, 1947 the Constituent Assembly adopted this as Independent India's National Flag. The colours remained the same, the Dharmachakra of Emperor Ashoka replaced the *charkha* as the emblem on the flag". This resolution was moved by Pandit Jawaharlal Nehru in the Constituent Assembly.

" Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal colour of deep saffron (Kesari), white and dark green in equal proportions. In the centre of the white band there shall be a wheel in navy blue to represent the charkha. The design of the wheel (chakra) which appears on the abacus of the Sarnath Lion Capital of Ashoka.

The diameter of the wheel shall be approximate to the width of the white band. The ratio of the width to the length of the flag shall ordinarily be two breadths by three breadths."

Flag adopted by the Constituent Assembly, 1947

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

The flag presented by Pandit Nehru to the Constituent Assembly was a tricolour rectangular panel, made up of three rectangular panels or sub panels of equal width. The colour of the top panel is Indian saffron *(Kesari)* and of the bottom panel Indian green. The middle

NATIONAL FLAG

The story of the origin and adoption of the National Flag is indeed a fascinating one. Personal, racial, and political ideologies have influenced the concept and design of the flag as we see it today.

It is not confirmed, but commonly believed that the first National Flag had three horizontal stripes. The middle yellow colour had *Vande Mataram* in blue written across it in the Devanagari script. Eight lotus flowers were embossed on the top stripe which was of green colour and on the bottom red stripe there was a white sun on the left, and a white crescent and star on the right. Some scholars assert there was no star on the crescent on the flag that was hoisted on August 7, 1906 in the Parsee Bagan Square in Kolkata

In the story of the evolution of the flag, we come across another flag which was unfurled at the International Socialist Congress at Stuttgart, Germany in 1907 by Madame Cama and her band of exiled revolutionaries. This was similar to the first flag except for a few changes. The design of the eight lotus flowers was different, the sun on the bottom red stripe was shifted to the right of the flag and the crescent to the left. There was no star on the crescent. This flag was smuggled into India by Indulal Yagnik, the socialist leader of Gujarat.

In 1917, by the time the third flag was hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak during the Home Rule Movement, our freedom struggle had already taken on a significant momentum. Five red and four green horizontal stripes arranged alternately on the flag on which seven stars in the *saptrishi* configuration were superimposed. On the top left hand corner was the Union Jack and the top right hand corner, a white crescent and star. The inclusion of the Union Jack symbolized the goal of Dominion Status, and hence was not accepted by a large number of people.

Flag of the Home Rule Movement, 1917 hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak

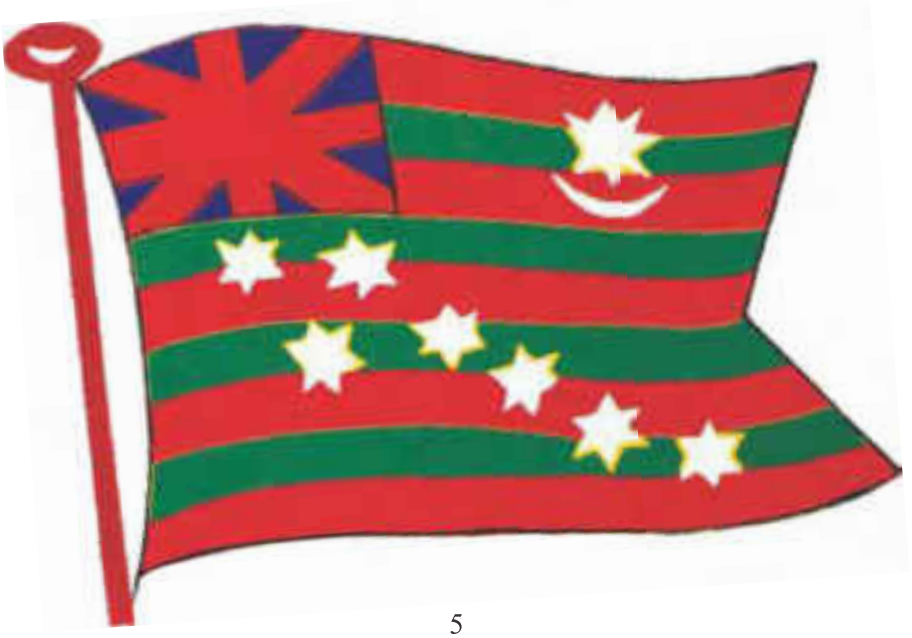

आठ कमल–पुष्पों की परिकल्पना भिन्न थी। निचली लाल पट्टी पर अंकित सूर्य को ध्वज के दायीं ओर तथा अर्धचन्द्र को बायीं ओर अंकित कर दिया गया था। अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं था। गुजरात के समाजवादी नेता इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा यह ध्वज भारत में चुपके से लाया गया था।

सन् 1917 में जब गृह शासन आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक तथा डा. एनी बेसेण्ट द्वारा तीसरा ध्वज फहराया गया, उसके पहले ही हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। इस ध्वज में पांच लाल तथा चार हरी समस्तर पट्टियां एकान्तर से व्यवस्थित की गई थीं, जिस पर सप्तऋषि की आकृति में सात तारे बने हुए थे। सबसे ऊपरी बायें कोने पर ब्रिटिश ध्वज और ऊपरी दांये कोने पर एक श्वेत अर्धचन्द्र व तारा अंकित था। ब्रिटिश ध्वज को शामिल करना स्वामित्व की स्थिति के ध्येय को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करना था। अतः इसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1921 में बेज़वाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) में संपन्न अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के दौरान आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक ध्वज की परिकल्पना तैयार कर उसे महात्मा गांधी को दिखाया। इसमें दो रंग थे – हरा तथा लाल। प्रगति का परिचायक एक बड़ा–सा चरखा भी अंकित था। गांधीजी ने इसमें एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया। तत्पश्चात् इस ध्वज में तीन रंग हो गए – सफेद, हरा तथा लाल और बीचोंबीच नीले रंग से चरखे की आकृति इस पर अध्यारोपित कर दी गई। इस ध्वज का सन् 1931 तक संपन्न सभी कांग्रेस अधिवेशनों में उपयोग किया गया, हालांकि कांग्रेस के एक आधिकारिक ध्वज के रूप में इसकी स्वीकृति का कोई प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होता।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सन् 1931 में करांची (अब पाकिस्तान में) में संपन्न बैठक में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता से संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया, जो आधिकारिक रूप से कांग्रेस को स्वीकार्य हो। ध्वज में निर्धारित रंगों के साम्प्रदायिक अर्थ प्रतिपादन के कारण पहले ही ध्वज में प्रयुक्त रंगों के महत्व पर पर्याप्त बहस हो चुकी थी।

कांग्रेस द्वारा नियुक्त सात सदस्यों की एक समिति ने सादे केसरी ध्वज का सुझाव प्रस्तुत किया, जिसके ऊपरी बांये कोने पर लालिमा युक्त भूरे रंग से चरखे की आकृति बनी हुई थी। इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

हमें याद रखना चाहिए कि वर्ष 1931, ध्वज के विकास के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना थी। इस वर्ष तिरंगे ध्वज का हमारे राष्ट्र ध्वज के रूप में अभिग्रहण किए जाने संबंधी एक प्रस्ताव पारित किया गया। केसरिया, श्वेत तथा हरी पट्टियों से युक्त तिरंगे को स्वीकृत करते हुए प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि इन रंगों का कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं है और इसके अर्थ को निम्न रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए :

केसरिया – हिम्मत और त्याग
श्वेत – सत्य और शान्ति
हरा – विश्वास और शौर्य

इस ध्वज की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में चरखे की एक आकृति अध्यारोपित थी। इस ध्वज का आकार तीन चौड़ाई गुणा दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को पहली बार राष्ट्र के रूप में कांग्रेस की आधिकारिक स्वीकृति प्रदान की गई।

The tricolour approved by Gandhiji, 1921

Flag proposed in AICC session in 1931

During the All India Congress Committee (AICC) meeting at Bezwada (now Vijaywada), in 1921, a youth from Andhra Pradesh designed a flag and took it to Mahatma Gandhi. It had two colours - green and red and a large *charkha* (spinning wheel) symbolising progress. Gandhiji suggested the addition of a white stripe. The flag had three colours - white, green and red and a *charkha* superimposed in blue in the centre. This flag was used at all Congress Sessions till 1931 though one does not find any record of acceptance of this as the official Congress Flag.

In 1931, when the All India Congress Committee met at Karachi (now in Pakistan), a resolution was passed stressing the need for a flag which would be officially acceptable to the Congress. There was already considerable controversy over the significance of the colours in the flag mainly due to the communal interpretations of these colours.

A Committee of seven members appointed by the Congress suggested a plain saffron flag with a *charkha* in reddish brown on the top left hand corner. However, it was not accepted by the All India Congress Committee.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

We should remember that the year 1931 was a landmark in the history of the evolution of the flag. A resolution was passed adopting a tricolour flag as our National Flag. Approving the tricolour with saffron, white and green stripes, the resolution clearly stated that the colours had no communal significance and were to be interpreted thus :

Saffron for courage and sacrifice
White for truth and peace
Green for faith and chivalry

संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 ईस्वी को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। रंग पहले वाले ही रहे तथा ध्वज पर प्रतीक स्वरूप सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने चरखे का स्थान ले लिया। यह प्रस्ताव संविधान सभा में पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

"हम कृतसंकल्प हैं कि भारत का राष्ट्र ध्वज समस्तर होगा, जिसमें गहरा केसरी, श्वेत व गहरा हरा रंग समानुपातिक रूप में होगा। श्वेत पट्टी के मध्य में चरखे को प्रस्तुत करने के लिए गहरे नीले रंग में एक चक्र होगा। चक्र की यह परिकल्पना सारनाथ स्थित सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की कंगनी के शीर्ष फलक पर दिखाई देती है। चक्र का व्यास लगभग श्वेत पट्टी की चौड़ाई के बराबर ही होगा। ध्वज की चौड़ाई और लंबाई का अनुपात सामान्यतः 2'x3' होगा।"

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

पंडित नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत ध्वजचक्र एक समकोणात्मक फलक था, जो तीन समकोणात्मक पट्टियों अथवा समान चौड़ाई वाली उप – पट्टियों से बना था। सबसे ऊपरी केसरी और नीचे की पट्टी हरे रंग की थी। बीच की पट्टी श्वेत थी, जिसके मध्य में गहरे नीले रंग से अशोक चक्र की परिकल्पना अध्यारोपित थी। ऐसा सुझाव दिया गया था कि सभी परिस्थितियों में चक्र को ध्वज के दोनों ओर स्क्रीन प्रिंटिंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, अन्यथा दोनों ओर चक्र को मुद्रित, स्टेंसिल अथवा कशीदाकारी द्वारा अंकित किया जाना चाहिए। ध्वज के लिए प्रयुक्त किए गए वस्त्र का ही अध्यारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

It carried a *charkha* in navy blue on the white band. The size was three breadths by two breadths. This resolution for the first time conferred official Congress recognition on the tricolour as the National Flag.

" On July 22, 1947 the Constituent Assembly adopted this as Independent India's National Flag. The colours remained the same, the Dharmachakra of Emperor Ashoka replaced the *charkha* as the emblem on the flag". This resolution was moved by Pandit Jawaharlal Nehru in the Constituent Assembly.

" Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal colour of deep saffron (Kesari), white and dark green in equal proportions. In the centre of the white band there shall be a wheel in navy blue to represent the charkha. The design of the wheel (chakra) which appears on the abacus of the Sarnath Lion Capital of Ashoka.

The diameter of the wheel shall be approximate to the width of the white band. The ratio of the width to the length of the flag shall ordinarily be two breadths by three breadths."

Flag adopted by the Constituent Assembly, 1947

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

The flag presented by Pandit Nehru to the Constituent Assembly was a tricolour rectangular panel, made up of three rectangular panels or sub panels of equal width. The colour of the top panel is Indian saffron *(Kesari)* and of the bottom panel Indian green. The middle

राष्ट्रीय प्रतीक

जन–गण–मन

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग

Jana-gana-mana

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्र गान

NATIONAL ANTHEM

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व पकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

जन–गण–मन

यह एक निर्विवाद सत्य है कि हर गीत राष्ट्र गान का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता, भले ही साहित्यिक दृष्टि से वह कितना भी उत्तम क्यों न हो। अध्ययन करने पर यह पता लगाया जा सकता है कि कुछ ही ऐसे राष्ट्र गान हैं, जिनका चुनाव केवल साहित्यिक योग्यता के आधार पर हुआ है। ऐसे कौन से तत्त्व हैं, जो एक राष्ट्र गान को, देशभक्तिपूर्ण काव्य की तुलना में विशिष्टता प्रदान करते हैं? विशेषज्ञों द्वारा राष्ट्र गान हेतु सुनिश्चित अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षणों के अलावा, राष्ट्र गान को जन समुदाय द्वारा समूह में गाने योग्य तथा उसे विशेष रूप से राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त होना शामिल है।

हमें गर्व है कि हमारा राष्ट्र स्वतंत्र है, क्योंकि ऐसे भी देश हैं, जो आज भी अन्य देशों के शासनाधीन हैं और सिद्धान्ततः वे, शासक देश के ही राष्ट्र गान का प्रयोग कर रहे हैं।

भारत के राष्ट्र का पद प्राप्त करने हेतु पवित्र इतिहास लिए दो प्रमुख राष्ट्रगीतों में परस्पर प्रतिस्पर्धा रही। ये गीत थे–बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित 'वन्दे मातरम्' तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित 'जन–गण –मन'। ये दोनों ही गीत भारत के महान कवियों द्वारा लिखे गए हैं और देश से जुड़ी भावनात्मक स्मृतियों को उत्पन्न करते हैं।

महात्मा गांधी ने 'जन–गण–मण' को एक गीत ही नहीं, वरन् एक भक्तिपूर्ण भजन के रूप में वर्णित किया है। यह गीत, 27 दिसम्बर, 1911 को पहली बार सार्वजनिक तौर पर एक राजनैतिक समारोह में, कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन गाया गया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के संपादन में प्रकाशित तत्त्वबोधिनी पत्रिका के

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

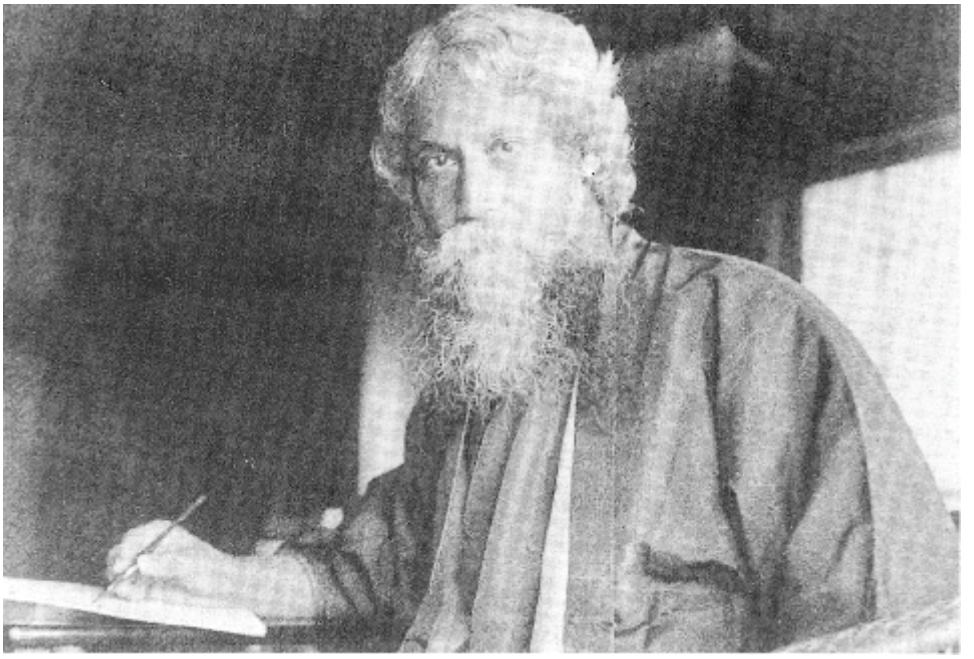

JANA-GANA-MANA

Every song cannot be a National Anthem, whatever be its literary qualities. While conducting a study, one may find that there are very few National Anthems which have been chosen solely on the basis of literary merit. What are the factors which distinguish a National Anthem from any patriotic verse? According to experts, among other things it can be sung in chorus to evoke a feeling of patriotism in a large group of people.

Our nation is proud to be independent, as there are countries which are still dependent territories of other nations and principally use the National Anthem of the ruling country.

Two of the Indian National Songs having a hallowed history vied with each other for the status of the National Anthem. These are *Vande Mataram* by Bakim Chandra Chatterjee and *Jana-gana-mana* by Rabindranath Tagore. Each of the songs are works of India's greatest writers and evoke nostalgic memories.

Mahatma Gandhi described *Jana-gana-mana*, not only as a song but as a devotional hymn. The song was first sung at a political occasion on December 27, 1911 on the second day of the Congress session. *Bharat Vidhata* was the title under which the song was first published in 1912 in *Tattvabodhini Patrika* of which Rabindranath Tagore was the editor. He himself translated the song into English under the title *"The Morning Song of India"*. The first appearance of the poet's translation was made in the Madanapalle College magazine of Madras.

"Tagore's song 'Jaya he' has become our National Anthem", recorded Subhash Chandra Bose's 'Azad Hind Fauj.' They rendered the song into Hindustani and adopted the new version as the National Anthem of the Azad Hind Fauj.

On January 24, 1950, which was the last day of the twelfth and last session of the Constituent Assembly, the President of the Assembly, Dr. Rajendra Prasad, adopted *Jana-gana-mana* as the National Anthem of the Republic of India. White referring to the question of National Anthem he said that instead of bringing the matter before the House and taking a decision by way of a resolution it would be better if he himself made a declaration in that regard. Dr. Rajendra Prasad issued a statement to this effect:

"The compostion consisting of the words and music known as Jana-gana-mana shall be used for official purposes as the National Anthem of India, subject to such alterations in the words as the Government may authorise as occasion arises, and the song Vande Mataram, which has played a historic part in the struggle for India's freedom shall be honoured equally with the Jana-gana-mana and shall have equal status with it."

The declaration was received with applause by the Assembly and *Jana-gana-mana* became the National Anthem of India and the song *Vande Mataram* was accorded equal status with it. The same day, all members standing the proceedings of the Assembly came to an end with singing of *Jana-gana-mana* and Vande Mataram. Then the Constituent Assembly adjoined

15 अगस्त 1947 को संपन्न संविधान सभा के स्वतंत्रता दिवस सत्र में राष्ट्र गान का गायन

सन् 1912 के अंक में 'भारत विधाता' शीर्षक से यह गीत पहली बार प्रकाशित हुआ था। स्वयं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने "द मार्निंग सांग ऑफ इण्डिया" शीर्षक के अंतर्गत इस गीत को अंग्रेजी में अनूदित किया। कवि रवीन्द्रनाथ का यह अनुवाद मद्रास की मदनपाल्ले कॉलेज की पत्रिका में पहली बार प्रकाशित किया गया।

सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फौज ने इस गीत के बारे में घोषणा की कि "टैगोर का गीत" (जय हे) हमारा राष्ट्र गान बन गया है। इस गीत को उन्होंने हिन्दुस्तानी में प्रस्तुत किया और इसके नवीन रूपान्तर को आज़ाद हिन्द फौज के राष्ट्र गान के रूप में अपनाया गया।

संविधान सभा के बारहवें तथा अंतिम सत्र के अंतिम दिन 24 जनवरी, 1950 को सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 'जन–गण–मन' को भारत के गणतंत्र के राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया। राष्ट्र गान के मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को सदन में प्रस्तुत करने और प्रस्ताव स्वरूप

Sine die only to emerge as the (Provisional) Parliament of the Republic of India on January 26, 1950.

Certain national anthems have numerous verses, only one or two of which are customarily used. The poem of our National Anthem runs into five stanzas but only the first stanza has been adopted as the National Anthem.

JANA-GANA-MANA

Jana-gana-mana-adhinayak, jaya-he Bharata-bhagya-vidhata
Punjaba-Sindhu-Gujrata-Maratha-Dravida-Utkala-Banga
Vindhya-Himachala-Yamuna-Ganga
uchchhala-jaladhi-taranga
Tava subha name jage, tava subha asisa mage.
gahe tava jaya gatha.
Jana-gana-mangala-dayaka, jaya he Bharata-bhagya-vidhata
Jaya hē, jaya hē, jaya hē, jaya jaya jaya, jaya he.

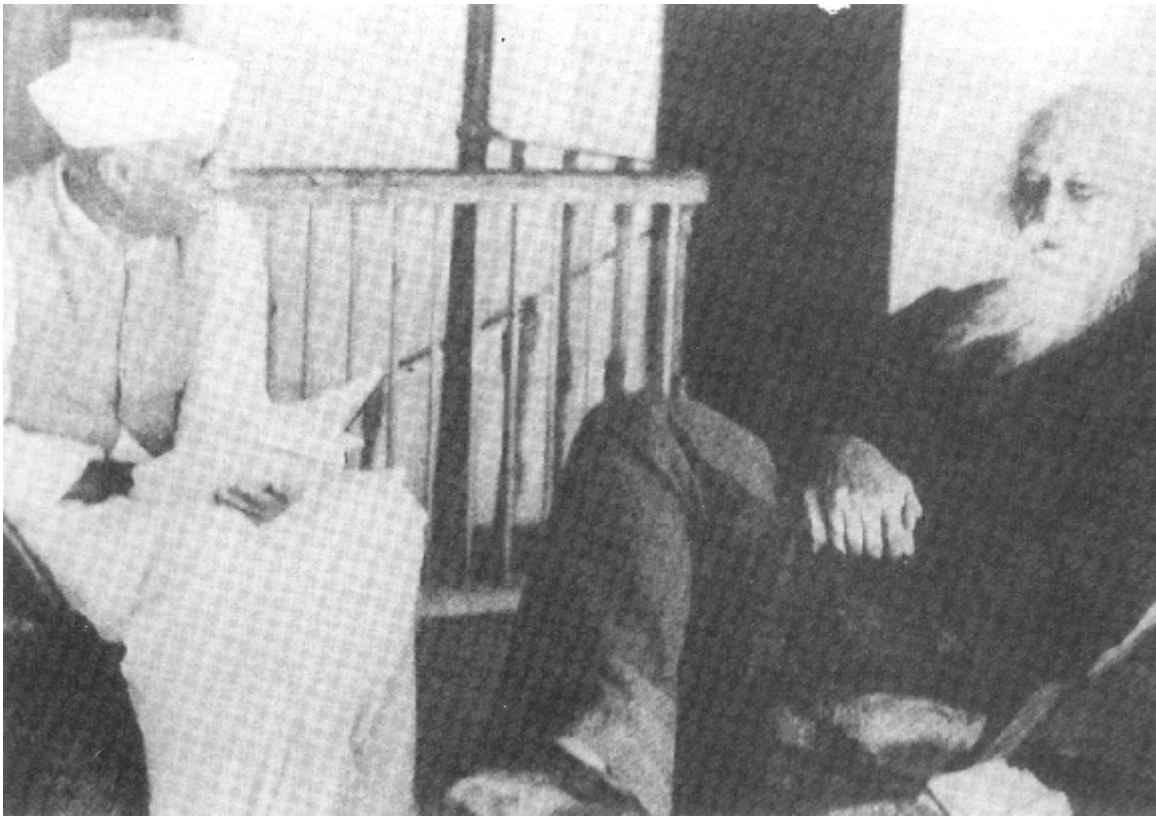

Rabindranath Tagore in Shantiniketan, 1939

इस पर निर्णय लिए जाने के बजाय स्वयं इसके संबंध में उनका घोषणा करना अधिक उत्तम होगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने इन्हीं विचारों का अनुपालन करते हुए राष्ट्र गान संबंधी एक बयान जारी किया :

"'जन–गण–मन' के रूप में शब्दों और संगीत से युक्त रचना को भारत के राष्ट्र गान के रूप में, सरकार द्वारा किए जाने वाले शाब्दिक परिवर्तनों के अनुसार, राजकीय समारोहादि में अवसरानुसार प्रयोग में लाया जाएगा तथा देश के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले गीत– 'वन्दे मातरम्' को 'जन–गण–मन' के समान की आदर तथा समान दर्जा प्रदान किया जाएगा।"

सभा में करतल ध्वनि से इस घोषणा का स्वागत किया गया और इस प्रकार 'जन–गण–मन' भारत का राष्ट्र गान बन गया तथा वन्दे मातरम् गीत को राष्ट्र गान के समान ही दर्जा प्रदान किया गया। उस दिन सभा की कार्यवाही जन–गण–मन तथा वन्दे मातरम् गीत के गायन के साथ ही समाप्त हुई, जिसमें सभी सदस्यों ने खड़े होकर भाग लिया। तत्पश्चात् संविधान सभा 26 जनवरी, 1950 को भारतीय गणतंत्र की (अंतरिम) संसद के सम्पन्न होने के कारण अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित कर दी गई।

कुछ राष्ट्रगानों में अनेक बन्द (स्टेन्ज़ा) होते हैं, इसलिए उनके एक या दो ही बन्दों का मुख्य प्रयोग किया जाता है। हमारे राष्ट्र गान में कुल पांच बन्द हैं, पर प्रथम बन्द को ही राष्ट्र गान के रूप में अभिगृहीत किया गया है।

जन–गण–मन

जनगणमन–अधिनायक जय हे भारत–भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण–मंगलदायक जय हे भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे,।।

पं. जवाहरलाल नेहरू ने गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि.... रवीन्द्रनाथ के साथ अपनी अंतिम भेंट के दौरान मैंने उनसे नए भारत के लिए एक राष्ट्र गान लिखने का अनुरोध किया था। उस समय तो मेरे ज़ेहन में हमारा वर्तमान राष्ट्र गान 'जन–गण–मन' नहीं था। कुछ ही समय बाद गुरूदेव स्वर्ग सिधार गए। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित गीत 'जन–गण–मन' को राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार करना मेरे लिए एक अत्यन्त प्रसन्नता की बात थी।

While paying a tribute to Gurudev Rabindranath Tagore, Pandit Jawaharlal Nehru also recorded that ***".....During my last visit to Rabindranath Tagore, I requested him to compose a National Anthem for the new India. He partly agreed. At that time I did not have Jana-gana-mana, our present National Anthem in mind. He died soonafter. It was a great happiness to me when some years later after the coming of Independence, we adopted Jana-gana-mana as our National Anthem."***

He also made a statement in the Parliament on August 25, 1948.

....having a tune for the national anthem to be played by the orchestras and bands became an urgent question for us immediately after August 15, 1947..... It was obvious that "God save the King" was not suitable for our army bands after the changeover to independence. We were constantly being asked about the tune to be played and could not give an answer because the ultimate decision could be made only by the Constituent Assembly....

The matter came to a head on the occasion of the General Assembly of the United Nations in 1947 in New York. Our delegation was asked for our National Anthem to be played on a particular occasion. The delegation possessed a record of *Jana-gana-mana* and they gave this to the orchestra to practice. When they played it before a large gathering it was greatly appreciated and representatives of many nations asked for the musical score of this new tune which struck them as distinctive and dignified.

Translation of the Morning song of India written by Rabindranath Tagore from which our National Anthem was adopted

Thou art the ruler of the minds of all people, dispenser of India's destiny. They have roused thy heart of the Punjab, Sind, Gujarat, and Maratha, of the Dravid and Odisha and Bengal; it echoes in the hills of the Vindhyas and Himalayas, mingles in the music of the Jamuna and Ganges and is chanted by the waves of the Indian sea. They pray for thy blessings and sing thy praise. The saving of all people waits in thy hand, thee, dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

Day and night thy voice goes out from land to land calling the Hindus, Buddhists, Sikhs and Jains round thy throne and the Parsees, Musalmans and Christians. The East and the West join hands in their prayer to thee, and the garland of life is woven. Thou brings the hearts of all people into the harmony of one life, thou dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 25 अगस्त, 1948 को संसद में प्रस्तुत बयान

..... 15 अगस्त, 1947 के पश्चात् वाद्यवृन्दों और बैन्ड द्वारा बजाए जाने के लिए राष्ट्र गान की धुन एक अति आवश्यक प्रश्न बन गई..... यह स्वाभाविक ही था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारी सेना के बैन्ड की टोलियों के लिए अंग्रेज सरकार की "गॉड सेव द किंग" उपयुक्त नहीं थी। हमसे सतत धुन के विषय में पूछा जाने पर भी हम उत्तर नहीं दे पा रहे थे, क्योंकि अंतिम निर्णय संविधान सभा द्वारा ही लिया जा सकता था.....

सन् 1947 में न्यूयॉर्क में संपन्न संयुक्त राष्ट्र की आम सभा के अवसर पर यही मुद्दा सम्मुख आया। एक विशिष्ट अवसर पर हमारे शिष्ट मंडल से हमारे राष्ट्र गान की धुन बजाने का अनुरोध किया गया। शिष्ट मंडल के पास 'जन–गण–मन' का एक रेकार्ड रखा था, जिसे उन्होंने वाद्य – वृन्द को अभ्यास करने हेतु दे दिया। एक बड़े जनसमूह के समक्ष वाद्यवृन्द द्वारा बजाए जाने पर धुन की अत्यन्त सराहना की गई और अनेक देशों के प्रतिनिधियों को यह धुन इतनी विशिष्ट और शानदार लगी कि उन्होंने इसकी स्वरलिपि भी माँगी।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित भारत के प्रभात गीत का अनुवाद, जिसमें से भारत का राष्ट्र गान लिया गया

तुम सबके मन के राजा हो! तुम भारत के भाग्य विधाता हो! तुम्हारी महिमा पंजाब, सिन्ध, गुजरात, महाराष्ट्र, द्रविड़, उड़ीसा, बंगाल, विंध्याचल और हिमालय की पर्वत शृंखलाओं तक व्याप्त है, तुम्हारा मधुर संगीत गंगा–यमुना नदियों में गूँज रहा है। सागर की लहरें तुम्हारा गुणगान करती हैं। ये लहरें तुम्हारा आशीर्वाद पाने की प्रार्थना करती है। सबका कल्याण तुम पर निर्भर है। तुम भारत के भाग्य विधाता हो।

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

दिन–रात तुम्हारी पुकार सभी स्थानों से हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन, पारसी, मुसलमान तथा ईसाई को एकत्रित करने के लिए पहुँचती है। तुम्हारी आराधना करने के लिए पूर्व तथा पश्चिम दिशाएं एक होती हैं। तुम्हें अर्पित करने के लिए जीवन माला गूँथी जाती है। तुम सबके हृदय में जीवन की समस्वरता लाते हो। तुम भारत के भाग्य विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

राष्ट्रों के उत्थान – पतन से अनभिज्ञ तीर्थयात्रियों का झुण्ड एक अंतहीन मार्ग से होकर गुज़रता है। तुम्हारे चक्र की बुलन्द ध्वनि से यह दल प्रतिध्वनित होता है। हे शाश्वत सारथी! नियति के बुरे दिनों से तुम्हारे तूर्यनाद की ध्वनि प्रतिध्वनित होती है। तुम मनुष्य मात्र को मृत्यु के पार लगाते हो! भवसागर के पार उतारते हो! तुम्हारे संकेत मात्र से मनुष्य के मार्ग स्पष्ट होते हैं! तुम भारत के भाग्य विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

घना अंधेरा था और रात बहुत गहराई हुई थी। मेरे देश में मुर्च्छापूर्ण मृत्युसमान चुप्पी थी। पर हे मातृभूमि, देश के भयंकर परेशानी से भरे समय में भी तेरी ये बांहें उसके आसपास थीं। हे मातृभूमि! तुम्हारे नेत्रों ने

The procession of pilgrims passes over the endless road rugged with the rise and fall of nations; and it resounds with the thunder of thy wheel. 'Eternal charioteer'? Through the dire days of doom thy trumpet sounds and men are led by thee across death. Thy finger points the path to all people. Oh! dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

The darkness was dense and deep was the night. My country lay in a death like silence of swoon. But thy mother arms were round her and thine eyes gazed upon her troubled face in sleepless love through her hours of ghastly dreams. Thou art the companion and the saviour of the people in their sorrows. Oh! dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

The night falls; the light breaks over the peaks of the Eastern hills, the birds begin to sing and the morning breeze carries the breath of new life. The rays of thy mercy have touched the waking land with their blessings. Victory to the King of Kings, Victory to thee, dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

Rabindranath Tagore

Gurudev Rabindranath Tagore was born on May 7, 1861 in the ancestral mansion, Jorasanko, in Central Kolkata. His grandfather, Dwarkanath, who built the family fortune, was known as a "prince". His father Maharishi Debendranath Tagore broke away from orthodox

The House of the Tagores, Kolkata

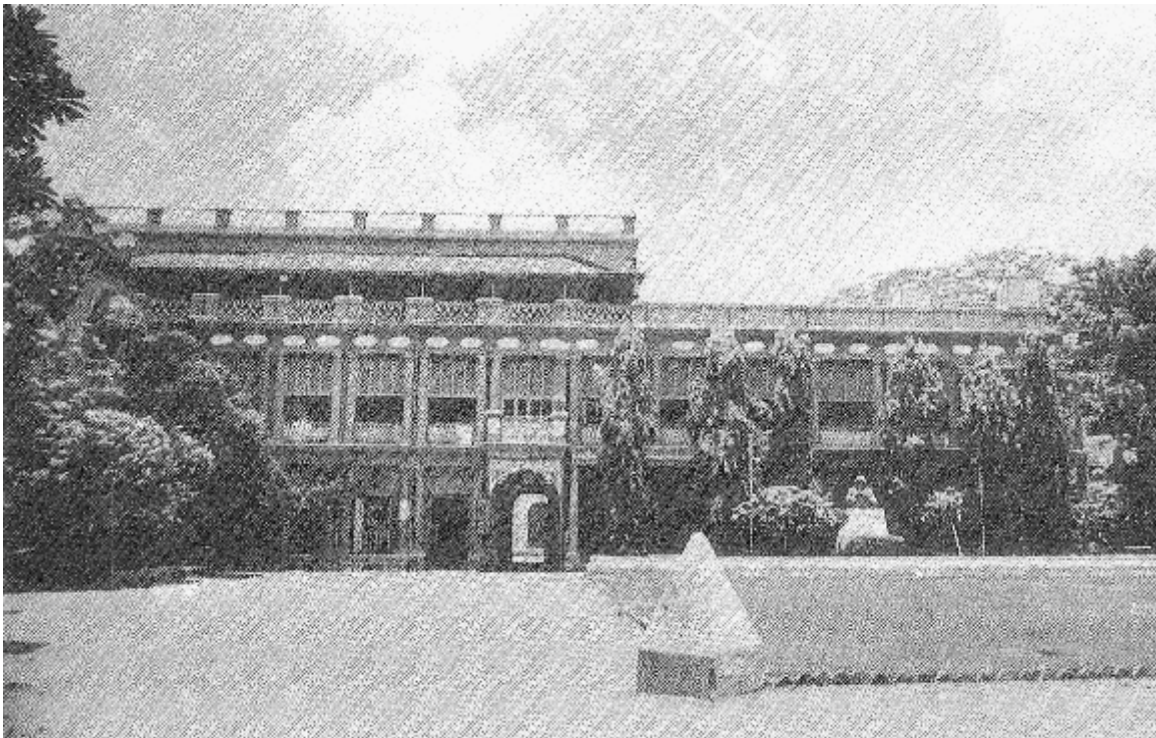

देश के परेशान मुख पर अपने स्नेह की निद्राहीन टकटकी लगाए रखी। तुम दुखी जनमानस की उद्धारक, उसकी सहभागी हो! तुम भारत के भाग्य के विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

रात्रि के बाद प्रातःकाल पूर्व के पर्वत शिखरों पर सूर्य का प्रकाश फैल जाता है, पक्षी चहचहाने लगते हैं और प्रातःकालीन नवजीवन से परिपूर्ण उच्छ्वास लेकर पवन आता है! तुम्हारी करूणामयी किरणों ने अपने आशीर्वाद से जागी भूमि को छू लिया है। राजाओं के राजा की जय हो! तुम्हारी विजय हो! भारत के भाग्य विधाता की जय हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता शहर के एक प्रमुख भाग में उनके पैतृक निवास स्थान जोरासांको में हुआ था। उनके दादा द्वारकानाथ, परिवार के भाग्य निर्माता स्वरूप थे, जिन्हें "प्रिंस" के नाम से जाना जाता था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर सभी परिवारिक रूढ़ परंपराओं को तोड़ एक ब्रह्मसमाजी नेता बन गए थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की पंद्रह संतानों में से, चौदहवीं संतान थे – रवीन्द्रनाथ (1861–1941)। वे एक अत्यंत सांस्कृतिक पारिवारिक वातावरण में पलकर बड़े हुए। रवीन्द्रनाथ के अनेक भाई–बहन कला क्षेत्र से जुड़े हुए थे–एक भाई संगीत रचनाकार, एक अन्य अव्यवसायी तौर पर नाटककार और दूसरों ने अपने ज्येष्ठतम भाई द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका में अपना योगदान दिया। वे स्वयं भी एक दार्शनिक थे। उनके पिता ने अपने सबसे छोटे पुत्र की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया और वे उन्हें अमृतसर एवं हिमालय की लंबी तीर्थयात्रा पर भी लेकर गए। रवीन्द्रनाथ का जीवन–दर्शन अपने पिता के धार्मिक विचारों से अत्यंत प्रभावित हुआ। रवीन्द्रनाथ को पढ़ाई हेतु स्कूल भेजा गया, पर उन्हें औपचारिक शिक्षा रास नहीं आई और यह देख तेरह वर्ष की आयु में ही उन्हें पढ़ाई छोड़ने की अनुमति दे दी गई। रवीन्द्रनाथ ने घर पर रहते हुए काव्य लेखन के प्रयोग आरंभ कर दिए और एक प्रकार से साहित्य तथा संगीत से परिपूर्ण शिक्षा ठाकुर परिवार में सतत चलती रही। रवीन्द्रनाथ अपने सबसे बड़े भाई से प्रोत्साहन पाकर बीस वर्ष की आयु में ही अपने प्रथम काव्य संग्रह के लिए प्रसिद्ध हो गए। जब रवीन्द्रनाथ को उनकी प्रथम साहित्यिक कृति हेतु सम्मानित किया गया, तब स्वंय बंकिमचन्द्र भी उपस्थित थे। सन् 1883 में रवीन्द्रनाथ का विवाह कर दिया गया। सन् 1901 में रवीन्द्रनाथ ने शांति निकेतन में एक स्कूल की स्थापना की, जहां उनके पिता ध्यानमग्न हो अपना जीवन व्यतीत करते थे। रवीन्द्रनाथ का आदर्श रट कर किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं, वरन् मातृभाषा के माध्यम से सृजनात्मक शिक्षा ग्रहण करना था। इस अनुभूति का प्रत्यक्ष अनुभव रवीन्द्रनाथ को शांति निकेतन में हुआ, जहां कला के दोनों पहलुओं–रचनात्मक व निष्पादन की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

सन् 1912 में रवीन्द्रनाथ ने पत्नी व पांच में से तीन संतानों की मृत्यु के पश्चात् गीत रूप में श्रद्धांजलि स्वरूप अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीतांजलि' प्रकाशित की। सन् 1913 में मूलतः बंगला में लिखित व अंग्रेजी में अनूदित उपर्युक्त पुस्तक को साहित्य के नोबल पुरस्कार, जो किसी भी एशियावासी को प्रथम बार प्रदान

family traditions and became a leader of the Brahmo Samaj. The fourteenth of Maharishi Debendranath Tagore's fifteen children, Rabindranath Tagore grew to manhood in a highly cultured family environment. A number of his brothers and sisters were artistically inclined - one composed music, another staged amateur theatre and many contributed to the literary magazine edited by his eldest brother, who was also a philosopher. His father gave special attention to his youngest son's education and took him on an extended pilgrimage to Amritsar and the Himalayas. His father's religious views influenced him. He was sent to school but the formal education did not suit him and he was allowed to give up formal studies at the age of 13. Living at home, he began to experiment with writing verse and as such education continued in the Tagore household which was suffused with literature and music. Encouraged by his older siblings, he went on to win renown at the age of twenty with his first volume of Bengali poems. Bankim Chandra Chatterjee, himself was present when honour was bestowed on him for his first literary venture. Tagore was married in 1883 and in 1901 he founded a school at Shantiniketan, the retreat where his father used to pass his days in meditation. Not bookish learning by rote, but creative education through his mother tongue was Tagore's ideal which he sought to realize at Shantinketan where most of the creative and performing arts were taught.

After the death of his wife and three of his five children, he published in 1912 his famous work entitled *Gitanjali* (song offering). Rabindranath Tagore became an international figure when his *Gitanjali,* an anthology of lyrics, originally written in Bengal and translated into English by him, was awarded the Nobel prize for literature - the first ever to an Asian in 1913. Since then he came to be known not only as a great writer but also as spokesman of modern India.

In 1921, Tagore opened Viswa-Bharati University at Shantiniketan dedicating it to his ideal of world brotherhood and cultural interchange.

Tagore also wrote *"Sonar Bangla"* which became the national anthem of Bangladesh. *Jana-gana-mana* was written for the Congress Session in 1911 in Kolkata. Tagore and Gandhi met for the first time in Shantiniketan on March 6,1915. In April 1919 after the massacre of Jalianwala Bagh in Punjab, he renounced his knighthood in protest. He believed that universality can be attained not by suppressing the cultural autonomy of any constituent unit but by finding a place for all through an universal approach. He respected his own heritage and was at the same time a great admirer of the intellectual energy and scientific spirit of the west.

Described as a Renaissance figure, Rabindranath Tagore had a multi-faceted personality. Besides being a poet, he was a dramatist, writer of short stories, novelist, painter, innovator in education and rural reconstruction.

किया गया था, से सम्मानित किया गया और इस प्रकार पुरस्कृत होने पर रवीन्द्रनाथ एक अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्ति बन गए। तब से, रवीन्द्रनाथ न केवल एक महान लेखक, वरन् आधुनिक भारत के प्रवक्ता के रूप में भी प्रसिद्ध हो गए।

सन् 1921 में श्री ठाकुर ने विश्व मातृत्व तथा सांस्कृतिक विनिमय के आदर्श को समर्पित करते हुए शांति निकेतन में विश्व भारती का शुभारंभ किया।

श्री ठाकुर ने "सोनार बांग्ला" कविता भी लिखी, जिसे कालांतर में बांग्ला देश के राष्ट्र गान का दर्जा दिया गया। सन् 1911 में कोलकाता में संपन्न होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के लिए रवीन्द्रनाथ ने जन–गण–मन शीर्षक गीत लिखा। 6 मार्च, 1915 को शांति निकेतन में श्री ठाकुर तथा गांधी जी पहली बार मिले थे। अप्रैल 1919 में, पंजाब में हुए जलियांवाला बाग़ हत्याकाण्ड के पश्चात् रवीन्द्रनाथ ने अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए अपनी 'नाइटहुड' उपाधि लौटा दी। रवीन्द्रनाथ का विश्वास था कि किसी भी संवैधानिक समाज की सांस्कृतिक स्वायत्तता पर रोक लगा कर सर्वव्यापकता को हासिल नहीं किया जा सकता। बल्कि सबके लिए स्थान खोजकर ही एक सार्वभौमिक दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। रवीन्द्रनाथ अपनी धरोहर के प्रति गर्व का अनुभव करते थे और पाश्चात्य बौद्धिक प्रवृत्ति के प्रशंसक थे।

नवचेतना से परिपूर्ण रवीन्द्रनाथ एक बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। कवि होने के अलावा, वे एक नाटककार, लघुकथाकर, उपन्यासकार, चित्रकार व ग्रामीण तथा शैक्षिक पुनर्रचना के प्रवर्तक भी थे।

लगभग सत्तर वर्ष की आयु में श्री ठाकुर ने चित्रकारी करनी आरंभ की और दस वर्ष के भीतर लगभग तीन हज़ार चित्रकृतियां बनाई, जो कि संकल्पनात्मक स्तर पर निश्चित रूप से भारतीय थीं, पर साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रचलित भारतीय मानदण्डों से सर्वथा परे थी। रवीन्द्रनाथ के रेखाचित्र तथा चित्रकृतियां मन के अचेतन व अर्धचेतन स्तरों की खोज करती हैं। रवीन्द्रनाथ ने सत्तरवें दशक में ही सौर प्रणाली की क्रियाविधि तथा सापेक्षता के सिद्धान्त का वर्णन करते हुए प्राथमिक विज्ञान पर एक पाठ्य पुस्तक भी लिखी।

चीन की एक पुरानी कहावत है :

एक हरा पौधा अपने हृदय में रोपो
चहचहाता पक्षी बाहर आएगा उसमें से

मानव मन में निहित इसी पवित्र भावना ने श्री ठाकुर को बाल साहित्य रचना की प्रेरणा दी, क्योंकि गाने के बिना, पक्षियों के बोलने पर वर्षा नहीं आएगी। वे एक जन्मजात कथाकर थे और उनकी वर्णनात्मक शैली से सभी छोटे–बड़े आकृष्ट होते थे। उन्होंने बच्चों के लिए विशेष तौर पर लिखा और उनका लिखा प्रत्येक शब्द सौन्दर्य से दमकता प्रतीत होता है। प्रो. हुमायूँ कबीर के अनुसार "शायद, भारत और आधुनिक विश्व को श्री ठाकुर की सबसे महान देन उनकी यह भावना है कि अपनी गहनतम भावनात्मक अन्तर्दृष्टि से ही मनुष्य एक हो सकता है। रवीन्द्रनाथ का व्यक्ति विशेष की प्रतिष्ठा में गहन विश्वास था और वे विश्व में व्याप्त सांस्कृतिक स्वायत्तता के शक्तिशाली समर्थकों में से एक थे।"

सन् 1941 में 81 वर्ष की आयु में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का देहांत हुआ।

Tagore took to painting when he was almost seventy and yet produced within ten years almost three thousand paintings which were inherently Indian in concept though executed in a style evolved by him. His drawings and paintings explore the unconscious and subconscious levels of the mind. In his seventies, he wrote a text book on elementary science which explained the theory of relativity and the working of the solar system.

One hears of an old Chinese saying :

Plant a green bough within your heart
and the singing bird will come

It is this interpretation within a man's mind that inspired Tagore to compose for children; for without the singing bird's prompting the rain will not come. Tagore was a born story-teller and young and old were deeply attracted to his narrative style. He wrote extensively for children and every word he ever wrote emanates beauty. According to another son of the soil Prof. Humayun Kabir, "perhaps Tagore's greatest contribution to India and the modern world is his recognition that man can unite only on the bars of their deepest spiritual insight. He was a great believer in the dignity of the individual and was one of the strongest champions of cultural autonomy that the modern world has known."

Gurudev Rabindranath Tagore died at the age of 81 in 1941.

जन–गण–मन

जनगणमन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशीष मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण–मंगलदायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

अहरह तव आह्वान प्रचारित,
शुनि तव उदार वाणी
हिन्दु बौद्ध शिख जैन
पारसिक मुसलमान खिस्टानी
पूरव–पश्चिम आसे
तव सिंहासन–पाशे
प्रेमहार हय गांथा।
जनगण–ऐक्य–विधायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

पतन–अभ्युदय–बंधुर पन्था,
युगयुगधावित यात्री,
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे
मुखरित पथ दिन रात्रि
दारूण–विप्लव–माझे
तव शंखध्वनि बाजे,
संकटदुःखत्राता।

जनगण–पथपरिचायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

घोर तिमिरघन निविड़ निशीथे
पीड़ित मूर्च्छित देशे
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल
नतनयने अनिमेषे।
दुःस्वप्ने आतंके
रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता।
जनगण–दुःखत्रायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि
पूर्व–उदयगिरिभाले,
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण
नवजीवन रस ढाले।
तव करूणारूण–रागे
निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर,
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

JANA-GANA-MANA

Jana-gana-mana adhinayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Punjaba-Sindhu-Gujrata-Maratha-
Dravida-Utkala-Banga

Vindhya-Himachala-Yamuna-Ganga-
uchchhala-jaladhi-taranga

Tava subha namē jagē,
tava subha asisa magē
gahe tava jaya-gatha,

Jana-gana-mangala-dayaka jaye hē
Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Aharaha tava ahvana pracharita,
suni tava udara vani

Hindu-Bauddha-Sikha-Jaina-
Parasika-Musalmana-Khristani

Pūrava-paschima asē,
tava simhasana-pasē
prema-hāra haya gantha,

Jana-gana-aikya-vidhayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Patana-abhyudaya-bandhura pantha,
yuga yuga dhavita yatri,

Hē chira-sarathi, tava ratha-chakrē
mukharita patha dina-ratri,

Daruna-viplava-majhē
tava sankhadhvani bajē,
sankata-duhkhatrata,

Jana-gana-patha-parichayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Ghora-timira-ghana-nivida-nisithē
pidita-mūrchhita dēsē

Jagrata chhila tava avichala
mangala nata-nayanē animēsē

Duhsvapnē atankē
raksa karilē ankē
snehamayi tumi mata,

Jana-gana-duhkhatrayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Ratri prabhatila, udila ravichchhavi
pūrva-udaya-giri-bhalē,

Gahe vihangama, punya samirana
nava-jivana-rasa dhalē.

Tava karunaruna-ragē
nidrita Bharata jagē
tava charane nata matha,

Jaya jaya jaya hē, jaya rajēsvara
Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

भारत के राष्ट्र गान संबंधी आदेश

कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित जन–गण–मन के रूप में प्रसिद्ध गीत का प्रथम पद – भारत का राष्ट्र गान है। राष्ट्र गान की निर्धारित वादन अवधि लगभग 52 सेकण्ड है। कुछेक अवसरों पर राष्ट्र गान की प्रथम व अंतिम पंक्तियों से युक्त राष्ट्र गान का एक संक्षिप्त रूपान्तर भी बजाया जाता है। इसकी निर्धारित वादन अवधि 20 सेकण्ड है।

निम्नलिखित अवसरों पर राष्ट्र गान का पूर्ण रूपान्तर बजाया जाएगाः

नागरिक तथा सैनिक प्रतिष्ठापन के अवसर पर;

राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल और उप–राज्यपाल को उनके संबंधित राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में समारोहिक अवसरों पर राष्ट्रीय सलामी दिए जाने के अवसर पर (अर्थात् राष्ट्रीय सलामी–सलामी शास्त्र समादेश, राष्ट्र गान के साथ);

परेडों के दौरान उल्लिखित किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति को महत्ता प्रदान न करते हुए;

सरकार द्वारा आयोजित जन समारोहों तथा औपचारिक राज्य समारोहों में माननीय राष्ट्रपति के आगमन तथा ऐसे ही समारोहों में माननीय राष्ट्रपति के प्रस्थान पर;

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से राष्ट्रपति द्वारा देश को संबोधित किए जाने के प्रसारण से ठीक पहले और बाद में;

राज्य/संघ शासित प्रदेश में औपचारिक राज्य समारोहों में राज्यपाल/उप–राज्यपाल के आगमन व प्रस्थान के अवसर पर;

परेड में राष्ट्र ध्वज की प्रस्तुति पर;

सैन्य दलीय ध्वजों के प्रस्तुतीकरण किए जाने पर;

नौसेना में ध्वज फहराते समय।

Orders relating to the National Anthem of India

The composition consisting of the words and music of the first stanza of the late poet Rabindranath Tagore's song known as 'Jana-gana-mana' is the National Anthem of India. Playing time of the full version of the Anthem is approximately 52 seconds.

A short version consisting of the first and last lines of the National Anthem is also played on certain occasions. Its playing time is about 20 seconds.

The full version of the Anthem shall be played on the following occasions :

Civil and Military Investitures ;

When National Salute is given on ceremonial occasions to the President or to the Governor and Lieutenant Governor within their respective States and Union Territories ;

During parades-Irrespective of whether any of the dignitaries referred above is present or not;

On arrival of the President at formal State functions and other functions organised by Government and mess functions and on his departure from such functions;

Immediately before and after the President addresses the Nation over the All India Radio and T.V. ;

On arrival of the Governor / Lieutenant Governor at formal State functions within his State/Union Territory and on his departure from such functions ;

When the National Flag is brought on parade ;

When the Regimental Colours are presented ;

For hoisting of colours in the Navy.

राष्ट्र गान की स्वर लिपि

स: पांचवां काला — Notation of National Anthem — S: Fifth Black

सरे	गग	गग	गग	ग	गग	रेग	म
जन	गण	मन	अधि	ना	यक	जय	हे
SR	GG	GG	GG	G	GG	RG	M
JA NA	GA NA	MA NA	ADHI	NA	YA KA	JA YA	HE

ग	गग	रे	रेरे	नीरे	स	–	स
भा	रत	भा	ग्यवि	धा–	ता	–	पं
G	GG	R	RR	NR	S	–	S
BHA	RA TA	BHA	GYA VI	DHA	TA	–	PUN

प	पप	–प	पप	प	पम	पम	प
जा	बसिं	–धु	गुज	रा	तम	रा–	ठा
P	PP	-P	PP	P	PM	PM	P
JA	BAS IN	-DH U	GU JA	RA	TA MA	RA-	T HA

म	मम	म	मग	रेम	ग	–	–
द्रा	विड़	उत्‍	कल	बं–	ग	–	–
M	MM	M	MG	RM	G	–	–
DRA	VI DA	UT	KA LA	BAN-	GA	–	–

ग	गग	ग	गरे	पप	पम	म	म
विं	ध्यहि	मा	चल	यमु	ना–	गं	गा
G	GG	G	GR	PP	PM	M	M
VIN	DHY AHI	MA	CHA LA	YA MU	NA	GA N	GA

ग	गग	रेरे	रेरे	नीरे	स	–	–
उ	च्छल	जल	धित	रं–	ग	–	–
G	GG	RR	RR	NR	S	–	–
U	CHCH ALA	JA LA	DHI TA	RAN	GA	–	–

ग	गग	ग	ग	रेग	म	–	–
तव	शुभ	ना	मे	जा–	गे–	–	–
G	GG	G	G	RG	M	–	–
TA VA	SUB HA	NA	ME	JA-	GE	–	–

गम	पप	प	मग	रेम	ग	–	–
तव	शुभ	आ	शिष	मा–	गे	–	–
GM	PP	P	MG	RM	G	–	–
TA VA	SU BHA	A	SI SA	MA-	GE	–	–

ग	गग	रेरे	रेरे	नीरे	स	–	–
गा	हे	तव	जय	गा–	था	–	–
G	GG	RR	RR	NR	S	–	–
GA	HE	TA VA	JA YA	GA	TH A-	–	–

पप	पप	प	पम	प	पप	मधु	प
जन	गण	मं	गल	दा	यक	जय	हे
PP	PP	P	PM	P	PP	MD	P
JA NA	GA NA	MA N	GA LA	DA	YA KA	JA YA	HE

म	मम	ग	गग	रेम	ग	–	नीनी
भा	रत	भा	ग्यवि	धा–	ता	–	जय
M	MM	G	GG	RM	G	–	NN
BHA	RA TA	BHA	GYA VI	DHA-	TA	–	JA YA

सं	–	-O	नीध	नी	–	-O	पप
हे	–	-O	जय	हे–	–	-O	जय
S	–	-O	ND	N	–	-O	PP
HE	–	-O	JAYA	HE	–	-O	JAYA

ध	–	–	O	सस	रेरे	गग	रेग
हे	–	–	O	जय	जय	जय	जय
D	–	–	O	SS	RR	GG	RG
HE	–	–	O	JA YA	JA YA	JA YA	JA YA

म	–	–	–
हे	–	–	–
M	–	–	–
HE	–	–	–

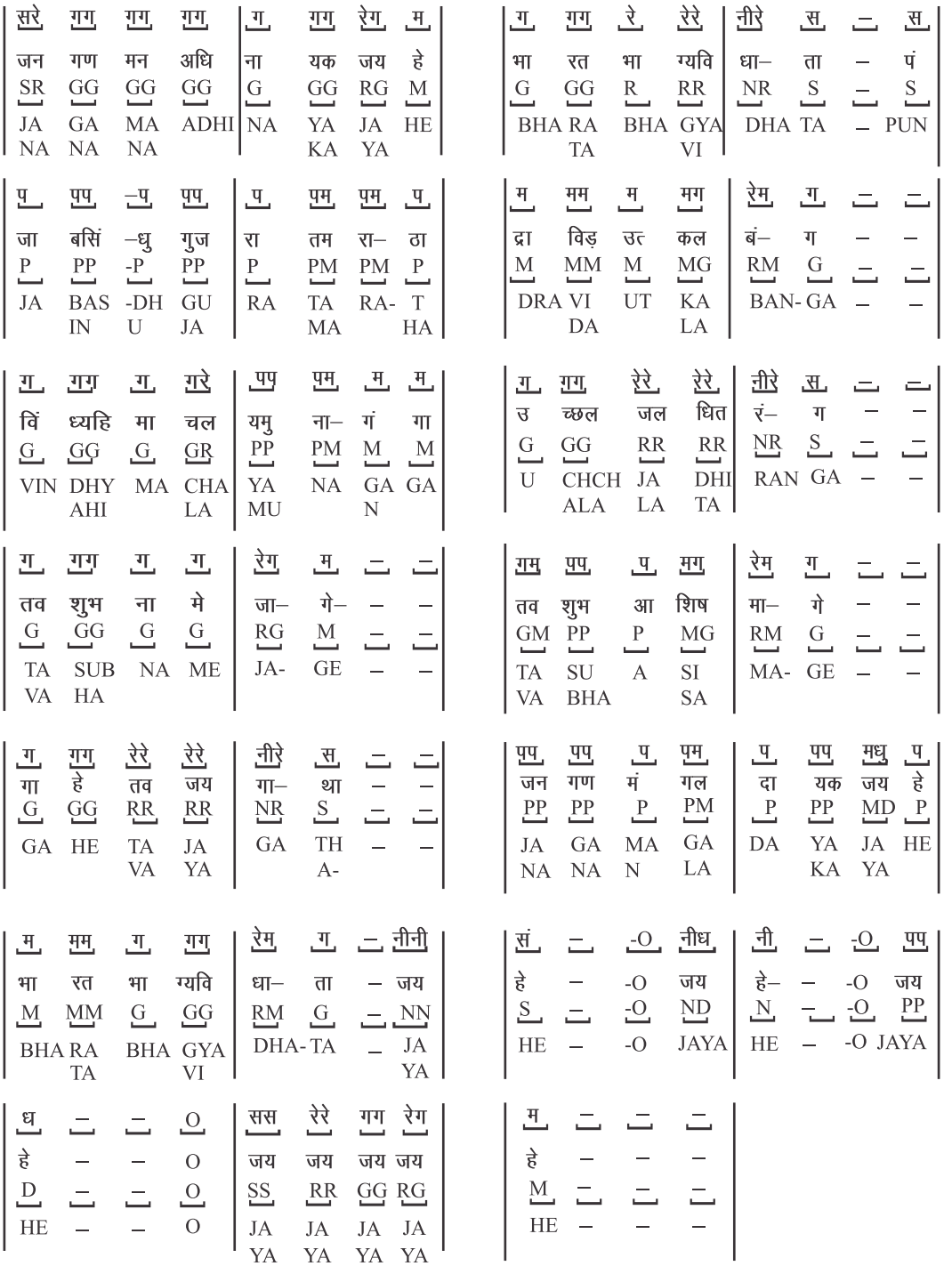

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

'जनगणमन' राष्ट्र गान कैसे बना, और इसका प्रयोग कब किया जाता है?

राष्ट्रगान 'जनगणमन' पर आधारित एक कविता अपने शब्दों में लिखिए।

हमारे देश के नेताओं द्वारा राष्ट्रगान के बारे में, जो उद्धरण तथा बयान दिए गए हैं, उन्हें इकट्ठा कीजिए।

भारत के पड़ोसी देशों के राष्ट्रगानों को इकट्ठा कीजिए। यह भी पता लगाइए कि ये गान उन देशों के राष्ट्रगान कैसे बने?

अपने देश की विविध प्रांतीय भाषाओं में 'जनगणमन' के अनुवाद इकट्ठा कीजिए।

अपने विद्यालय में प्रदर्शित करने के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवनवृत्त और कार्यो पर आधारित दीवार–पत्रिका सृजित कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

How did the song 'Jana gana mana' become the national anthem and when is it played?

Write a poem in your own words based on national anthem 'Jana gana mana.'

Collect the quotes and statements about national anthem made by leaders of our country.

Collect the national anthem of neighboring countries of India. Also find out how these songs became national anthems of those countries.

Collect the translations of 'Jana gana mana' in various regional languages of our country.

Develop a wall magazine on the life history and works of Rabindranath Tagore to display in your school.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

References

Constituent Assembly (Legislative) Debates, Vol. I.,(August 25, 1948)

Madras Mail, (November 3, 1937)

National Flag Code

National Songs, (1963), Publications Division.

Our National Insignia, (1954), Amalapuram.

Sen, Prabodh Chandra, (1972), " India's National Anthem", Kolkata.

The Nation, (December 3, 1948 and March 10, 1949).

Zaidi, A.M., (1979) "The Encyclopaedia of Indian National Congress", New Delhi.

Photo Credits

Press Information Bureau, New Delhi

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem

National Flag

National Anthem

National Song

National Flower

National Bird

National Animal

National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

राष्ट्रीय प्रतीक

कमल

Lotus

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय पुष्प

कमल

Lotus

NATIONAL FLOWER

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

कमल

जीवन के आह्लाद का प्रतीक–पुष्प, धरती मां को प्रकृति की एक अनुपम भेंट है। पुष्प, अपनी संरचना, वर्ण, खुशबू व आकृति में विविधता लिए होते है। किसी भी पुष्प की कोमलता से परिपूर्ण पत्तियां, अति सूक्ष्म वर्ण और विविध प्रकार की सुगंध तथा एक शांत कोमल सौन्दर्य प्रत्येक दर्शक में छिपे कलाकार मन को उद्घाटित करने में सक्षम होता है।

भारत में प्रकृति के पूज्य होने के कारण पुष्प पवित्र समझे जाते हैं। घरों तथा मंदिरों में, प्रभु को अर्पित करने के लिए पुष्पों का उपयोग किया जाता है। भारत का प्राकृतिक भू – दृश्य, प्रत्येक प्रजाति के पुष्प की एक चित्र–पच्चीकारी है। कुछ पुष्प, पर्वत श्रृंखलाओं तथा घाटियों में स्वयं ही विकसीत होते हैं, तो कुछ अन्य पुष्प प्रजातियां वनस्पतिविदों की विशेषज्ञता से विकसित की जाती हैं। सभी ऋतुएं संबंधित पुष्पों की विशिष्ट विविधताएं लेकर आती हैं। पुष्प, किसी भी धार्मिक अुनष्ठान, समारोह अथवा धार्मिक या सामाजिक त्योहार के अभिन्न अंग होते हैं।

कमल की विविध समानर्थक नाम हैं – **पद्म, कमल, नलिनी, सरोरूह, सरोज, अरविन्द, पंकज, रागिनी, पुण्डरीक, पुष्कर, अम्बुज, उत्पल, कुमुद, कुवलय।**

भारतीय पुराणों तथा दंतकथाओं में भी हमें कमल का उल्लेख प्राप्त होता है। देश के आर्यपूर्व इतिहास के पूर्वार्द्ध में हमें कमल पुष्प का संदर्भ प्राप्त होता है। कमल की अर्ध दीर्घवृत्ताकार कलियां, दल, गठी हुई आच्छादित अथवा वेष्टित और विशाल चक्र समान पत्तियां–कवियों, नर्तकों तथा संगीतकारों की कल्पना को प्रेरित करती हैं। कमल पुष्प भारतीय जीवन तथा दर्शन के लगभग सभी पहलुओं में व्याप्त है। आज भी पूजा–अर्पण के रूप में प्रयुक्त कमल, हमारी 5,000 वर्ष पुरानी जीवंत संस्कृति की एक गुंजायमान कड़ी है, क्योंकि हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में निहित विचारधाराओं व दर्शनों का यह प्रतिनिधि रूप है।

परिपूर्ण एवं परिशुद्ध सुन्दर कमल जल की गहराइयों से पोषण प्राप्त करता है। प्रकृति, कमल पुष्प के माध्यम से आदिकालीन जीवनदायक शक्तियों की संकल्पना को प्रतिबिम्बित करती है, ब्रह्माण्ड का उदय होता है। साथ ही यह विचार कमल पुष्प के पौराणिक अर्थो को उद्घाटित करता है।

मूर्तिशिल्प में समुद्र की सतह पर शयन मुद्रा में भगवान विष्णु को प्रदर्शित किया गया है। विष्णु भगवान की नाभि से कमल पुष्प उद्भूत होता है, जिसके आंतरिक चक्र में सृष्टि रचयिता ब्रह्मा विराजमान होते हैं। देवी कमला, हिन्दू देवी–देवताओं में महत्त्वपूर्ण श्रीलक्ष्मी का ही एक रूप है। कमल पुष्प के मध्य खड़ी श्री लक्ष्मी देवी विष्णु भगवान की जीवन संगिनी हैं, जो स्त्री ऊर्जा का केन्द्र बिन्दु हैं, ऐसी शक्ति, जो पूरूष ऊर्जा के प्रतीक विश्व के रक्षक विष्णु से सीधे जुड़ी है। देवी श्री लक्ष्मी, मिट्टी की उर्वरता तथा पृथ्वी के हृदय में अंतः स्थापित समृद्धि को संरक्षित करने की शक्ति से संपन्न होने के कारण उर्वरता तथा सृजन के प्रतीक कमल पुष्प के साथ अंतरंग रूप से जुड़ी हैं।

LOTUS

Flowers are nature's gift to Mother Earth and are symbolic of the celebration of life. They vary in their texture, colour, fragrance, shapes and sizes. The softness of the petals, the subtle shades of colours, and the variety of fragrance and their tranquil delicate beauty bring out the hidden artist in every beholder.

All nature is worshipped in India and hence flowers are sanctified and are commonly used as offerings in homes and in houses of prayer. The natural landscape of India is a canvas mosaic of flowers of every species - some grow wild in the mountain ranges and valleys, others cultivated by the genius of botanists and the changing seasons bring their own special varieties. Flowers form part of every ritual, ceremony or festival whether religious or social.

The Lotus has a variety of names - ***Padm*** (पद्म), ***Kamal*** (कमल), ***Nalini*** (नलिनी), ***Sarorooh*** (सरोरूह), ***Saroj*** (सरोज), ***Arvind*** (अरविन्द), ***Pankaj*** (पंकज), ***Ragini*** (रागिनी), ***Pundarik*** (पुण्डरीक), ***Pushkar*** (पुष्कर), ***Ambuj*** (अम्बुज), ***Utpal*** (उत्पल), (some synonyms) ***Kumud*** (कुमुद), ***Kuvalaya*** (कुवलय)

ॐ मध्याह्ने सावित्री रविमण्डल मध्यस्था, कृष्णावर्णा, चतुर्भुजा, त्रिनेत्रा,
शंख–चक्रगदापद्महस्ता, युवती, गरूड़ारूढ़ा, वैष्णवी, यजुर्वेदोदाहृता ध्येया।
–गायत्री त्रिसंध्या

मध्याह्न में गायत्री का युवती, यजुर्वेद स्वरूपिणी विष्णुरूपा, गरूड़ासना, त्रिनेत्रा, चतुर्भुजा, शंखचक्र – गदा – पद्म – धारिणी तथा सूर्यमण्डल मध्यस्था के रूप में ध्यान करें।

स्वर्ग, पेड़–पौधों तथा प्राणि जगत में निवास करने वाले देवी–देवताओं की कथा के साथ हमारी पुराणकथाएं तथा दंतकथाएं संबद्ध हैं। बिल्व वृक्ष पर भगवान शिव, अश्वत्थ पर भगवान विष्णु और कमल पुष्प पर देवी श्री लक्ष्मी का वास माना जाता है। प्रत्येक हिन्दू घर में कमल की देवी–लक्ष्मी, शिव, विष्णु कृष्णा (विष्णु के अवतार), सरस्वती (विद्या और संगीत की देवी) और गज शीर्ष देवता विघ्न विनाशक गणेश के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। देवी श्री लक्ष्मी की पूजा–अर्चना की जाती है, क्योंकि ऐसा विश्वास है कि देवी लक्ष्मी अपने भक्त को सफलता, यश, स्वास्थ्य–लाभ तथा दीर्घायु से संपन्न कर देती हैं।

एक अन्य प्राचीन विचारधारा में पवित्र कमल पुष्प का तांत्रिक यंत्रों में भी प्रयोग किया गया है। चिन्तन–मनन अथवा ध्यान हेतु सहायक रूप में निर्मित एक पवित्र, ज्यामितीय आरेखी प्रस्तुतीकरण को श्री यंत्र कहते हैं। विविध संरचनाओं से युक्त ये श्री यंत्र, प्रत्येक निश्चित ध्येय को प्राप्त करने में भक्त की सहायता करते हैं। तत्पश्चात् पुरोगामी अभ्यास द्वारा साधक विषय वस्तु तथा शक्ति के साकार संसार से परे एक समयहीन सत्य की खोज भी कर सकता है।

कमल यंत्र में कमल दल के बाहर की ओर प्रगतिपरक विकिरण भावनात्मक परिपूर्णता की प्रक्रिया में आत्मा को प्रदर्शित करता है। इस परंपरागत पौराणिक पुष्प की आठ पंखुड़ियों अथवा दल को अंतरिक्ष में विस्तार के आठ प्रमुख बिन्दुओं के समान होने के कारण उन्हें ब्रह्माण्डीय सामंजस्य का प्रतीक माना जाता है।

बिन्दु त्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मं मन्वस्त्रनागदलसंयुत षोडशारम्।
वृत्तत्रंय च धरणीसदनत्रयं च श्री चक्रराजमुदितं परदेवतायाः।।
–रूद्रयामल तंत्र

श्री यंत्र के नौ चक्र हैं – बिन्दु, त्रिकोण, आठ त्रिकोणों का समूह, दस त्रिकोणों का समूह, दस त्रिकोणों का अन्य समूह, चौदह त्रिकोणों का समूह, आठ दलों वाला कमल, सोलह दलों वाला कमल तथा श्री यंत्र की बाहरी रेखा का क्षेत्र (भूपुर)।

बौद्ध दृष्टिकोण के अनुसार जिस कमल पर शाक्य मुनि प्रतिष्ठापित हैं, वह भगवान बुद्ध की संसार के प्रदूषित वातावरण से अछूती प्रकृति है।

Mention of the lotus abounds in Indian myths and legends. It dates back to the beginning of pre-Aryan history of India. The striking beauty of its semi-ellipse bud, petals, tightly wrapped and large disc like leaves has enthused the imagination of poets, dancers, musicians, artists and the lotus has permeated all aspects of Indian life and thought. Used even today as a common votive offering, it is a vibrant link in a 5000 years old living culture as it is representative of the ideologies and philosophies of ancient cultural heritage.

This flawless beautiful flower draws its nourishment from the depths of the waters. Through it, nature reflects the concept of the primordial life-giving forces from which the universe arises. It is this idea that leads to the legendary connotations of the Lotus.

Iconography depicts Vishnu sleeping on the surface of the ocean, from his navel, a lotus emerges and within the inner whorl of the blossom sits the creator of the universe-Brahma. The lotus Goddess is the early form of the goddess Sri Lakshmi, an important divinity of the Hindu pantheon. Sri Lakshmi, portrayed standing on the lotus, is the consort of Vishnu. She is the focal point of female energy, the force corresponding to the concentration of male energy existing in Vishnu, the preserver. She is empowered to protect the fertility of the soil and the riches embedded in the heart of the earth. It is for this reason that Sri Lakshmi is associated with the lotus which is the symbol of fertility and creation.

ॐ मध्याह्ने सावित्री रविमण्डल मध्यस्था, कृष्णावर्णा, चतुर्भुजा, त्रिनेत्रा,
शंख–चक्रगदापद्महस्ता, युवती, गरूड़ारूढ़ा, वैष्णवी, यजुर्वेदोदाहृता ध्येया।
–गायत्री त्रिसंध्या

Myths and legends are replete with stories of gods and goddesses that dwell in the realm of heaven and in the plant and animal kingdom. Shiva is symbolized in the *bilva* tree. Vishnu in the myrobalan and Sri Lakshmi in the lotus. In every Hindu home, Sri Lakshmi—the lotus goddess stands with Shiva, Vishnu, Krishna—an incarnation of Vishnu, Saraswati— the goddess of learning and music, and Ganesha—the elephant headed god, the remover of obstacles. Prayers are offered to Sri Lakshmi for she is said to endow the devotee with success, fame, health and long life.

In another dimension of ancient thought and philosophy, tantric yantras have incorporated the sacred lotus. A yantra is a sacred, geometrical diagrammatic representation, designed to aid meditation. Yantra of varied structures help the disciple to attain each set goal. Later by progressive practice, the *sadhaka* or aspirant, can seek timeless truths beyond the concrete world of matter and energy.

दैनंदिन पुष्प कला तथा भित्ति सज्जा में कमल के अभिप्राय को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसे बंगाल में अल्पना, बिहार में अरीपना, राजस्थान में मांडना, ओड़िशा में ओसा, तथा तमिलनाडु में कोलम के नाम से जाना जाता है। कमल परिकल्पना या संकल्पना पर आधारित शैलीबद्ध रूढ़ अलंकरण बनाने के लिए चावल के आटे अथवा घोल को प्रयोग किया जाता है।

परंपरागत भारतीय घरों में रंगोली देहरी और पूजा कक्ष में बनाई जाती है। रंगोली के नमूनों के प्रतीकात्मक अर्थ होते हैं और उनमें ऊपर उल्लिखित पवित्र यंत्र के कुछ आधारभूत तथ्य भी निहित होते हैं। रंगोली का उद्देश्य, दुरात्माओं को भगाकर घर में देवताओं का आह्वान तथा घर को साफ–सुथरा रख सुख–समृद्धि का संचरण करना है।

कमल अभिप्राय का प्रयोग करते समय कमल दलों की संख्या 5,8,9,16,32 यहां तक कि 1,000 तक भी हो सकती है। ऐसी ही एक अष्ट दल कमल परिकल्पना से परिपूर्ण रंगोली इस लोकप्रिय शैली के सादृश्यमूलक अर्थ को उद्घाटित करती है। प्रत्येक दल का प्रतीक स्वरूप एक विशिष्ट निहितार्थ है। इनमें से तीन दल– अहं, विचार शक्ति और मन, मानव के तीन पहलुओं को इंगित करते हैं, जबकि शेष पंच तत्त्व, यथा – आकाश, वायु जल, पृथ्वी तथा अग्नि को प्रस्तुत करते हैं। वे आन्तरिक तथा बाह्य – भौतिक, पराभौतिक संसार को प्रतिबिंबित तथा तात्त्विक ऊर्जा से मनुष्य की अंतःक्रिया को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार दैनंदिन जीवन में भी मंगलसूचक कमल पुष्प सतत उपयोगितापूर्ण है।

भारत में पाए जाने वाले अनेक प्रकार के पुष्पों में से केवल कुछ ही पुष्प भारतीय मूल के हैं। कमल पुष्प भी भारतीय मूल का है तथा वैदिक काल के प्राचीन संस्कृत धर्मग्रंथों में हमें राष्ट्रीय पुष्प कमल का उल्लेख प्राप्त होता है।

महान भारतीय महाकाव्य रामायण तथा महाभारत, विष्णु पुराण और कालिदास तथा भास की साहित्यिक कृतियां प्राकृतिक छटा युक्त छन्दों के लिए जानी जाती हैं।

भज माधुर्यम्
धवलबलीवर्दपंक्तिरिव समाधुर्यधा वाणी मनोहरति।
वर्जय वैपरीत्यम्
विपरीतम् शवमिव को न परिहरति
कमलदीर्घाक्ष, शिक्षाक्रमेस्मिन्नपरमप्यभिधीयसे – मा गाः स्त्रियाः श्रियो वा विश्वासम्,
अधिकमलवसतिरनार्यसंगता स्त्री श्रीश्च कं न प्रतारयति?

त्रिविक्रम–"नलचंपू"

मधुरता का सेवन करो। मधुरतायुक्त वाणी सफेद बैलों की पंक्ति की तरह मन को हर लेती है। विपरीतता को छोड़ो। विपरीत को मुर्दे की तरह कौन नहीं छोड़ता? हे कमल – जैसी बड़ी आँखों वाले, एक सीख तुम्हें और हम देते हैं–श्री पर विश्वास मत करो। अधिक मलिनता या कमल में रहने वाली श्री किसको वंचित नहीं करती?

In the Lotus-yantra, the progressive outward radiation of the lotus petals depicts the soul in the process of spiritual fulfilment. Just as there are eight major points of the compass in space, the traditional, mythical flower has eight petals. It is depicted in many *mandalas* and *yantras* as a symbol of cosmic harmony.

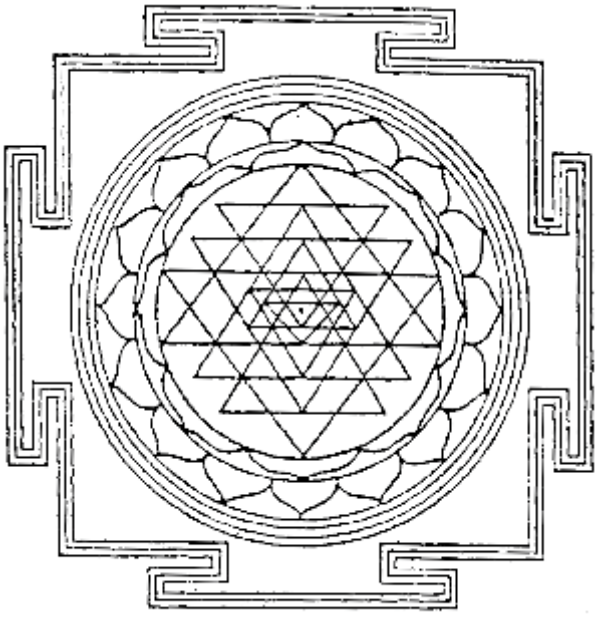

Sri Yantra

बिन्दु त्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मं मन्वस्त्रनागदलसंयुत षोडशारम्।
वृत्तत्रंय च धरणीसदनत्रयं च श्री चक्रराजमुदितं परदेवतायाः।।

—रूद्रयामल तंत्र

From the Buddhist point of view, the lotus upon which Shakyamuni sits enthroned - is the Buddha untouched by the polluted atmosphere of *Samsara*, the earthly attachments.

In every-day art of flower and wall decorations, the lotus motif finds a prominent place. It is known as *alpana* in Bengal, *aripana* in Bihar, *mandana* in Rajasthan, *osa* in Odisha and *kolam* in Tamil Nadu. Rice powder or paste is used to make stylised decorations based on the lotus design or concept.

ऋग्वेद में 29 ऋचाओं से युक्त वैदिक सूक्त में कमल की देवी को उसके दो नामों – श्री तथा लक्ष्मी से पूजित व वर्णित किया गया है। देवी लक्ष्मी का गुणगान–पद्मवर्णा, पद्मउरू, पद्माक्षी, पद्मिनी, पुषार्निनी तथा पद्ममालिनी आदि शब्दों द्वारा किया जाता है।

भारतीय साहित्य अपने उत्कृष्ट काव्यात्मक बिम्ब विधान तथा रूपकालंकारों की प्रचुरता के लिए जाना जाता है। कमल के विशिष्ट वर्णन व उपमाएं पुस्तकों को अलंकृत करती हैं।

कमल पर आधारित वर्णनात्मक शब्दों के अर्थभेदों को प्रदर्शित करते कुछ एकल उदाहरण निम्न प्रकार से हैं।

पद्मिनी – कमल की स्वामिनी;
पद्मवर्णा – कमल–समान रंग वाली;
पद्माक्षी – कमल–समान नेत्रों वाली;
पद्माननना – कमल–समान मुख वाली।

In traditional Indian homes, rangoli is used at the doorsteps, on the threshold and in the *puja* room (prayer chamber). Some rangoli designs have a symbolic meaning and incorporate some of the fundamentals of the sacred *yantras*. The idea behind the art of rangoli is to cleanse and prepare the doorstep to bring in well-being and prosperity by warding off evil spirits and welcoming divine and human beings into the home.

When using the lotus motif, the number of petals vary. There are 5,8,9,16,32 and even 1000-petalled lotus designs. Looking into the meaning of one such floor design, that of the eight-petalled lotus, reveals the representational significance of this popular art form. Each petal has a particular meaning. Three of them denote the ego, intellect and mind (three facets of man) while the remaining five denote the five elements—ether, air, water, earth and fire. They reflect the internal and external world, the physical and the metaphysical and thus depict the interaction of man with the elemental energies. Thus, even at the level of every day life, the auspicious lotus is continuously relevant.

Among the several kinds of flowers found in India only a few are of Indian origin, of these, there is mention of the Lotus—the National Flower in ancient Sanskrit scriptures of the Vedic times.

The great Indian epics *Ramayana* and *Mahabharata*. the *Vishnupurana* and the works of Kalidas and Bhasa are noted for their verses in praise of nature.

भज माधुर्यम्
धवलबलीवर्दपंक्तिरिव समाधुर्यधा वाणी मनोहरति।
वर्जय वैपरीत्यम्
विपरीतम् शवमिव को न परिहरति
कमलदीर्घाक्ष, शिक्षाक्रमेस्मिन्नपरमप्यभिधीयसे – मा गाः स्त्रियाः
श्रियो वा विश्वासम्,
अधिकमलवसतिरनार्यसंगता स्त्री श्रीश्च कं न प्रतारयति?

Trivikram - "Nalchampoo'"

In the Vedic hymn appended to the Rigveda which runs into twenty nine stanzas, the Lotus Goddess is celebrated and described by her two names Sri and Lakshmi. She is praised as lotus born *(padmasambhava)*, lotus thighed *(padmauru)*, lotus-eyed *(padmakshi),* abounding in lotuses *(padmini pusharnini)*, decked with lotus garlands *(padmamalini).*

Indian literature is known for its richness of metaphor and its exquisite poetic imagery. Descriptive epithets and similies of the lotus enrich the texts.

अजन्ता के प्रतिष्ठित भित्ति चित्रों में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर पद्मपाणि का विशिष्ट प्रस्तुतीकरण प्राप्त होता है। बोधिसत्व को रत्नजटित मुकुट धारण किए, सृजन के प्रतीक कमल पुष्प की देदीप्यमान कली थामे प्रस्तुत किया गया है।

बोधिसत्व अवलोकितेश्वर पद्मपाणि, अजन्ता

Some descriptive words related to the lotus are:

padmini - one possessed of the lotus;
padmavarna - lotus coloured;
padmakshi - lotus eyed;
padmanana - lotus faced.

In the frescoes of Ajanta, we come across an outstanding portrayal of the *Bodhisattva Avalokiteshvara Padmapani*. *Bodhisattva* wearing a bejewelled crown is shown holding a resplendent lotus bud symbolizing creation.

In the miniature paintings of Kangra, Basholi, Rajput and Mewar schools, delicate paintings made by the artists with their single haired brush show Krishna, Radha and *gopis* among abundant lotus blooms in their natural settings. Such scenes abound in a variety of natural habitats in India and can be seen even today.

Flowers have also adorned the hair of women through the ages as can be seen in ancient sculptures and paintings.

In Indian sculpture the lotus emerges as a predominant symbol. On the *torana* gates of the Sanchi *stupa*, built in the more elaborate *Mahayana* Buddhist style, the goddess Sri Lakshmi is seated on a fully open lotus flower, with lotus buds and blooms surrounding her. She holds a lotus, and there is a vessel filled with these flowers. It is significant to note that the lotus goddess and the lotus as symbol of fertility are abundantly used in Buddhist sculpture drawings on the earlier motifs of the sculptural tradition of the subcontinent. Later in the Gupta period, Vishnu *Anantshayana* shows Vishnu reclining on the serpent *Anantha* which has a perfect lotus bloom growing out of his navel. Another interesting example of the lotus used in sculpture is the lotus seat of Brahma, the creator - the very creator is supported by a lotus, seemingly that of Sri Lakshmi. However, in later sculptures, this lotus pedestal came to be used as a base for all gods and goddesses. The sculptor finds a close affinity to the lotus and uses it as a support for Shiva and Parvati, Ganesha and many other deities.

Indigenous artisans have left a mark of the earlier Indian tradition even as they erected Islamic structures adorned with calligraphy. In several monuments, carved lotus medallions are repeatedly found flanking arches. In the Taj Mahal at Agra and the tomb

कृष्ण–राधा, मेवाड़ शैली चित्रकृति

मेवाड़ शैली के लघुचित्रों में कलाकारों द्वारा एककेशी तूलिका से निर्मित सूक्ष्म एवं उत्कृष्ट चित्रकृतियों में कृष्णा, राधा व गोपियों को अनेकानेक खिले कमल पुष्पों के मध्य प्रदर्शित किया गया है। ऐसे दृश्य भारत के विविध प्राकृतिक स्थानों पर बहुतायत में प्राप्त होते हैं, जिन्हें आज भी देखा और अनुभव किया जा सकता है।

जैसा कि प्राचीन शिल्पकृतियों तथा चित्रकृतियों में देखा जा सकता है, पुष्प युगों से स्त्रियों की केशराशि को अलंकृत करते रहे हैं।

भारतीय शिल्पकला में, कमल पुष्प एक प्रधान प्रतीक के रूप में सामने आता है। अति अलंकृत महायान बौद्ध शैली में निर्मित, सांची स्तूप के तोरण द्वारों पर, देवी लक्ष्मी एक परिपूर्ण खिले कमल पुष्प के मध्य विराजमान हैं, तथा आसपास कमल पुष्प की कलियां व खिले हुए कमल पुष्प हैं। देवी लक्ष्मी ने हाथ में कमल पुष्प थामा हुआ है और पास में पुष्पों से भरा एक पात्र है। यहां यह जान लेना महत्त्वपूर्ण है कि उप–महाद्वीप की शिल्पात्मक परंपरा के प्राचीन अभिप्रायों में बौद्ध शिल्पकला तथा रेखाचित्र आदि में उर्वरता के प्रतीक कमल तथा कमल की देवी का विपुल प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् गुप्त काल में अनन्त सर्प पर शयन मुद्रा में अनन्तशायी विष्णु, भगवान विष्णु की नाभि से उद्भूत होते, परिष्कृत खिलते कमल पुष्प के नमूने प्राप्त होते हैं। शिल्पकला में, कमल पुष्प के प्रयोग का एक अन्य रूचिकर उदाहरण है– सृष्टि

of Safdarjung and several other Islamic buildings with domes, one sees an inverted lotus-like flower marking the pinnacle of the dome. Inner domes of tombs and mosques are also crowned with patterns of the spreading lotus. At the *Rang Mahal* in Delhi's Red Fort, an elaborate lotus in smooth marble forms the base of a fountain. In the mosques at Mandu and Ahmedabad and the buildings of the erstwhile capital Fatehpur Sikri, the lotus continues to exist in the delicate stone-traceries.

In the Koran, nature's gifts - gardens are the very essence of goodness and truth.

"Surely God shall let those, who believe and do righteous deeds enter gardens underneath which rivers flow.

(Koran, Sura 22:14)

These verses influenced Islamic artistic expressions and thus flowers were given religious and secular approval, and applied to intricate geometrical patterns that architects and artists had developed using Greek mathematics coupled with mystical philosophy.

Even in the contemporary period of our architecture, the house of worship of Bahai Faith in Delhi popularly known as the Lotus temple has been drawn from a common set of artistic and decorative idioms, as flowers and flower motifs continue to hold an important place throughout the world.

Lotus temple, Delhi - House of Worship of Bahai Faith

रचयिता ब्रह्मा का कमलासन, जो देवी श्री लक्ष्मी का है। हालाँकि उत्तरोत्तर शिल्पकला में उल्लिखित कमल पीठिका का सभी देवी–देवताओं के लिए आधार स्वरूप प्रयोग किया गया है। शिल्पकार कमल पुष्प के प्रति निकट सादृश्य प्राप्त करता है और शिव – पार्वती, गणेश तथा अन्य देवी–देवताओं के लिए पीठिका स्वरूप कमल का प्रयोग करता है।

सुलेखों से अलंकृत इस्लामी इमारतों का निर्माण करते समय भी देशी कारीगरों ने प्राचीन भारतीय परंपरा के स्मृति चिह्न रख छोड़े हैं। अनेक स्मारकों में, पार्श्विक मेहराबों पर, कमलाकार तक्षित फलक बारंबार दिखाई देते हैं। आगरा स्थित ताजमहल और सफदरजंग के मकबरे तथा गुम्बदयुक्त अन्य अनेकानेक इस्लामी इमारतों पर हमें गुम्बद के शीर्ष पर औंधे कमल पुष्प के समान नमूने प्राप्त होते है। मक़बरों तथा मस्ज़िदों के आंतरिक गुम्बद भी खिले हुए कमल पुष्प के नूमनों से अलंकृत हैं। दिल्ली के लाल किले में स्थित रंग महल मे चिकने संगमरमर से निर्मित विस्तारित कमल एक फव्वारे का आधार स्वरूप है। मांडू तथा अहमदाबाद के मक़बरों और तत्कालीन राजधानी फतेहपुर सीकरी की इमारतों में, नाजुक, सूक्ष्म पाषाण नक्काशियों में कमल पुष्प सर्वत्र विद्यमान है।

कुरान में प्रकृति की अनुपम देन स्वरूप – उद्यानों को अच्छाई और सच्चाई का सार बताया गया है।

"जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये, उनको अल्लाह जन्नत के बाग़ो में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।"

(कुरान : सूरा 22:14)

कुरान की इन आयतों ने इस्लामी कलात्मक अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त क़िया और इस प्रकार पुष्पों को एक धार्मिक तथा पवित्र स्वीकृति प्राप्त हुई। वास्तुविदों और कलाकारों ने रहस्यात्मक दर्शन सहित यूनानी गणितशास्त्र का प्रयोग करते हुए अपने जटिल ज्यामितीय नमूनों में पुष्प परिकल्पनाओं का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

यहां तक कि हमारी वास्तुकला के अद्यतन काल में भी दिल्ली स्थित बहाई धर्म के पूजा–स्थल 'लोटस टेम्पल' की वास्तुकला के स्वरूप को भी कलात्मकता तथा आलंकारिकता की प्रचलित पद्धति से ही प्रेरणा प्राप्त है, क्योंकि पुष्प एवं पुष्प – अभिप्राय सदा से ही विश्व में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं।

कल्याण का आह्वान करने के अतिरिक्त कमल पुष्प अनुराग, पवित्रता, सांसारिक सौन्दर्य तथा आंतरिक प्रेम का प्रतीक है।

इण्डो–इस्लामी काल के दौरान भारत में नवीन तथा विदेशी प्रभावों का आविर्भाव हुआ। पुष्प तथा पुष्प युक्त ज्यामितीय परिकल्पनाएं इस्लामी वास्तुकला का एक प्रमुख अभिप्राय हैं और गचकारी से लेकर रत्नपत्थर पच्चीकारी तक, प्रत्येक आलंकारिक माध्यम में इनका प्रयोग किया गया है। इस्लामी सभ्यता के प्रमाण चिह्न के रूप में जटिल प्रतीकात्मक पुष्प के नमूनों अथवा अरबस्क के विकास हेतु प्रेरक शक्ति कुरान से प्राप्त हुई है।

The Lotus flower, besides evoking a state of well being, is a symbol of purity, sublime beauty and spiritual love.

During the Indo-Islamic period, new and alien influences were brought into India. Flowers and floral geometric designs are a major motif in Islamic architecture and are executed in every decorative architectural medium - from stucco to gemstone mosaic. The impetus for the development of intricate non figurative floral patterns or arabesque which were to become the hallmark of Islamic civilization, came from the Koran.

Lotus-shaped fountain made of marble, Rani Mahal, Red Fort, Delhi

भारत में शास्त्रीय तथा लोक नृत्य परंपराओं की समृद्ध विविधता है। लय, मनोहारी गतियां तथा हस्त मुद्राओं सहित संवेदी भाव नृत्य के व्याख्यात्मक पक्ष में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शब्दों तथा विचारों को प्रस्तुत करने हेतु नर्तक के हाथ एक विस्तारित प्रतीक की भूमिका निभाते हैं। कमल पुष्प की अपनी एक मुद्रा होती है। पद्मकोश कमल की कलियों को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करती और अला पद्म पूर्ण रूप से खिले कमल को प्रस्तुत करती मुद्रा है। अला पद्म मुद्रा में नर्तक धीरे–धीरे स्पंदित उंगलियों से कमल पुष्प के खिलने की मुद्रा प्रस्तुत करता है।

कमल की कली की सूर्य विकासी अथवा विकासी मुद्रा और सूर्योदय अथवा चन्द्रोदय ने भी कवियों को सुन्दर कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। भारतीय संगीत में भी, गीत आदि में एक सामान्य विशेषण के रूप में कमल पुष्प का प्रचुर प्रयोग किया जाता है।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

जिसकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनाग की शय्या पर शयन किए हुए है, जिसकी नाभि में कमल है, जो देवताओं का भी ईश्वर और सम्पूर्ण जगत् का आधार है, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त है, नीलमेघ के समान जिसका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिसके सम्पूर्ण अंग हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किया जाता है, जो सम्पूर्ण लोकों का स्वामी है, जो जन्म मरण रूप भय का नाश करने वाला है, ऐसे श्री लक्ष्मीपति कमलनेत्र भगवान् विष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ।

योग की प्राचीन परंपरा में, शरीर को आत्मिक उद्बोधन प्राप्ति हेतु तैयार किया जाता है। इस प्रक्रिया में शारीरिक शक्तियों का प्रयोग किया जाता है और उन्हें निर्देश दिए जाते हैं। साधक (शिष्य) पद्मासन (कमल) की मुद्रा में बैठता है। उसके पैर मुड़े हुए, हथेली ऊपर की ओर, हाथ गोद पर रखे हुए, नेत्र नाक के कोने पर संकेन्द्रित, शरीर सीधा, और श्वास नियंत्रित होती है। इस मुद्रा द्वारा साधक भौतिक योग के माध्यम से अपने को ऊँचा उठाता एवं स्वयं को आत्मानुभूति के लिए तैयार करता है।

कमल का संदर्भ अनेक लोकप्रिय भारतीय नामों में भी विद्यमान है। कमला, कमलिका, कमलिनी, कमलाक्षी, पद्मा, पद्मलोचनी तथा पद्मावती – कमल पुष्प से ग्रहण किए गए अनेक नामों में से कुछ नाम हैं।

उत्कृष्ट दर्शनीय सुन्दरता और दार्शनिक विचारों में उसे असंख्य अर्थ; सभी कलात्मक अभिव्यक्तियों में मनुष्यों द्वारा उसकी पुननिर्मिति को देखते हुए कमल पुष्प को भारत के राष्ट्रीय पुष्प का दर्ज़ा ठीक ही प्रदान किया गया है।

India has a rich variety of classical and folk dance traditions. Rhythm, graceful body movements and sensitive expressions together with *hasta-mudras* (hand gestures) play an important role in the interpretative aspect of dance. The dancers' hands form elaborate symbols representing words and ideas. The lotus has its own *mudra* (hand gestures.) The *padmakosa* is a *mudra* that depicts the lotus bud and the *ala padma*, the full bloom lotus. With gently quivering fingers the dancer celebrates the blooming of the lotus.

The *Surya Vikasi* or *Chandra Vikasi* - opening of the lotus bud at sunrise or moonrise has also inspired poets to write beautiful verses. In Indian music too the lotus is a common epithet used in song.

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

In the ancient tradition of yoga, the body is prepared to achieve spiritual awakening. In this process the energies of the body are harnessed and directed. The *sadhaka* (disciple) sits in the *padmasana* (the lotus posture) with legs crossed, the soles of the feet facing upwards, hand placed on the lap with palm facing upwards, eyes concentrated on the tip of the nose, body erect and breath controlled He prepares himself thus for the moment of self-realization when he will transcend the physical.

The lotus image also lives on in popular Indian names. *Kamala, Kamalika, Kamalini, Kamalakshi, Padma, Padmalochani and Padmavati* are a few of the many names derived from the lotus.

The exquisite beauty of the flower and its numerous connotations in philosophical thoughts; its recreation by men in all artistic expressions have rightly given the Lotus the status of the National Flower of India.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

प्रादेशिक भाषाओं में कमल पुष्प हेतु प्रयुक्त विभिन्न नामों का संग्रह कीजिए।

विविध संस्कृतियों में कमल पुष्प के संदर्भो को एकत्रित कीजिए।

कमल पुष्प की कला रचना में प्रस्तुति से संबंधित चित्र एकत्रित कीजिए–

- शिल्पकला
- वास्तुकला
- चित्रकला
- हस्तशिल्प/वस्त्रशिल्प

भारतीय साहित्य में कमल पुष्प से संबंधित दोहों और अन्य संदर्भो का संग्रह कीजिए।

कमल पुष्प के प्रतीकात्मक अर्थ तथा मूर्ति विज्ञान में प्रयुक्त अन्य प्रतीकों का अर्थ जानने हेतु कलाकारों अथवा शिल्पकारों का साक्षात्कार कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Collect different names in regional languages for Lotus.

Collect reference of Lotus in various cultures.

Collect pictures of representation of Lotus in works of art in

- sculpture
- architecture
- paintings
- handicrafts and textiles

Collect couplets and other references in Indian literature about Lotus.

Interview an artist or *sthapathy* to understand the symbolic meaning of Lotus and other iconography.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

Acknowledgements

Dr. Sumati Mutatkar

Dr. B. N. Goswamy

References

Agrawal, V.S., (1964), "The Wheel Flag of India", (Chakra-Dhvaja), Varanasi.

Bash, Santona, "The Lotus in the Cosmology of the Vedas", Vishveshvaranand Indological Journal, Vol. IV.

Beal, Samuel, (1869), Trans. "Travels of Fa-hian and Sung-yun, Buddhist Pilgrims from China to India", London.

Gupta, R.S., (1972, " Iconography of the Hindus, Buddhists and Jains", Bombay.

Havell, E.B., (1927), "A Handbook of Indian Art", London.

Jobes, Gertrude, "Dictionary of Mythology, Folklore and Symbols."

Majumdar, R.C., (1960), : The Classical Accounts of India", Kolkata.

Zimmer, Heinrich, (1967) "The Symbolism in Indian Art", London.

Photo Credits

National Museum

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय कैलेण्डर

National Calendar

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय कैलेण्डर

NATIONAL CALENDAR

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की है। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

कैलेण्डर

प्रयोग में लाए गए कैलेण्डर द्वारा हम पुराने समय के लोगों के सांस्कृतिक स्तरों को जान पाते हैं। कैलेण्डर के स्वरूप तथा विकास में हमें एक व्यापक प्रशासनिक तथा सैन्य, राज्य मशीनरी, वस्तु–उत्पादन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, एक उच्च बुद्धिजीवी वर्ग तथा उच्च आध्यत्मिक रूचियों सहित संगठित समाज के नक्षत्र सम्बन्धी प्राप्त जानकारियां तथा गणितीय समाधानों का साक्ष्य भी प्राप्त होता है। अतः पंचांग के विकास से न केवल प्राचीन ज्योतिष विद्या का इतिहास, वरन् सामान्य रूप से सभ्यता भी प्रतिबिम्बित होती है।

समय को मापने का आधार दिन है। यह पृथ्वी के अपनी धुरी के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने की अवधि है। प्राचीन समय में दिन की अवधि को निर्धारित करना विशेष रूप से कठिन था। सौर दिवस अथवा दो निंरतर क्षणों के बीच का अंतराल जिनमें से प्रत्येक में लम्बवत् या सीधी छड़ की छाया अपनी न्यूनतम लम्बाई तक सिकुड़ जाती है, पृथ्वी द्वारा वास्तव में अपनी धुरी के आसपास का एक चक्कर पूरा करने की अवधि से थोड़ा–सा लम्बा होता है। यानी, सौर दिवस वास्तविक दिन या नक्षत्र दिवस से थोड़ा – सा लम्बा होता है। हम भली भांति समझ सकते हैं कि वर्षो की अवधि में इस असंगति का पता न लगाया जाता और इसकी गणना न होती तो इसका उल्टा प्रभाव पंचांग पर पड़ता, इससे पंचांग (कैलेण्डर) में समय आगे बढ़ जाता और कैलेण्डर में एक वर्ष का समय अपनी ऋतृ व मौसम संबंधी विशेषताओं को पीछे छोड़ देता।

युगों से मनुष्य समय को मापने के लिए विविध प्रणालियों का उपयोग करता आया है। प्राचीन काल में, हिन्दू विद्वानों ने भारत में युगों, मन्वन्तरों तथा कल्पों से युक्त समय का एक चक्रीय सिद्धान्त विकसित किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्माण्ड आदि व अंत के बिना, अभिव्यक्ति तथा विघटन की पुनः घटित होने वाली अवस्थाओं के आधार पर गतिमान है। समय को मापने हेतु चार युग माने गए हैं। प्रथम क्रेता, दूसरा त्रेता, तीसरा द्वापर, और चौथा कलि कहलाता है। प्रत्येक युग सद्गुण, नैतिकता, प्रसन्नता और दीर्घायु के उत्तरोत्तर पतन को प्रस्तुत करता है। क्रेता–स्वर्ण, त्रेता–रजत, द्वापर–ताम्र और कलि–लौह युग है। ये चारों युग समग्रतः करोड़ों सांसारिक वर्षो के महायुग को बनाते है। प्रति हज़ार महायुग मिलकर एक 'कल्प' बनाते हैं, जिसे ब्रह्मा के अस्तित्व का एक दिन माना जाता है। प्रत्येक कल्प में चौदह (14) मन्वन्तर अथवा गौण चक्र होते है। प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में संसार की पुनर्रचना की जाती है। हम जानते हैं कि समय का प्रवाह अनेक प्राकृतिक गतिविधियों में चक्रीय होता है, उदाहरणार्थ,

(1) दिन और रात के सदा–आवर्तित परिवर्तन

(2) चंद्रमा की विभिन्न अवस्थाओं (कलाओं) के पुनरावर्तन, तथा

(3) विविध मौसमों के पुनरावर्तन

ये पुनरावर्ती गतिविधियां 'समय' के माप को बतलाती हैं।

CALENDAR

We judge the cultural standards of the ancient people by the calendar they used. In the appearance and development of the calendar, we find evidence of a mass of astronomical observations and mathematical solution, of an organised society, with its comprehensive administrative and military state machinery, commodity production, international trade, a higher intelligentsia and higher spiritual interests. So the development of the calendar not only reflects the history of ancient astronomy but also ancient civilization in general.

The basic unit in measuring time is the day. It is the period of a full revolution of the earth round its axis. In ancient times, the determination of the duration of one day was particularly difficult. The solar day, or the interval of time between two consecutive moments in each of which the shadow of a vertical rod shrinks to its minimum length, is slightly longer than the period of time in which the Earth actually makes a full revolution round its axis. In other words, the solar day is slightly longer than the actual or sidereal day. We can understand how this discrepancy could, in the course of years, affect the calendar unless it was detected and computed, the calendar would gain time and the time of year in the calendar would lag behind its initial seasonal and climatic characteristics.

Time was measured in many ways by people in the history of mankind. The thinkers in ancient India had evolved a cyclic concept of time made up of *yugas. manvantaras* and *kalpas.* The universe is without beginning and without end going on recurrent phase of manifestation and dissolution. There are four *yugas* or ages for measuring time. The first *yuga* called *Kraita* is followed by *Treta, Dvapara* and *Kali* respectively. Each *Yuga* or age represents a progressive decline in virtue, morality, happiness and longevity. The *Kraita* is the golden, the *Treta* the silver, the *Dvapara* the copper and the *Kali* the iron age. The four *yugas* constitute the *Mahayuga* of millions of earthly years. Each thousand *Mahayugas* making a *'Kalpa'* which is said to be equivalent to one day of Brahma's existence. Within each *'Kalpa',* there are fourteen (14) *'manvantaras'* or secondary cycles. At the end of each *manvantaras* the world is recreated. We are aware that the flux of time is cyclic in several natural phenomena, for instance,

(i) by the ever-recurring alternation of day and night

(ii) by the recurrence of different phases of the moon

(iii) by the recurrence of various seasons

These recurring phenomenons record the measuring of 'time'.

समय को मापना, मानव के इतिहास का एक अत्यंत मोहक और रूचिकर विषय रहा है। समय को मापने से संबंधित कुछ प्रथम आविष्कार अथवा यंत्र थे–शंकु, सूर्य घड़ी, प्राचीन मिस्र, चीन अथवा रोमन साम्राज्य में इस्तेमाल की जाने वाली जल घड़ियां तथा उसके पश्चात् प्रयोग किए जाने वाले 'डूबते कटोरे' (सिंकिंग बाउल्स)। प्रख्यात गणितज्ञ व खगोलशास्त्री भास्कराचार्य ने गणित पर 'लीलावती' नामक एक पुस्तक लिखी थी। इसमें एक समय मापने के यंत्र का भी जिक्र है, जो उस समय लोकप्रिय था, पर आज भी हमें कुछेक धार्मिक अनुष्ठानों में समय को निर्धारित करने के लिए उपरोक्त यंत्र का प्रयोग किए जाने के कुछ संदर्भ मिलते हैं।

सामाजिक जीवन के आरंभ के पश्चात् मौसमी ऋतु–स्थितियों पर निर्भर खेती – बाड़ी ने धार्मिक त्यौहारों को जन्म दिया। समय से पहले ही लोगों को यह जानने की उत्सुकता रहती थी कि नया चंद्रमा (पूर्ण चन्द्र) कब होगा। दैनंदिन जीवन, धार्मिक रीति–रिवाजों के नियमन तथा ऐतिहासिक व वैज्ञानिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दिनों को समूहीकृत करने का एक माध्यम है– 'कैलेण्डर'। यह शब्द केलैण्डरियम नामक लैटिन शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ रूचिकर पंजी अथवा लेखा पुस्तक है, जो रोमन माह के प्रथम दिन, कैलेण्डे या कालेण्डे से उत्पन्न है अर्थात् वह दिवस, जिस दिन आगामी बाज़ार दिवस, दावतें और अन्य सुअवसर घोषित किए गए थे।

आइए, अब सर्वश्रेष्ठ प्राचीन कैलेण्डर के रूप में मिस्र के कैलेण्डर के हमारे आधुनिक कैलेण्डर का आधार बनने की प्रक्रिया पर विचार करें, जिसका कि आज अधिकांश देशों में प्रयोग किया जा रहा है। मिस्र का कैलेण्डर, इन सभी आवश्यकताओं के आधार पर तैयार किए जाने वाला प्रथम क्रियात्मक कैलेण्डर था। अमेरिकी पुरातत्वविद् जेम्स हेनरी ब्रेस्टेड (1865–1935) के अनुसार यह 4236 ईसा पू. में स्वीकृत सर्वप्रथम क्रियात्मक रूप से सुविधाजनक कैलेण्डर था। यह मनुष्य के बौद्धिक इतिहास की सबसे पुरानी तारीख है। तत्पश्चात् रोमन निवासियों ने इसे जूलियन कैलेण्डर के रूप में विकसित किया, जो 1,500 वर्षो से भी अधिक समय तक पश्चिम यूरोप में लाया गया। इसके पश्चात् सोलहवीं शताब्दी के उत्तर भाग (1582 ई.) में पोप ग्रेगोरी तेरह द्वारा किए गए सुधारों और उसके योगदान के लिए जाना जाने वाला ग्रेगोरियन कैलेण्डर विकसित हुआ। इस कैलेण्डर को अब लगभग सर्वत्र ही अपनाया जा चुका है, क्योंकि यह सूर्य की गति द्वारा निर्धारित मौसमी या ऋतुनिष्ठ गतिविधियों और चंद्रमा की कलाओं पर आधारित धार्मिक त्यौहारों की तारीखें निर्धारित करने की एक प्रणाली को एक संभावित संतोषजनक स्तर तक प्रस्तुत करता है। ऐसी कैलेण्डर प्रणाली मिश्रित होती है, चूँकि उसमें चंद्रमा की कलाएं और सूर्य की गति असंगत हैं, पर उसको लागू करने के लिए तुलनात्मक रूप से सरल नियमों और दिनों के चक्रों को अपना करके यह कैलेण्डर आधे मिनट से भी कम अवधि की त्रुटि सहित एक वर्ष को प्रस्तुत करता है। हालांकि विश्व के अनेक भागों में, चांद्र प्रणाली पर आधारित प्रणाली व्यापक स्तर पर स्वीकृत है, क्योंकि वह दिनों तथा महीनों का सही विवरण देती है।

The measuring of time also has been a very fascinating and interesting subject in the history of mankind. Some of the first inventions or devices for measurement of time were gnomon, the sundial, the 'water clocks' or clepsydrae (an instrument used for measuring time by the flow of water) used in ancient Egypt, China or the Roman Empire followed by 'The Sinking Bowls'. Bhaskaracharya, the celebrated mathematician and astronomer wrote a book on arithmatic, entitled 'Lilavati'. The narration also refers to a time - measuring device that was in vogue but even now, there are isolated cases of its employment for determining the time of certain rituals.

The beginning of organised social life and agricultural practices depending on seasonal weather conditions, gave birth to religious festivals. People wanted to know in advance when to expect the new moon or full moon. A calendar is a means of grouping days for regulating civic life, religious observances, historical and scientific purpose. The word "calendar" is derived from the Latin *calendarium* meaning interesting register or account book, itself a derivation from *calendae* (or kalendae), the first day of Roman month, the day on which future market days, feasts and other occasions were proclaimed.

Let us consider how the best known ancient calendar, the Egyptian one, came to be the basis of our modern calendar, now in use in most countries of our planet. The first practical calendar to evolve from these requirements was the Egyptian. According to American archaeologist, James Henry Breasted (1865-1935), it was a practically convenient calendar adopted in 4236 B.C.E, the earliest dated record in the intellectual history of mankind. The Romans then developed it into the Julian Calendar which was used in western Europe for more then 1,500 years. The Gregorian Calendar, known for the contribution and reforms by Pope Gregory XIII in the later part of the sixteenth century (1582 C.E.), was a further improvement and is now almost universally adopted. Such a calendar system is complex, since the periods of the Moon's phases and the Sun's motion are incompatible, but by adopting cycles of days and comparatively simple rules for their application, the calendar provides an year with an error of less than half a minute. However in many parts of the world and in India, the calendar based on a lunar system is widely accepted as it gives an accurate account of the days and months.

India's National Calendar - Saka Era

It is commonly believed that Saka Era began in 78 C.E. with the coronation of Kanishka.

Prof. M.N. Saha suggests that the year of King Kanishka is year 201 of the old Saka. If this suggestion be correct, since the old Saka era is taken to have started in 123 B.C.E instead of 129 B.C.E, as also postulated by L.de Leeun, Kanishka started reigning in 201 minus 123, that is, in 78 C.E.

भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर – शक संवत्

ऐसा माना जाता है कि कनिष्क के राज्यभिषेक के साथ ही 78 ई. में शक संवत् आंरभ हुआ।

प्रो. एम. एन साहा ने सुझाव दिया कि राजा कनिष्क का 1 वर्ष प्राचीन शक का 201वां वर्ष है। यह सुझाव सही भी हो सकता है, चूंकि ऐसा माना जाता है कि प्राचीन शक संवत् 129 ईसा पू. के बजाय 123 ईसा पूर्व में आरंभ हुआ था। एल. डी. लीउन की भी यही अभिधारणा थी, क्योंकि कनिष्क ने 78 ई. अर्थात 201 घटा 123 में राज्य करना आरंभ किया था।

अभिलेखात्मक विवरण और समकालीन इतिहास में उल्लेख किया गया है कि सात वर्ष की लंबी लड़ाई के बाद पार्थीय शासकों से बैक्ट्रिया जीतने के पश्चात् हूणों के दबाव के कारण जब शक शासक मध्य एशिया से आए, तब 123 ईसा पू. में शक संवत् आंरभ हुआ। इस संवत् को शकों के एक नेता 'एज़स' के नाम के आधार पर शायद 'एज़स' भी कहा जाता है। जब शकों ने 'शकस्थान' छोड़ा, यानि आधुनिक अफ़गानिस्तान से भारत आए, तो वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित हुए। वे मूलतः अपने सिक्कों पर यूनानी भाषा का प्रयोग करते थे, पर बाद में उन्होंने खरोष्ठी और ब्राह्मी का भी प्रयोग करना आरंभ कर दिया। उन्होंने भारतीय महीनों का भी प्रयोग करना आरंभ किया। 78 ई. से आंरभ होने वाला प्राचीन शक संवत् और कुछ नहीं, 200 घटा 123 ईसा पू. से आरंभ होने वाला प्रचीन शक संवत् ही है, ताकि कनिष्क का 1 वर्ष प्राचीन शक संवत् का 201 वर्ष हो।

शक संवत् को शक काल, शक भूप काल, शकेउद्र काल, सालिवाहन शक और संवत् भी कहा जाता है। चन्द्र – सौर गणना के लिए इसके वर्ष चैत्रादि और सौर गणना के लिए मेषादि हैं।

खगोल विज्ञानी वराहमिहिर (मृत्यु 587 ई.) के समय से और शायद उसके भी पहले से भारत भर में भारतीय ज्योतिषियों द्वारा प्रयुक्त सम श्रेष्ठ संवत् शक संवत् है। भारतीय पंचांग निर्माता, अब भी गणनाओं के लिए शक संवत् का ही प्रयोग करते हैं और फिर गणनाओं को अपनी प्रणाली में परिवर्तित करते हैं।

मासिक चंद्र चक्र में नक्षत्रों के नामों के अनुरूप तिथियां और वार्षिक सौर कैलेण्डर में मासों के खण्ड उस समय क्षितिज में नक्षत्रों की स्थिति से लिए गए हैं, और वे यथावत् हैं। महीनों के नाम बदल अवश्य गए हैंः चैत्र (मार्च–अप्रैल), वैशाख (अप्रैल–मई), ज्येष्ठ (मई–जून) .....

भारत ने पश्चिम से सात दिन के सप्ताह की प्रक्रिया को भी अपनाया है और सप्ताह के सात दिनों के नाम भी अनुरूप ग्रहों के अनुसार रखे हैंः सूर्य के आधार पर रविवार; चंद्रमा के आधार पर सोमवार; मंगल के आधार पर मंगलवार; बुध के आधार पर बुधवार; बृहस्पति के आधार पर बृहस्पतिवार; शुक्र के आधार पर शुक्रवार; तथा शान्ति के आधार पर शनिवार।

भारत के सुदीर्घ इतिहास में अनेक युगों तथा प्रणालियों का अनुसरण किया गया।

Scythian head, Kushana dynasty, 2nd century C.E., Mathura

The inscriptional records and contemporary history mentions that Saka Era started in 123 B.C.E when Saka Kings came from Central Asia, because of the pressure of Huns who conquered Bactria from the Parthian emperors after a long battle of seven years. This Era was also referred the 'Azes' Era named after probably one 'Azes', the leader of Sakas. When the Sakas spread from 'Sakasthan' the present modern Afghanistan into India, they began to be influenced by Indian culture. Initially using Greek in their coins, later, they started to use *Kharosthi* and *Brahmi* as well. They also began to use Indian months. The classical Saka Era starting from 78 C.E. is nothing but the old Saka Era starting from 123 B.C.E with 200 omitted, so that the year 1 of Kanishka is year 201 of the old Saka Era.

The Saka Era is also called Saka Kala, Saka Bhupa Kala, Sakeudra Kala, Salivahana Saka and also Saka Samvat. Its years are *Chaitradi* for luni-solar reckoning and *Mesadi* for solar reckoning.

The Saka Era is the Era par excellence which has been used by Indian astronomers all over India in their calculations since the time of the astronomer Varahamihir (died 587 C.E.) or probably earlier. The Indian almanac makers, even now, use the Saka Era for calculations and then convert the calculations to their own system.

The names of the *nakshatras* to which correspond the *tithis* in the monthly lunar cycle and segments of months in the annual solar calendar, are derived from the constellations in the horizon at that time and have remained the same. The names of the months have changed: *Chaitra* (March-April), *Vaisakha* (April-May), *Jyaistha* (May-June)-----

भारतीय गणतंत्र ने अपने दैनंदिन लौकिक जीवन में प्रयुक्त किए जाने वाले के लिए ग्रेगोरियन कैलेण्डर को अपनाया। जैसे, अनेक धार्मिक समूहों के अपने कैलेण्डर थे, वैसे ही हिन्दू धार्मिक जीवन का नियमन परंपरागत कैलेण्डर द्वारा हो रहा है। परंपरागत हिन्दु कैलेण्डर को पंचांग कहते हैं, पंच अर्थात् पाँच और अंग अर्थात् पहलू। इसमें पाँच पहलू निहित हैं, यथा–दिन या सौर दिवस, तिथि अथवा चंद्र दिवस, नक्षत्र अथवा तारामंडल, योग और करण।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ऐसा प्रतीत हुआ कि तिथियों और नक्षत्रों की भ्रान्तिजनक गणना उलझन उत्पन्न कर रही है। देश के विभिन्न भागों में समरूप (एक–सी) छुट्टियां निर्धारित करने के लिए 30 विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग किया जाता था और बारंबार एक ही शहर में पंचांग निर्मित करने वाले दो प्रतिद्वन्दी समूहों ने एक ही त्यौहार के लिए भिन्न–भिन्न तारीखें निर्धारित कर दी थीं।

भारत सरकार द्वारा नवंबर, 1952 में प्रो. एम. एन. साहा की अध्यक्षता में एक कैलेण्डर सुधार समिति नियुक्त की गई, जिसमें निम्नलिखित विषय विचारार्थ प्रस्तुत किए गए:

"वर्तमान में देश में अपनाए गए सभी प्रचलित कैलेण्डरों की जांच करना, संबंधित विषय के वैज्ञानिक अध्ययन के पश्चात्, संपूर्ण भारत के लिए एक परिशुद्ध व एकरूप कैलेण्डर बनाने हेतु प्रस्तावों को प्रस्तुत करना।"

वैज्ञानिक अध्ययन के पश्चात्, कैलेण्डर सुधार समिति ने संकेत दिया कि सांसारिक व प्रशासनिक उद्देश्यों हेतु विश्व भर में प्रयुक्त ग्रेगोरियन कैलेण्डर, एक अत्यंत अवैज्ञानिक तथा असुविधाजनक कैलेण्डर है। न्यूयॉर्क के विश्व कैलेण्डर संघ द्वारा प्रस्तावित विश्व कैलेण्डर का परीक्षण करने के पश्चात् उसे आधुनिक जीवन के उपयुक्त पाया गया। इस मामले को भारत सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

ग्रेगेरियन कैलेण्डर के स्थान पर विश्व कैलेण्डर का प्रयोग एक विश्व स्तरीय मुद्दा है, जिसे संयुक्त संघ के निर्णय की प्रतीक्षा है।

कैलेण्डर सुधार समिति ने 1955 में भारत सरकार के समक्ष अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और समिति की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए सरकार ने निश्चय किया कि 21 मार्च, सन् 1956 ईसवी अर्थात् 1 चैत्र 1878 शक से एकीकृत 'राष्ट्रीय कैलेण्डर' (शक संवत्) को प्रयोग हेतु अपनाया जाय।

India also adopted the seven day week *saptaha* from the west and named the days after the corresponding planets: Sunday after the Sun, *ravivar*, Monday after the Moon, *somvar*, Tuesday after Mars, *mangalavar,* Wednesday after Mercury, *budhvar,* Thursday after Jupiter, *brihaspativar,* Friday after Venus, *shukarvar,* and Saturday after Saturn, *Shanivar.*

In the course of India's long history many Eras and systems were followed.

While the Republic of India has adopted the Gregorian Calendar for its secular life, many religious groups had their own calendar, for example, Hindu religious life continues to be governed by the traditional calendar. The traditional Indian Calendar is called Panchanga, *Pancha* is five and *ang* is aspect. It takes into five aspects namely *Din* or the solar day, *Tithi* or the lunar day, *Nakshatra* or the constellation lunar asterisms, *Yoga* and *Karan*.

After gaining independence, it was observed that erroneous calculations of *tithis* and *nakshatras* were creating confusion. In India, more than 30 different systems were being used for fixing up a religious festival in different parts of the country and frequently, two rival schools of Panchanga makers in the same city fix up different dates for the same festival.

The Calendar Reform Committee under the Chairmanship of Prof. M.N. Saha was appointed in November, 1952 by the Government of India with the following terms of reference:

'To examine all the existing calendars which are being followed in the country at present and after a scientific study of the subject, submit proposals for an accurate and uniform calendar for the whole of India".

After conducting a scientific study, it was pointed out by the Calendar Reform Committee that the Gregorian Calendar which is used all over the world for civil and administrative purposes, is a very unscientific and inconvenient one. The World Calendar proposed by the World Calendar Association of New York, has been examined and found suitable for modern life. The matter was put up by the Indian Government before the United Nations Organisation.

The introduction of the World Calendar in place of the Gregorian is a matter for the whole world, which has now to look to U.N. O for a decision.

The Calendar Reform Committee submitted its report to the Government of India in 1955 and the Government decided, while accepting the recommendations of the Committee that a unified 'National Calendar' (the Saka Calendar) be adopted for use with effect from 21 March, 1956 C.E. i.e. 1 Chaitra 1878 Saka.

पंडित जवाहरलाल नेहरू का कैलेण्डर सुधार समिति को भेजे गए संदेश का अनुवाद

मुझे प्रसन्नता है कि कैलेण्डर सुधार समिति ने अपना काम करना आंरभ कर दिया है। भारत सरकार ने इस समिति को देश में प्रयोग में लाए जाने वाले विभिन्न कैलेण्डरों का परीक्षण और समस्त भारत के लिए एक परिशुद्ध तथा एकरूप कैलेण्डर प्रदान करने के लिए सरकार के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत करने का कार्य सुपुर्द किया है। मुझे बताया गया है कि हमारे पास वर्तमान में समय गणना पद्धतियों सहित विविध रूपों में एक दूसरे से भिन्नता लिए तीस विभिन्न कैलेण्डर हैं। ये कैलेण्डर हमारे पिछले राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का एक सहज परिणाम है। और वे एक प्रकार से देश में पिछले समय में हुए राजनैतिक विभाजन को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। अब जबकि हमने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, यह स्वाभाविक ही है कि नागरिक, सामाजिक और अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कैलेण्डर में कुछ–न–कुछ एकरूपता अवश्य होनी चाहिए, जो इस समस्या के प्रति एक वैज्ञानिक अभिगम पर आधारित होनी चाहिए।

यह सच है कि सरकारी और अन्य अनेक सार्वजनिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम विश्व के अधिकांश भागों में प्रयुक्त ग्रेगोरियन कैलेण्डर का प्रयोग करते हैं। इस कैलेण्डर का बड़े पैमाने पर प्रयोग ही इसे एक प्रकार से महत्वपूर्ण बनाता है। इसमें अनेक गुण होने पर भी कुछ ऐसी कमियां हैं, जो इसे विश्व व्यापक स्तर पर प्रयोग हेतु अनुपयुक्त सिद्ध करती हैं।

जिस कैलेण्डर का प्रयोग करने के लोग अभ्यस्त हों, उसे बदलना हमेशा ही कठिन होता है, क्योंकि इस प्रकार के परिवर्तनों का सामाजिक रिवाजों पर प्रभाव पड़ता है। पर चाहे पूर्णताः अपेक्षानुसार परिवर्तन न हो पाएं, फिर भी इस दिशा में प्रयास आवश्यक है। किसी भी स्थिति में, भारत में हमारे अपने कैलेण्डरों से संबंधित जो वर्तमान भ्रान्ति है, उसे दूर किया जाना चाहिए।

मुझे आशा है कि हमारे वैज्ञानिक इस संबंध में उचित मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

नई दिल्ली
18 फरवरी, 1953

सत्यमेव जयते

MESSAGE.

I am glad that the Calendar Reform Committee has started its labours. The Government of India has entrusted to it the work of examining the different calendars followed in this country and to submit proposals to the Government for an accurate and uniform calendar based on a scientific study for the whole of India. I am told that we have at present thirty different calendars, differing from each other in various ways, including the methods of time reckoning. These calendars are the natural result of our past political and cultural history and partly represent past political divisions in the country. Now that we have attained independence, it is obviously desirable that there should be a certain uniformity in the calendar for our civic, social and other purposes and that this should be based on a scientific approach to this problem.

It is true that for governmental and many other public purposes we follow the Gregorian calendar, which is used in the greater part of the world. The mere fact that it is largely used, makes it important. It has many virtues, but even this has certain defects which make it unsatisfactory for universal use.

It is always difficult to change a calendar to which people are used, because it affects social practices. But the attempt has to be made even though it may not be as complete as desired. In any event, the present confusion in our own calendars in India ought to be removed.

I hope that our Scientists will give a lead in this matter.

Jawaharlal Nehru

New Delhi,
February 18, 1953.

मुस्लिम कैलेण्डर

मुस्लिम संवत् उद्व्रजन (एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर बसना) – 'हिजरी' वर्ष के आरंभिक बिन्दु, अर्थात् इस्लाम के पैगम्बर (दूत) मोहम्मद साहब के मक्का से मदीना सन् 622 ई. में उद्व्रजन के साल से गिना जाता है। दूसरे ख़लीफ़ा उमर–1 ने सन् 634 ई. – 644 ई. तक राज्य किया, उसने साल के शुरूआती रूप में मुहर्रम महीने का पहला दिन निर्धारित किया, अर्थात् 15 जुलाई, 622 ई. जिसे कुरान द्वारा पहले से ही साल से पहले दिन के रूप में तय कर दिया गया था।

मुस्लिम कैलेण्डर के साल चांद से निर्धारित होते हैं और उनमें हमेशा 12 चंद्र महीने होते हैं, जो 30 और 29 दिन (क्रमशः) से समन्वित होते हैं। साल में 354 दिन होते हैं, पर आखिरी महीने (हिज्जाह स्थित धू) में कभी कभी जुड़ा हुआ दिन होता है, जिसके कारण अंतिम महीने में तीस दिन हो जाते हैं, जिससे उस साल कुल 355 दिन हो जाते हैं। महीने सूर्य से ही सम्बद्ध ऋतुओं के अनुसार नहीं चलते, क्योंकि महीनों का कोई जुड़ाव नहीं होता। प्रति 32½ वर्षो में महीनों का ऋतुओं से होकर लौटना होता है।

नवें महीने, रमजान को मुस्लिम समुदाय में व्रत या उपवास का महीना माना जाता है। कुरान के अनुसार मुस्लिमों को अपना व्रत आरंभ करने से पहले उघड़ी आंखों से नये चांद को देखना चाहिए।

हिज्र का संतत् सउदी अरब और यमन में सरकारी संवत् माना जाता है तथा फारस की खाड़ी, सीरिया, जॉर्डन व मोरक्को देश मुस्लिम और ईसाई दोनों ही संवतों का प्रयोग करते हैं।

कुछ मुस्लिम देशों ने अपने कैलेण्डरों में अभिग्रहण संबंधी कुछ परिवर्तन किए हैं। तुर्की ने 1088 ए.एच. (1677 ई.) में महीनों के नामों सहित सौर (जूलियन) वर्ष को ग्रहण किया, पर मुस्लिम संवत् को चालू रखा। रज़ा शाह पहलवी (1925–411) के शासन मे ईरान ने मुस्लिम संवत् कायम रखते हुए व महीनों के लिए फ़ारसी नाम देते हुए सौर वर्ष को भी स्वीकार किया।

The Muslim Calendar

The Muslim Era is computed from the starting point of the year of the emigration (Hijra), that is from the year in which Muhammad, the Prophet of Islam, emigrated from Mecca to Medina, 622. C.E The second caliph, 'Umar I, who reigned from 634 C.E - 644 C.E, set the first day of the month, Muharram, as the beginning of the year; that is, July 15, 622 C.E which had already been fixed by the Quran as the first day of the year.

The Muslim Calendar is based on the lunar system and always consist of 12 lunar months alternately 30 and 29 days long, beginning with the approximate New Moon. The year has 354 days, but the last month (Dhu at Hijjah) sometimes has an intercalated day, bringing it upto 30 days and making a total of 355 days for that year. The months do not keep to the same seasons in relation to the sun, because there are no intercalations of months. The months regress through all the seasons every 32½ years.

Ramazan, the ninth month, is observed throughout the Muslim world as a month of fasting. According to the Quran, Muslims must see the New Moon with the naked eye before they can begin their fast.

The Era of Hijra, which is the official Era in Saudi Arabia, Yemen, and the principalities of the Persian Gulf, Egypt, Syria, Jordan and Morocco, uses both the Muslim and the Christian Eras.

Some Muslim countries have made certain changes regarding the adoption of their calendar. Turkey, as early as 1088 AH (1677 C.E), took over the solar (Julian) year with its month names but kept the Muslim Era. Iran, under Reza Shah Pahlavi (reigned 1925-41), also adopted the solar year but the Persian names for the months and keeping the Muslim Era.

प्रस्तावित विश्व कैलेण्डर

	जनवरी							फरवरी							मार्च						
	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
प्रथम तिमाही	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30
	अप्रैल							मई							जून						
	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
दूसरी तिमाही	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30
	जुलाई							अगस्त							सितंबर						
	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
तीसरी तिमाही	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30
	अक्तूबर							नवंबर							दिसंबर						
	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
चौथी तिमाही	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30

W (विश्व दिवस, विश्व अवकाश) अर्थात् 31 दिसंबर (365वां दिन) जो प्रतिवर्ष 30 दिसंबर के बाद आता है।

W (अधिवर्ष, एक अन्य विश्व अवकाश) अर्थात् 31जून जो अधिवर्षों में 30 जून के पश्चात् आता है।

इस संशोधित कैलेण्डर में :

प्रत्येक वर्ष समरूप है।

सब चतुर्थाश समान हैं; प्रत्येक चतुर्थाश में तथ्यतः 91 दिन, 13 सप्ताह अथवा 3 माह हैं। चारों चतुर्थाश अपने स्वरूप में समरूप हैं।

प्रत्येक माह में 26 सप्ताह दिवस और रविवार हैं।

प्रत्येक वर्ष रविवार 1 जनवरी से आंरभ होता है; प्रत्येक कार्य वर्ष सोमवार, 2 जनवरी से आरंभ होता है।

प्रत्येक चतुर्थाश, रविवार से आंरभ होता है और शनिवार को समाप्त होता है।

कैलेण्डर स्थायी और अविच्छिन्न है, इसमें वर्ष 365वें दिन समाप्त होता है, जो प्रत्येक वर्ष में 30 दिसंबर के बाद आता है, इसे ("W") 31 दिसंबर विश्व दिवस कहते हैं, यह एक वर्षात विश्व अवकाश होता है। इसी प्रकार से द्वितीय चतुर्थाश के अंत में जो दिन जोड़ा जाता है, उसे अधिवर्ष दिवस (लीप इयर डे) कहा जाता है। यह ("W") 31 जून को होता है। यह अधि वर्षो का एक और अतिरिक्त विश्व अवकाश है।

Proposed World Calendar

	January							February							March						
	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
1ST QUARTER	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30

	April							May							June							
	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	
2ND QUARTER	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2	
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9	
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16	
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23	
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30	W

	July							August							September						
	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
3RD QUARTER	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30

	October							November							December							
	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	
4TH QUARTER	1	2	3	4	5	6	7				1	2	3	4						1	2	
	8	9	10	11	12	13	14	5	6	7	8	9	10	11	3	4	5	6	7	8	9	
	15	16	17	18	19	20	21	12	13	14	15	16	17	18	10	11	12	13	14	15	16	
	22	23	24	25	26	27	28	19	20	21	22	23	24	25	17	18	19	20	21	22	23	
	29	30	31					26	27	28	29	30			24	25	26	27	28	29	30	W

W (Worlds day, a World Holiday) equals 31 December (365th day) and follows 30 December every year.
W (Leap year Day, another World Holiday) equals 31 June and follows 30 June in leap year.

In this Improved Calendar ;

Every year is the same.

The quarters are equal; each quarter has exactly 91 days, 13 weeks or 3 months; the four quarters are identical in form.

Each month has 26 weekdays, plus Sundays.

Each year begins on Sunday, 1 January ; each working year begins on Monday, 2 January.

Each quarter begins on Sunday, ends on Saturday.

The calendar is stabilized and perpetual, by ending the year with a 365th day that follows 30 December each year, called Worlds day dated "w" or 31 December, a year-end world holiday. Leap-year day is similarly added at the end of the second quarter, called Leap year Day dated "W" or 31 June, another world holiday in leap years.

चंद्र–सौर पंचांग योजना

(शक 1875=1953–54 ई.)

धार्मिक कैलेण्डर				नागरिक चंद्र–सौर कैलेण्डर				वर्तमान में प्रयुक्त सौर कैलेण्डर में की गई गणना की मूल तारीख			
मुख्य अथवा नव चन्द्र समापन		गौण अथवा पूर्ण चन्द्र समापन		पूर्ण चन्द्र समापन		नव चन्द्र समापन		भारतीय सौर कैलेण्डर तारीख		गेगोरियन तारीख	
चैत्र	शु	चैत्र	शु	चैत्र	शु	चैत्र	शु	2	चैत्र	16	मार्च
चैत्र	कृ	वैशाख	कृ	वैशाख	वा	चैत्र	वा	17	चैत्र	31	मार्च
वैशाख (माला)	शु	वैशाख (माला)	शु	वैशाख (अधिक)	शु	वैशाख (अधिक)	शु	1	वैशाख	14	अप्रैल
वैशाख (माला)	कृ	वैशाख (माला)	कृ	वैशाख (अधिक)	वा	वैशाख (अधिक)	वा	17	वैशाख	30	अप्रैल
वैशाख (शुद्ध)	शु	वैशाख	शु	वैशाख	शु	वैशाख	शु	31	वैशाख	14	मई
वैशाख (शुद्ध)	कृ	ज्येष्ठ	कृ	ज्येष्ठ	वा	वैशाख	वा	15	ज्येष्ठ	29	मई
ज्येष्ठ	शु	ज्येष्ठ	शु	ज्येष्ठ	शु	ज्येष्ठ	शु	29	ज्येष्ठ	12	जून
ज्येष्ठ	कृ	आषाढ़	कृ	आषाढ़	वा	ज्येष्ठ	वा	14	आषाढ़	28	जून
आषाढ़	शु	आषाढ़	शु	आषाढ़	शु	आषाढ़	शु	28	आषाढ़	12	जुलाई
आषाढ़	कृ	श्रावण	कृ	श्रावण	वा	आषाढ़	वा	11	श्रावण	27	जुलाई
श्रावण	शु	श्रावण	शु	श्रावण	शु	श्रावण	शु	25	श्रावण	10	अगस्त
श्रावण	कृ	भाद्र	कृ	भाद्र	वा	श्रावण	वा	9	भाद्र	25	अगस्त
भाद्र	शु	भाद्र	शु	भाद्र	शु	भाद्र	शु	24	भाद्र	9	सितम्बर
भाद्र	कृ	अश्विन	कृ	अश्विन	वा	भाद्र	वा	8	अश्विन	24	सितम्बर
अश्विन	शु	अश्विन	शु	अश्विन	शु	अश्विन	शु	23	अश्विन	9	अक्तूबर
अश्विन	कृ	कार्तिक	कृ	कार्तिक	वा	अश्विन	वा	6	कार्तिक	23	अक्तूबर
कार्तिक	शु	कार्तिक	शु	कार्तिक	शु	कार्तिक	शु	21	कार्तिक	7	नवंबर
कार्तिक	कृ	मार्ग	कृ	मार्ग	वा	कार्तिक	वा	5	अग्रह.	21	नवंबर
मार्ग	शु	मार्ग	शु	मार्ग	शु	मार्ग	शु	21	अग्रह.	7	दिसंबर
मार्ग	कृ	पौष	कृ	पौष	वा	मार्ग	वा	6	पौष	21	दिसंबर
पौष	शु	पौष	शु	पौष	शु	पौष	शु	22	पौष	6	जनवरी,1954
पौष	कृ	माघ	कृ	माघ	वा	पौष	वा	6	माघ	20	जनवरी
माघ	शु	माघ	शु	माघ	शु	माघ	शु	21	माघ	4	फरवरी
माघ	कृ	फाल्गुन	कृ	फाल्गुन	वा	माघ	वा	6	फाल्गुन	18	फरवरी
फाल्गुन	शु	फाल्गुन	शु	फाल्गुन	शु	फाल्गुन	शु	22	फाल्गुन	6	मार्च
फाल्गुन	कृ	चैत्र	कृ	चैत्र	वा	फाल्गुन	वा	6	चैत्र	20	मार्च

शु = शुक्ल पक्ष अथवा सुदी
कृ = कृष्ण पक्ष
वा = कृष्ण पक्ष अथवा वादि

जब चन्द्र माह निम्नलिखित के सौर माह को लगभग ढक देता है

कार्तिक अथवा फाल्गुन अग्रहयण अथवा माघ पौष

चंद्र माह की लंबाइ

न्यूनतम		अधिकतम	
दिन	घंटे	दिन	घंटे
29	9.7	29	18.0
29	10.5	29	18.8
29	10.8	29	19.1

पूर्व उल्लेखित माहों की वास्तविक लंबाई के साथ उपरोक्त अवधियों की तुलना किए जाने पर यह पाया गया कि पौष माह को छोड़ कर अन्य सभी सौर माहों से चंद्र माह की न्यूनतम लंबाई कम है। अतः केवल पौष माह को छोड़ कर सभी माहों में अधिक मास की संभावना है।

Scheme of the Luni-Solar Calendar

(Saka 1875=1953-54 C.E)

Religious Calendar				Civil Luni-Solar Calendar				Initial date reckoned on the Solar Calendar as is now in use.			
Mukhya or new-moon ending		Gauna or full-moon ending		Full-moon ending		New-moon ending		Indian Solar Calendar date		Gregorian date	
Chaitra	S	Chaitra	S	Chaitra	S	Chaitra	S	2	Chaitra	16	Mar.
Chaitra	K	Vaisakha	K	Vaisakha	V	Chaitra	V	17	Chaitra	31	Mar.
Vaisakha (mala)	S	Vaisakha (mala)	S	Vaisakha (adhika)	S	Vaisakha (adhika)	S	1	Vaisakha	14	Apr.
Vaisakha (mala)	K	Vaisakha (mala)	K	Vaisakha (adhika)	V	Vaisakha (adhika)	V	17	Vaisakha	30	Apr.
Vaisakha (suddha)	S	Vaisakha (suddha)	S	Vaisakha	S	Vaisakha	S	31	Vaisakha	14	May
Vaisakha (suddha)	K	Jyestha	K	Jyestha	V	Vaisakha	V	15	Jyestha	29	May
Jyestha	S	Jyestha	S	Jyestha	S	Jyestha	S	29	Jyestha	12	June
Jyestha	K	Asadha	K	Asadha	V	Jyestha	V	14	Asadha	28	June
Asadha	S	Asadha	S	Asadha	S	Asadha	S	28	Asadha	12	July
Asadha	K	Sravana	K	Sravana	V	Asadha	V	11	Sravana	27	July
Sravana	S	Sravana	S	Sravana	S	Sravana	S	25	Sravana	10	Aug.
Sravana	K	Bhadra	K	Bhadra	V	Sravana	V	9	Bhadra	25	Aug.
Bhadra	S	Bhadra	S	Bhadra	S	Bhadra	S	24	Bhadra	9	Sep.
Bhadra	K	Asvina	K	Asvina	V	Bhadra	V	8	Asvina	24	Sep.
Asvina	S	Asvina	S	Asvina	S	Asvina	S	23	Asvina	9	Oct.
Asvina	K	Kartika	K	Kartika	V	Asvina	V	6	Kartika	23	Oct.
Kartika	S	Kartika	S	Kartika	S	Kartika	S	21	Kartika	7	Nov.
Kartika	K	Marga.	K	Marga.	V	Kartika	V	5	Agrah.	21	Nov.
Marga.	S	Marga.	S	Marga.	S	Marga.	S	21	Agrah.	7	Dec.
Marga.	K	Pausa	K	Pausa	V	Marga.	V	6	Pausa	21	Dec.
Pausa	S	Pausa	S	Pausa	S	Pausa	S	22	Pausa	6	Jan,1954
Pausa	K	Magha	K	Magha	V	Pausa	V	6	Magha	20	Jan.
Magha	S	Magha	S	Magha	S	Magha	S	21	Magha	4	Feb.
Magha	K	Phalguna	K	Phalguna	V	Magha	V	6	Phalguna	18	Feb.
Phalguna	S	Phalguna	S	Phalguna	S	Phalguna	S	22	Phalguna	6	Mar.
Phalguna	K	Chaitra	K	Chaitra	V	Phalguna	V	6	Chaitra	20	Mar.

S = Sukla paksa or Sudi.
K = Krsna Paksa.
V = Krsna Paksa or Vadi.

When the lunar month nearly covers the Solar month of	*Length of the lunar month.* *Minimum*		*Maximum*	
	d	h	d	h
Kartika or Phalguna	29	9.7	29	18.0
Agrahayana or Magha	29	10.5	29	18.8
Pausa	29	10.8	29	19.1

Comparing the above limits with the actual lengths of months stated before, it is found that the minimum length of the lunar month falls short of all the solar months except *Pausa.* So a *malamasa* or intercalary month is possible in all the months except the month of *Pausa* only.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

भारत तथा विश्व में विभिन्न समुदायों द्वारा प्रयुक्त विविध कैलेण्डरों को ढूंढिए तथा एकत्रित कीजिए।

विभिन्न कैलेण्डरों में प्रयुक्त माहों के नामों को एकत्रित कर उनकी तुलनात्मक तालिका बनाइए, उदाहरणार्थ,

माहों के नाम

ग्रेगोरियन कैलेण्डर	हिन्दू ** कैलेण्डर	इस्लामी ** कैलेण्डर (चांद्र)	पारसी ** कैलेण्डर
जनवरी	माघ	मुहर्रम	फर्वरदीन
फरवरी	फाल्गुन	सफ़र	आर्दीबेहश्त
मार्च	* चैत्र	रबी–उल–अव्वाल	खोरदाद
अप्रैल	वैशाख	रबी–उल–अखीर	तिर
मई	ज्येष्ठ	जमादि–उल–अव्वाल	अमरदाद
जून	आषाढ़	जमादि–उल–अखीर	शहरेवार
जुलाई	श्रावण	रजब	मेहर
अगस्त	भाद्रपद	शाबान	अवान
सितम्बर	अश्विन	रमज़ान	अदर
अक्तूबर	कार्तिक	शाव्वाल	डे दाए
नवम्बर	मार्गशीर्ष	धिल क्वाद	बहमान
दिसंबर	पौष	धिल हज	अस्पानदरमाद

* वर्ष का आरंभ

** ग्रेगोरियन कैलेण्डर में माहों को कुछ अंश तक ढक देता है।

हमारे देश के महत्वपूर्ण त्यौहारों, ऐतिहासिक घटनाओं व समारोहों का एक कैलेण्डर तैयार कीजिए।

आप इन घटनाओं पर आधारित शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं।

विश्व भर की विविध संस्कृतियों में समय मापने की प्रणाली की प्रक्रिया पर जानकारी एकत्रित कीजिए।

भारत के अधिकांश धर्मों के कैलेण्डरों पर एक सरसरी निगाह डालते ही पता चलता है कि त्यौहार पूर्णिमा या अमावस्या के आसपास ही पड़ते हैं। पूर्णिमा तथा अमावस्या को होने वाले विविध त्यौहारों की एक सूची तैयार कीजिए।

राशि चिन्हों तथा इनसे जुड़ी पौराणिक कथाओं को एकत्रित कीजिए।

पंचांग कैसे बनाया जाता है, यह समझने के लिए विशेषज्ञों का साक्षात्कार कीजिए अथवा उनके साथ कार्य कीजिए।

प्रस्तावित विश्व कैलेण्डर के अभिग्रहण की प्रगति जानने हेतु अभ्यासस्वरूप, संयुक्त राष्ट्र संघ के महा–सचिव को लिखे जानेवाले पत्र का प्रारूप तैयार करके अपने प्रधानाचार्य को दिखाइए।

Creative Activities for Students and Teachers

Find out and collect various calendars used by different communities in India and the world.

Collect and make a comparative chart of names of months used in different calendars for example

Names of the Month

Gregorian Calendar	Hindu** Calendar	Islamic** Calendar	Zoroastrian** Calendar
January	Magh	Muharram	Farvardin
February	Phalgun	Safar	Ardibehesht
March	*Chaitra	Rabi-ul-Awwal	Khordad
April	Vaishakh	Rabi-ul-Akhir	Tir
May	Jyestha	Jamadi-ul-Awwal	Amardad
June	Ashadh	Jamadi-ul-Akhir	Shahrevar
July	Shravan	Rajab	Mehar
August	Bhadrapad	Sha'aban	Avan
September	Ashwin	Ramzan	Adar
October	Kartik	Shawwal	Dae
November	Margashirsh	Dhil Qa'ad	Bahman
December	Poush	Dhil Haj	Aspandarmad

* beginning of the year,

** overlaps months in Gregorian Calendar

Make a calendar of important festivals, historical events and celebrations in our country. You may organise educational and cultural programmes based on these events.

Compile information on process of time-reckoning system in various cultures throughout the world.

Even a cursory look at the calendars of most religions in India indicates that festivals are featured around the full moon or new moon days. Make a list of various festivals based on Full Moon and New Moon.

Collect the Zodiac signs and related mythological stories associated with them.

Interview or work with scholars to understand how a "Panchang" is prepared.

As an exercise, prepare a draft of a letter to be written to the Secretary General, United Nations to find out the progress of adoption of proposed World Calendar and show it to your Principal.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

References

Achelis, Elizabeth, (1955), "Of Time and Calendar", New York.

Cunningham, Alexander, "Book of Indian Eras with tables for calculating

Indian dates", Kolkata.

Panth, B.D., "Consider the Calendar", New York.

Rapson, (1922), " The Cambridge History of India, Vol. I, Ancient India".

Report of the Calendar Reform Committee, (1955), Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi

Saha, M.N,, (1952), "Reform of the Indian Calendar, Science and Culture", Vol. 18.

Sewell, R.S., and Diksit, S.B., (1896), "The Indian Calendar", London.

Photo Credits

National Museum

J. Gill

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्र चिह्न

सत्यमेव जयते

National Emblem

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्र चिह्न

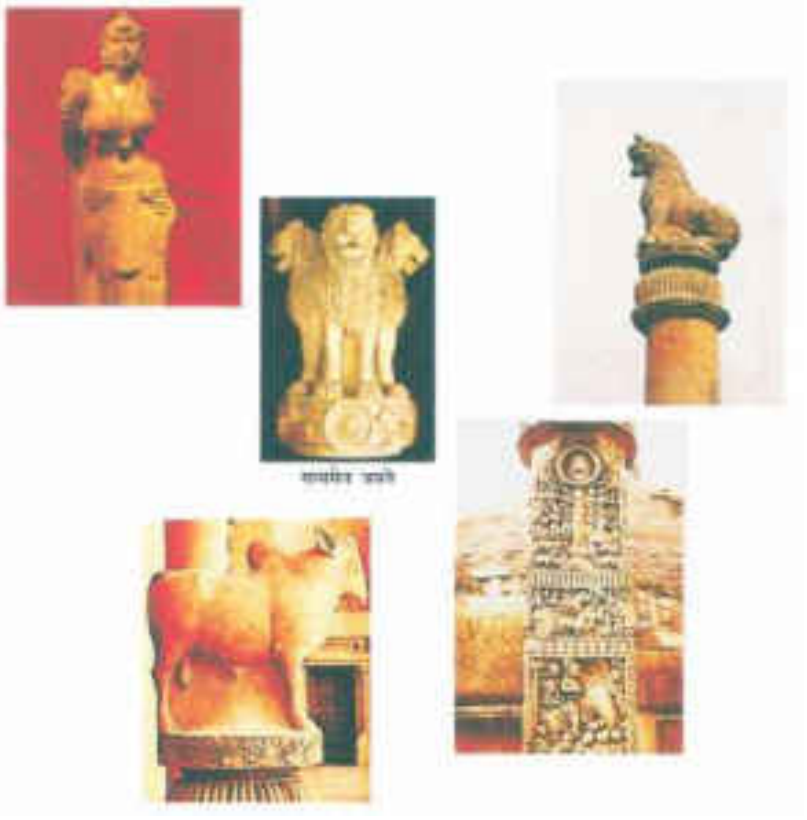

NATIONAL EMBLEM

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की है। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

राष्ट्र चिह्न

"भारत की कला में प्रत्येक शैली एक स्पष्ट तथा सचेतन विचार व चेतनता की सहजानुभूति का प्रतीक है। कुछ भी स्वेच्छाचारी अथवा अनूठा, अनिश्चित अथवा गूढ़ नहीं है, क्योंकि सम्पूर्ण प्रतिमावली (मूर्ति समूह) का उद्देश्य बोधगम्य तथा सरलता से समझ में आ सकने योग्य शैली में साकार विचारों को प्रस्तुत करना है।"

इन दो सुबोध वाक्यों द्वारा आनन्द कुमारस्वामी ने संक्षिप्तता तथा सूक्ष्मता सहित भारतीय कला, विशेषकर शिल्पकला के अनिवार्यतः प्रतीकात्मक स्वभाव को अभिव्यक्त किया है। अपनी ही तरह के प्रकृतिवाद के होते हुए भी भारतीय शिल्पकला उत्कृष्ट रूप से प्रतीकात्मक है। विविध चिह्नों तथा प्रतीकों सहित, चाहे विशेषताएं हों अथवा संकेत, प्रत्येक मूर्ति (शिल्प) के निर्दिष्ट रूप में प्रतीकात्मक अर्थ निहित है। प्रत्येक प्रतीक बहुसंयोजक है और प्रत्येक पुराण का विविध के साथ अनेक ग्रंथों में वर्णन होता है। इसके अतिरिक्त, एक शिल्पात्मक प्रस्तुतीकरण को आसानी से पुराण के सुनिश्चित रूपांतर के साथ जोड़ा नहीं जा सकता।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 27 जुलाई, 1947 को भारत की संविधान सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि, ''अशोक काल भारतीय इतिहास का एक अंतराष्ट्रीय काल था। यह वह समय नहीं था, जब भारतीय राजदूत दूर देश में विदेश जाते थे, बल्कि यह वह समय था, जब सम्राटों अथवा साम्राज्यवादियों के रूप में नहीं शांति, संस्कृति और सद्भाव के दूत के रूप में विदेश जाया जाता था।''

26 जनवरी 1950 को जब भारत एक गणतंत्र बना, तब उसने सारनाथ स्थित सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष को अपने राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया।

भारत के राष्ट्रीय चिह्न में एक गोलाकार शीर्ष फलक पर एक के पीछे एक बैठे चार सिंहों की आकृति है, जिसके मध्य में एक 24 अरों से युक्त चक्र (पहिया) है। इस शीर्ष फलक का प्रस्तर एक हाथी, एक दौड़ते घोड़े, एक साँड तथा एक सिंह की ऊंची उभारयुक्त आकृति से युक्त शिल्प से अलंकृत है, जो मध्यवर्ती चक्र द्वारा पृथक हैं। चिह्न के नीचे की ओर 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है, अर्थात् – 'सत्य की ही विजय होती है'।

भारत का राष्ट्रीय चिह्न सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष का आंशिक प्रतिरूप है, जो रूपंकर कला की महान कृति है। इसमें शीर्ष फलक पर बैठे हुए केवल तीन सिंह दिखाई देते हैं, चौथा दिखाई नहीं देता। ये आकृतियाँ एक घंटाकार कमल पर अवस्थित हैं, किन्तु वह आधार राष्ट्रीय चिह्न में दिखाई नहीं देता।

सिंह शीर्ष का, वाराणसी के निकट, सारनाथ में 1905 ईसवी में पता चला, जिसे सामान्यतः सारनाथ सिंह शीर्ष के रूप में उल्लिखित किया जाता है। इस शीर्ष के मूलतः पांच भाग थे, (1) स्तंभ (जो अब टूट कर कई

NATIONAL EMBLEM

"In the art of India, every form is the symbol of a clear and conscious thought and of consciously directed feeling. Nothing is arbitrary or peculiar, nothing is vague or mysterious, for the very raison d'être of all the imagery is to present concrete ideas in comprehensible and easily apprehended forms".

In these two lucid sentences, Ananda Coomaraswamy expressed with brevity and precision the essentially symbolic nature of Indian art, especially sculpture. Representational though it is and its own brand of naturalism notwithstanding, the content of Indian sculpture is highly symbolic. Symbolic meaning is encapsulated in each detail of an image, including the various emblems and symbols, whether attributes or gestures. Every symbol is multivalent, and every myth is recounted in several texts in various redaction. Moreover, a sculptural representation cannot be easily related to a specific version of a myth.

Pandit Jawaharlal Nehru while addressing the Indian Constituent Assembly on July 27, 1947 mentioned "the Ashokan period was essentially an international period of Indian History. It was not a period when Indian Ambassadors went abroad to a far-off country and went abroad not in the way of Emperors and Imperialists but as Ambassadors of peace and culture and goodwill".

India adopted the Sarnath Lion-Capital of Ashoka as her National Emblem on January 26, 1950, the day she became a Republic.

सत्यमेव जयते

Lion capital from Ashoka Stambha, Stone, Sarnath, Uttar Pradesh

हिस्सों मे बिखर चुका है), (2) एक कमलाकार घंटाधार (3) जिस पर चार पशुओं की आकृति सहित एक ढोल आधारित है, जो शीर्ष ढोल के आस–पास दक्षिणावर्त्त दिशा की ओर है, जिसके मध्य में चक्र निदर्शित है, जिसके ऊपर (4) चार तेजस्वी एक दूसरे से सटे सिंह तथा (5) अभिषिक्त तत्वस्वरूप एक धर्मचक्र, अर्थात् एक बड़ा पहिया है, जो टूटी–फूटी हालत में है। अभिषिक्त पहिये (चक्र) तथा कमलाधार को राष्ट्रीय चिह्न में शामिल नहीं किया गया है।

साँड शीर्ष, रामपुरवा, बिहार

सुप्रसिद्ध कला इतिहासकार प्रो. फाउचर ने शीर्ष फलक पर प्रस्तुत चार पशुओं के प्रतीकार्थ का इस प्रकार वर्णन किया है:

''साँड, सिद्धार्थ के जन्म के समय की राशीय नक्षत्र स्थिति अर्थात् वृषभ लग्न का प्रतीक है; हाथी, मायादेवी द्वारा देखे गए गर्भधारण संबंधी उस स्वप्न का प्रतीक है, जिसमें उन्होंने बोधिसत्व को श्वेत हाथी के रूप में अपने गर्भ में प्रवेश करते देखा था; घोड़ा महान आत्मत्याग तथा उस प्रिय युद्धाश्व (जंगी घोड़े) कंथक का प्रतीक है, जिस पर सवार होकर राजकुमार अपना साम्राज्य त्याग कपिलवस्तु से चले गए थे; सिंह, शाक्य–सिंह का प्रतीक है, तथा महात्मा बुद्ध को जब बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई तब विश्व को उस महान ज्ञान का उपदेश देने के लिए जब महात्मा बुद्ध ने धर्मचक्र को घुमाया, तब सिंह ग़र्जन सुनाई पड़ा था।''

The National Emblem of India is the figure of four lions seated back to back, on a circular abacus in the centre of which there is a *Chakra* (wheel) having 24 spokes. The frieze of the abacus is adorned with sculpture in high relief of an elephant, a galloping horse, a bull and a lion. These are separated by intervening *Chakras*. The words *"Satyameva Jayate"* are inscribed below the Emblem in the Devanagri script, which means 'Truth alone triumphs'.

The National Emblem of India is a partial reproduction of Ashoka's Lion Capital, which is a great masterpiece of plastic art. In this, only three lions appear resting on the abacus, the fourth being hidden from view. Though these figures rest on a bell shaped lotus, but it does not figure in the National Emblem.

The Lion Capital discovered in 1905 C.E., at Sarnath, near Varanasi (Benaras, Kashi) is generally referred to as Sarnath Lion Capital. The Capital originally consisted of five component parts, (i) the shaft (which is broken in many parts now), (ii) a lotus bell base (iii) on which is based a drum with the four animals proceeding clockwise around the drum of the capital, between which the *chakras* are depicted above which, (iv) the figures of four majestic addorsed lions and (v) the crowning element *Dharam Chakra*, a large wheel that is also lying in a broken condition. The crowning wheel and the lotus vase have not been included in the National Emblem.

Prof. Foucher, eminent art historian explains the symbolism of the four animals on the abacus, which is as follows :

> ***"The bull symbolises the zodiacal constellation at the time of the birth of Siddhartha, Vrishabha lagna; the elephant suggests Mayadevi's dream of her conception, the Bodhisattva entering her womb as a white elephant; the horse suggests the Great Renunciation and the favourite steed Kanthaka on which the Prince rode away from Kapilavastu giving up his empire; the lion stands for Sakya-Simha, the great roar of the lion heard when Buddha turned the wheel of Law to preach to the World the great wisdom that had dawned on him under the Bodhi Tree".***

The Lion-Capital of Ashoka is now placed in Archaeological Museum at Sarnath. Sarnath, as is believed, has been derived from Saranganatha, which means, the "Lord of the Deer". It was a part of *Rishipatana mrigadava* or *Isipatna mrigadava* of Buddhist Texts. As per the texts. Buddha is believed to have preached his first sermon to his five disciples at Sarnath and the event is known as the "Turning of the Wheel of Law"- *Dharmachakrapravartana*.

The Lion Capital is one of the most magnificent specimens of art and the symbolism associated to this outstanding sculpture has been variedly explained. The basic explanation of the *Dharma Chakra*, once crowning the Lion-Capital at Sarnath,

सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष को अब सारनाथ के पुरातत्त्व संग्रहालय में रखा गया है। ऐसा विश्वास है कि सारनाथ शब्द सारंगनाथ से गृहित है, जिसका अर्थ है – 'हिरण का भगवान'। यह ऋषिपाटन – मृगदाव अथवा बौद्ध ग्रंथों के इसीपाटन मृगदाव का एक भाग था। इन ग्रंथों के अनुसार, ऐसा विश्वास है कि महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपने पाँच शिष्यों को अपना प्रथम उपदेश दिया और इस घटना को 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के रूप में जाना जाता है।

सिंह शीर्ष, कला की एक अत्यंत उत्कृष्ट प्रस्तुति है और इस शिल्प के साथ जुड़े प्रतीकार्थ का विविध रूपों में वर्णन किया गया है। सारनाथ स्थित सिंह शीर्ष पर अवस्थित 32 अरों से युक्त धर्मचक्र को मूलतः धर्मपरायणता को प्रस्तुत करते, घूमते चक्र के रूप में स्वीकार कर सर्वोच्च माना जाता था। डा. सी. शिवराममूर्ति के अनुसार, ''चार दिशाओं की ओर अभिमुख चार सिंह, काम अथवा मनोभाव के साथ पशु बल के भी प्रतीक थे। इनके नीचे प्रस्तुत कमल अर्थ अथवा संपत्ति का प्रतीक था। निष्कर्षतः काम तथा अर्थ दोनों से, धर्म उच्च है और उन पर बल तथा धर्म के भार द्वारा सतत नियंत्रण रखा जाना है।''

कलिंग (ओड़िशा) पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् मौर्य शासक सम्राट अशोक पश्चाताप के उपरान्त बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गए और उन्होंने अपना शेष जीवन तथा शक्ति धर्म के प्रचार–प्रसार में ही व्यतीत कर दिया।

सम्राट अशोक के शिलालेख व्यापक विस्तृत क्षेत्र में, पश्चिम में अफ़गानिस्तान, जहाँ सम्राट का संदेश स्थानीय जनता के लिए यूनानी तथा अरामाएक (बाइबिल कालीन उत्तर–पश्चिमी सेमिटिक भाषाओं का एक समूह) में अनूदित किया गया, से ले कर पूर्व में ओड़िशा, उत्तर में नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र तथा दक्षिण में कर्नाटक तक प्राप्त होते हैं। सम्राट अशोक तथा उनके शिलालेखों के साथ सामान्य रूप से जुड़ी वस्तुओं में से समूह रूप में, स्तम्भ शायद सर्वाधिक कुतूहलपरक हैं, हालांकि प्राप्त प्रमाणों के अनुसार, इनमें से कुछ स्तंभ सम्राट अशोक के शासन से पूर्व भी निर्मित हुए हैं।

यद्यपि सभी स्तंभ परंपरागत रूप से सम्राट अशोक तथा उसके धार्मिक कृत्यों से युक्त माने जाते हैं, फिर भी बचे हुए स्तंभो तथा उनके टुकड़ों (खण्डों) को अशोककालीन तथा पूर्व–अशोककालीन (शायद पूर्व–मौर्यकालीन भी) स्मारकों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। मूलतः प्रत्येक स्तंभ, एक लम्बे एकाश्म स्तंभ और एक पाषाण शीर्ष से युक्त होता है।

स्तम्भ मूर्तिविज्ञान को सम्राट अशोक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान – राजसी तथा वैदिक प्रतीक का एक शैली में प्रवर्तन है, जो बौद्ध धर्म संबंधी उपयोगों हेतु उपयुक्त था। अब तक विद्यमान, सारनाथ स्थित शानदार स्तम्भ (सिंह शीर्ष) बौद्ध मठवासीय समुदाय की एकता के लिए एक मिसाल बना हुआ है। मध्य प्रदेश में सांची स्थित बौद्ध स्थान पर सारनाथ से मिलते–जुलते शीर्ष सहित एक स्तम्भ पर संदेश भी प्राप्त होता है। इस शीर्ष पर उल्लिखित बौद्ध संदेश को भी शायद सिंहो के प्रतीक रूप में शामिल कर दिया गया है, क्योंकि सिंह न केवल राजत्व का उपयुक्त प्राचीन प्रतीक है, और इस प्रकार स्वयं सम्राट अशोक का संदर्भ है, वरन् वह महात्मा बुद्ध के वंशज, शाक्यों का गणचिह्न था, अतः सिंह द्वारा उनका भी संदर्भ दे सकते

presumably with 32 spokes represented the rotating wheel of righteousness which was considered to be supreme. According to Dr. Sivaramamurti, "the four Lions facing the four directions symbolised *Kama* or passion as also the brute force. The lotus below represented *Artha* or wealth. The inference is that *Dharma* is above both *Kama* and *Artha* and they are to *be* kept in constant check by imposing the force and weight of *Dharma*".

Mauryan ruler Ashoka after his conquest of Kalinga (Odisha), was struck with remorse at the suffering he had caused, underwent a conversion (to Buddhism), and spent his remaining life and energy carrying out the *dharma* (law).

Ashokan inscriptions are found in a wide ranging area, extending from Afghanistan on the west, where the emperor's message was translated into Greek and Aramaic for the local population, to Odisha on the east, from the Nepal borderland in the north, into Karnataka in the south. As a group, the pillars are perhaps the most intriguing of the objects generally associated with Ashoka and his inscriptions. Though as per the evidences, some of these pillars were erected prior to Ashoka's reign.

The surviving pillars and pillar fragments may thus be categorised into Ashokan and pre-Ashokan (perhaps even pre-Mauryan) monuments, inspite of the fact that all have been traditionally ascribed to Ashoka and his religious zeal. Originally, each pillar consisted of a long monolithic shaft, and a stone capital.

Ashoka's major contribution to pillar iconography seems to have been a conversion of royal and vedic symbol to a form suitable for Buddhist use. The splendid pillar (lion-capital) at Sarnath, still *in situ* (at site) makes a plea for unity within the Buddhist monastic community *(sangha),* a message also appearing on a pillar with a nearly identical capital at Buddhist site of Sanchi in Madhya Pradesh. The Buddhist message of

Mauryan Pillar

हैं। यह रोचक तथ्य है कि अपने खुले मुँह सहित चार एक–दूसरे से सटे सिंहो ने द्विअर्थी रूपक के रूप में सम्राट अशोक, जिनके वचन स्तम्भ पर अभिलेखित हैं और जिन्हें देश भर में प्रसारित किया जाना था तथा शाक्यमुनि और उनके उपदेशों को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

चौथी तथा सातवीं शताब्दी में सारनाथ आए चीनी तीर्थयात्रियों फाहियान तथा हवेन सांग ने भी सारनाथ के स्तम्भ की यात्रा की थी। हवेन सांग ने स्तम्भ का वर्णन करते हुए उसे, ''हरित मणि के समान चमकदार – – – – प्रकाश के समान झिलमिलाता'' बताया है। सुस्पष्ट उत्कीर्णन, चिकनी परिष्कृत तथा उत्कृष्ट कारीगरी ने इस स्थान को, विशेषकर शीर्ष को प्राचीन भारत की महानतम कलात्मक उपलब्धियों में से एक होने का गौरव प्रदान किया है। शीर्ष पर बने सिंह, शीर्ष फलक अथवा ढोलाकार आधार पर बने पशुओं के विपरीत रूढ़ शैली में अंकित हैं, जिनका प्रकृतिवाद जीवित प्राणियों के प्रति कलात्मक संवेदनात्मकता को अभिव्यक्त करता है। विशेष रूप से, सांड, हड़प्पा कालीन मुहरों पर प्राप्त होने वाले रूपों से गहन रूप से संबद्ध प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि चार एक – दूसरे से सटे सिंहो के नेत्रों में बेशकीमती पत्थर जड़े गए थे और खुरदरे पहियों के मध्य भाग को तांबे अथवा अन्य किसी धातु द्वारा ढका गया होगा। निश्चित रूप से, स्तम्भ तथा उसका शीर्ष, मौर्य कला की एक शानदार उपलब्धि रही होगी।

सारनाथ स्थित पुरातत्त्व संग्रहालय के सूचीपत्र में प्रस्तुत सिंह शीर्ष के वर्णन का कुछ हिस्सा नीचे प्रस्तुत है:

''अशोक स्तम्भ का शीर्ष (ऊंचाई 7', चौड़ाई, शीर्ष फलक के ऊपर 2'10''),– – – इनमें से तीन पशुओं (शीर्षफलक पर प्रस्तुत चार पशु) को चलते हुए तथा घोड़े को सरपट दौड़ते हुए प्रदर्शित किया गया है। ये सभी आकृतियां थोड़ी–बहुत नष्ट हो चुकी हैं, पर वे चमत्कारी रूप से जीवंत और आकर्षक प्रतीत होती हैं। शीर्ष फलक के ऊपर, एक के पीछे एक बने चार प्राकृत आकार लिए (आदमकद) सिंहो की आकृतियां हैं – इनमें से दो सिंहों की आकृतियां पूर्ण रुप से संरक्षित हैं। अन्य दो सिंहो के सिर अलग से प्राप्त हुए थे, जिन्हें दोबारा जोड़ दिया गया है। एक का ऊपरी जबड़ा तथा दूसरे का निचला जबड़ा पुनः प्राप्त नहीं हो सके थे। नेत्र गोलकों के स्थान पर किन्हीं कीमती पत्थरों को जड़ दिया गया था, जैसा कि ऊपरी तथा निचली पलकों में प्राप्त अत्यंत महीन छेदों से स्पष्ट पता चलता है, जिनमें पत्थरों को सही स्थिति में जड़ने के लिए पतली लोहे की पिनें लगाई गई थीं। ऐसी ही एक पिन अब तक भी एक सिंह की बायीं आंख की ऊपरी पलक में मौजूद है।

शीर्ष को बालूपत्थर के एक ही खण्ड से उत्कीर्ण किया गया था, पर अब यह घंटे के एकदम ऊपर की ओर टूटा हुआ है। मूलतः इस पर बौद्ध धर्म का प्रतीक पहिया

this capital is also probably incorporated into the symbolism of lions, for not only is the lion an appropriate early symbol of royalty, and thus a reference to Ashoka himself, but the Buddha's clan, the Sakyas had the lion as its totem so the lions may refer to him as well. It may be tempting to suggest that the four addorsed lions, with their open mouths, may have served as a dual metaphor referring both to Ashoka, whose words were inscribed on the pillar and were to be spread throughout the land, and to Sakyamuni and his teachings.

The pillar was also seen by two Chinese pilgrims — Fa-hien and Hsuan Tsang who visited Sarnath in the 4th and 7th centuries. Hsuan Tsang described it as "bright as jade . . . . . glistening and sparkling like light". Indeed the crisp carving, smooth polish and high quality of craftsmanship have earned this work, particularly the capital, a reputation of being one of ancient India's greatest artistic achievements. The crowning lions are somewhat stylized in contrast to the drum animals (abacus) whose naturalism suggest the artistic sensitivity to living creatures found as early as the Indus civilization. In particular, the bull relates strongly to forms seen on Harappan seals. It seems that precious gems may have been placed in the eyes of the four addorsed lions and the rough wheel hubs may have been capped by copper or any other metal. Indeed, the pillar and its capital must have been splendid achievements of Mauryan art.

The following are some extracts of the description of the Lion Capital given in the catalogue of the Museum of Archaeology at Sarnath :

> ***"Capital of Ashoka Column (height 7', width across the abacus 2'10") . . . Three of these four animals in the abacus are represented as walking, the horse as running at full gallop. These figures are all more or less damaged, but they are wonderfully life-like and their pose graceful. The abacus is surmounted with figures of four life sized lions placed back to back. Two of them are in perfect preservation. The heads of the other two were found detached and have been refixed. The upper jaw of one and the lower jaw of the other were not recovered. In place of eye-balls, some sort of precious stones were inserted into the sockets, as is clearly shown by the existence of very fine holes in the upper and lower lids, which received thin iron pins to keep the jewels in position. One such pin still remains in the upper lid of the left eye of one of the lions.***
>
> ***The capital was carved out of a single block of sandstone but is now broken across just above the bell. It was originally surmounted by a wheel (chakra), the symbol of the Buddhist Law, supported on a short stone shaft. The latter was not discovered, but its thickness can be estimated from the mortice hole, 8" in diameter, drilled into the stone between the lions' head . . .***
>
> ***The material of which the capital is made is a black spotted buff coloured sandstone from Chunar, but of a much finer grain than the Chunar stone used in the construction of houses in Benaras and its neighbourhood".***

(चक्र) बना हुआ था, जो एक छोटे पत्थर के दण्ड पर टिका हुआ है। इसे आविष्कृत नहीं किया गया, पर इसकी मोटाई का अनुमान, सिंह के सिर के बीच, पत्थर में 8'' के व्यास में किए गए छेद को देख कर लगाया जा सकता है।

शीर्ष का निर्माण, चुनार के काले चित्तीदार पाण्डु (बफ) रंग के बलुआ पत्थर से किया गया है, जो बनारस तथा उसके आस–पास घरों के निर्माण में प्रयुक्त चुनार के पत्थर की तुलना में काफी उत्कृष्ट कणों से युक्त है।'

यह एक अत्यंत रोचक घटना है (और विवादपरक बन गयी है) कि झिलमिलाते और चमकदार प्रकाशीय वस्तुओं की तकनीक भारत में विकसित हुई थी या आयात की गई थी। कुछ प्रमाण ऐसे हैं, जो इस तथ्य को उद्घाटित करते हैं कि पूर्व–मौर्य काल में भी यह शिल्पविधि प्रचलित थी। प्रो. वी. एस. अग्रवाल के अनुसार, भारतीय शिल्पकारों ने दो शिल्प–विधियां विकसित कीं, यथा – धृष्टा और मृष्टा, जिनको प्रयोग में लाने से अन्ततः दर्पण–समान चमक आती थी। यहां तक कि बस्ती जिले के पिपरहवा स्थित स्तूप में प्राप्त पवित्र पात्र (बर्तन) की भी इसी प्रकार की दर्पण समान सतह है, जो 5वीं शताब्दी ई. पू. के समय का है।

यहां तक कि आधुनिक पटना के दीदारगंज अंचल में प्राप्त चौरी वाहक के रूप में उल्लिखित यक्षी की आदमक़द प्रतिमा तथा मौर्य काल की अन्य अनेक पाषाण शिल्पकृतियां भी पश्चिम एशिया के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के कारण मानव आकृतियों के निरूपण में उदाहरण सहित प्रतिपादित होती रहीं तथा उत्कृष्ट पॉलिश प्राप्त करती रहीं।

राष्ट्रीय ध्वज के मध्य की श्वेत पट्टी के केन्द्र में 24 अरों से युक्त चक्र अध्यारोपित है। चक्र की संकल्पना अत्यंत प्राचीन है और इसका संदर्भ हमें वैदिक काल में भी प्राप्त होता है। भारतीय कला तथा साहित्य में चक्र अथवा पहिये का एक विशिष्ट अर्थ है।

प्राचीन भारतीय विचारकों ने समय का एक रेखीय नहीं, चक्रीय सिद्धान्त विकसित किया था, जिसे कालचक्र या समय का चक्र कहा जाता है। आरंभ तथा अंत के बिना सृष्टि, अभिव्यक्ति व विलयन की पुनरावर्ती अवस्थाओं पर कायम है। सुदर्शन चक्र अथवा विष्णु, समस्त समाविष्ट प्रेम का एक अंतरिक्षीय घेरा है।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्

अर्थात् सब कुछ जो सजीव और निर्जीव है, उसके आसपास सीमाहीन परिधि के अन्दर स्थित अंतरिक्षीय घेरा है।

Chauri-bearer (Yakshi), Lime Stone, Didarganj, Bihar

It is a matter of great interest (and has become debatable) that whether the technique of glistening and sparkling like light objects was evolved in India or was imported. There is some evidence which suggest that even in pre-Mauryan period, this technique was in existence. According to Prof. V.S. Agrawal, Indian sculptors had evolved two techniques namely *Dhrishta* and *Mrishta* which eventually resulted in mirror like shine. The sacred utensil found in the stupa at Piparhava in the district of Basti has the similar mirror like surface and has been dated back to 5th centruy B.C.E.

Even the life size image of a *Yakshi,* also referred to as *Chauri bearer* found in the Didarganj section of modern Patna and many other stone sculptures of Mauryan period exemplified in the treatment of human figures and in attaining exquisite polish, continued because of the cultural interaction with West Asia.

The *Chakra,* figures with 24 spokes, is superimposed at the centre of white colour in the National Flag. The concept of *Chakra* is very ancient and can be traced back to Vedic period. The wheel has a special connotation in Indian art and literature.

महा चक्र (महान चक्र–सूर्य), श्री चक्र, काल चक्र (समय का घूमता चक्र), संसार चक्र, भाव चक्र (मानव जीवन), ब्रह्म चक्र (सृजन का चक्र), ब्रह्माण्ड चक्र (अंतरिक्षीय), ज्योतिष चक्र (प्रकाश का घेरा), राज्य चक्र, कर्म चक्र, धर्म चक्र तथा उपनिषदों, महाकाव्यों और अन्य ग्रंथों में उल्लेखित चक्र रूचिकार अवधारणाएं हैं।

'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो, वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।'
– मेघदूतम् (कालिदास)

कहा गया है कि धर्म का चक्र जीवन तथा भाग्य की अवस्थाएं बताता है। कवि भास ने ''स्वप्नवासवदत्ता'' में चित्रोपम रूप में कविता द्वारा इस तथ्य को वर्णित किया है।

चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।।'
–स्वप्नवासवदत्तम् (भास)

प्राचीन भारत में, चक्र की स्तूप तथा स्तम्भ के रूप में पूजा की जाती थी और इसे चक्रमह के नाम से जाना जाता था। हमें अन्य प्रतीकों की पूजा के भी संदर्भ प्राप्त होते हैं, जैसे–वृक्षमह (पेड़); नदीमह (नदियां); सागरमह (समुद्र); नागमह (सर्पादि); सूर्यमह (सूर्य); चंद्रमह (चंद्रमा); पर्वतमह (पर्वत); आदि। अनेक कला संबंधी प्रस्तुतियों में चक्र की पूजा का संदर्भ प्राप्त होता है। भरहुत, सांची, अमरावती, बोधगया तथा मथुरा में ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। पूजा करने के लिए, चक्रों को विशेष रूप से उत्कीर्ण किया जाता था, जिन्हें चक्रपट्ट के नाम से जाना जाता था। स्तूपों में, इन चक्रपट्टों के हार तक्षित किए जाते थे।

बौद्ध साहित्य में चक्र शब्द का अर्थ प्रभुत्व अथवा प्राधिकार का चक्र है। जैन धर्म में भी हमें अत्यन्त प्राचीन समय में की जाने वाली चक्र पूजा का संदर्भ मिलता है।

जीवन चक्र, अटल और अपरिहार्य है। जीवन, पूर्व निर्धारित है और जन्म तथा मृत्यु के चक्र में घूमता है, जिसका अंतिम लक्ष्य मुक्ति अथवा मोक्ष होता है। कुम्हार के चाक की भांति, सृजन का चक्र भी क्रम तथा उचित अथवा न्यायसंगत पद्धति का अनुपालन करता है क्योंकि उसकी गति ब्रह्माण्ड के इस खिलौने (मनुष्य) के रचयिता ब्रह्म द्वारा ही निश्चित की जाती है।

अतः चक्र सृजन का प्रतीक है।

सांची स्तूप नं. 1, हाथियों द्वारा थामा हुआ धर्मचक्र, मध्य प्रदेश

The ancient Indian thinkers had evolved, not a linear but a cyclic theory of time, *Kalachakra* or the wheel of time. The universe is without beginning and without end going on recurrent phases of manifestation and dissolution. The *Sudarshana Chakra* of Vishnu is really a cosmic circle of all-embracing love.

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्

The Cosmic Circle within the limitless circuit of which is embraced all that is animate and inanimate

The *Maha Chakra* (Great Wheel -- Sun), *Sri Chakra, Kala Chakra* (the revolving wheel of time), *Samsara Chakra, Bhava Chakra* (Human life), *Brahma Chakra* (Wheel of Creation), *Brahmanda Chakra* (Cosmos), *Jyotish Chakra* (the circle of light), *Rajya Chakra, Karma Chakra, Dharma Chakra* (Wheel of law) and other wheels mentioned in the Upanishads, Epics and other texts are interesting concepts.

'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो, वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।'
– मेघदूतम् (कालिदास)

It is said that wheel of law marks the stages of life and of fortune. Poet **Bhasa's Svapnavasavadatta** describes this picturesquely in the line:

चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।।'
–स्वप्नवासवदत्तम् (भास)

In ancient India, the *Chakra* was worshipped like stupa and stambha and was known as *Chakramaha.* We find references to other worships of symbols like *Vrikshamaha* (Trees); *Nadimaha* (Rivers); *Sagarmaha* (Oceans); *Nagmaha* (Snakes); *Suryamaha* (Sun); *Chandramaha* (Moon); *Parvatmaha* (Mountains); etc. In many works of art, the worship of *Chakra* is evident. Bharhut, Sanchi, Amravati, Bodhgaya, Mathura are full of such examples. For worshipping the *Chakra,* these were specially carved and were known as *Chakrapatt.* And in stupas, a necklace of these *Chakrapatts* were engraved.

The term *Chakra* in Buddhist literature means dominion or circle of authority. Even in the Jainism, the tradition of *Chakra* worship dates back to very ancient times.

According to Dr. C. Sivaramamurti, "when Buddha turned the wheel of law, he set in motion the wheel of right conduct, right thought, right speech and right action, born of right understanding. The wheel of life is inexorable and inescapable. It is pre-ordained and moves on into a cycle of births and deaths, culminating in final liberation or *Moksha.* Like the potter's wheel, the wheel of creation follows an order and righteous method as it is set in motion by the great Potter, the creator of this toy of a universe, the *Brahmandakulala.*

The Wheel is thus the symbol of creation

राष्ट्रीय चिह्न के नीचे की ओर ''सत्यमेव जयते'' आदर्श–वाक्य अभिलेखित है, जिसे मुण्डक उपनिषद् से लिया गया है। इस उपनिषद् के एक लम्बे श्लोक का यह आरंभिक अंश निम्नानुसार है:

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।6।।

अर्थात् सत्य ही जय को प्राप्त होता है, मिथ्या नहीं। सत्य से देवयान–मार्ग का विस्तार होता है, जिसके द्वारा आप्तकाम ऋषि लोग उस पद को प्राप्त होते हैं जहां वह सत्य का परम निधान (भण्डार) वर्तमान है।

इस आदर्श–वाक्य के सत्यमेव जयति से सत्यमेव जयते के रूप में वैयाकरणिक परिवर्तन सहित अभिग्रहण के विषय में जानना समुचित व रूचिकर होगा।

हमारे राष्ट्रीय चिह्न का आदर्श–वाक्य मुण्डक उपनिषद् के श्लोक के प्रथम दो शब्दों तक ही प्रतिबंधित है। (यह जानना रूचिकर है कि भारत के महान विद्याविद् डा. राजेन्द्रलाल मित्र ने भी ''सत्यमेव जयति नानृतं'' शब्दों का अपने निजी आदर्श–वाक्य के रूप में उपयोग किया था।) चूँकि यह आदर्श–वाक्य अब हमारे राष्ट्रीय चिह्न का एक भाग बन गया है, व्यक्ति विशेष द्वारा अब इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। सिंह शीर्ष, केवल अशोक शीर्ष के नीचे प्रयुक्त हो सकता है, जहां पर स्वयं शीर्ष को प्रयुक्त किए जाने की अनुमति है। हालांकि, यह भी जान लेना चाहिए कि सन् 1950 के पश्चात् अशोक स्तम्भ के सिंह शीर्ष का प्रयोग सिक्कों, नोटों (मुद्रा) तथा सेवा मुहरों, आदि पर किया जाने लगा, पर 15 अगस्त, 1947 तथा 26, जनवरी 1950 के बीच राष्ट्रीय चिह्न में आदर्श वाक्य को प्रस्तुत नहीं किया गया था। इससे कुछ भ्रान्ति उत्पन्न हुई तथा 1963 में वित्त मंत्रालय द्वारा स्थिति को स्पष्ट किया गया, जिसका ब्यौरा निम्न प्रकार है:

"संवैधानिक संशोधन के परिणाम–स्वरूप नोटों (मुद्रा) आदि पर राजा के चित्र के स्थान पर किसी चिह्न का प्रयोग किए जाने की आवश्यकता होने पर इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अशोक स्तम्भ के शीर्ष को अभिगृहीत किया गया। यह एक संयोग था कि अशोक स्तम्भ का वही शीर्ष आदर्श वाक्य सहित बाद में भारत सरकार के राज्य चिह्न के रूप में स्वीकृत किया गया।"

चिह्न तथा नाम (अनुचित उपयोग निषेधाज्ञा) अधिनियम, 1950 को लागू करते हुए भारत सरकार आदर्श वाक्य के निजी उपयोग पर रोक तथा निषेधाज्ञा लगाती है, क्योंकि इसे राज्य चिह्न में शामिल किया गया है। यह केवल अशोक स्तम्भ शीर्ष के नीचे ही प्रस्तुत हो सकता हैं, जहां पर स्वयं शीर्ष को प्रयोग की अनुमति प्राप्त है।

On the base of the National Emblem is inscribed the motto "Satyameva Jayate", which has been taken from Mundaka Upanishad. *Satyameva Jayate*, as reproduced below, is the opening phrase of a longer verse from this Upanishad :

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।6।।

"Truth alone conquers, not untruth. By truth is laid out the path leading to the gods by which the sages who have their desires fulfilled travel to where is that supreme abode of truth",

-Translated by Dr. S Radhakrishnan in The Principal Upanishads

It will be appropriate and interesting to trace the adoption of the motto with a grammatical difference from Satyameva Jayati (सत्यमेव जयति) to Satyameva Jayate (सत्यमेव जयते).

The motto in our National Emblem is restricted to the first two words of the verse in the Mundaka Upanishad. (It is interesting to note that a great Indologist Dr. Rajendralal Mitra had also used the words *"Satyameva Jayati Nanritam"* as his personal motto). As the motto has now become part of our National Emblem, individuals can not any longer use it. It can only appear below the Ashokan Capital where the crest itself is permitted to be used. Although, it may also be noted that coins, currency notes and services stamps, etc. has the crest of the Ashokan pillar but the motto was not there till 1950 as our National Emblem between August 15, 1947 and January 26, 1950, was not then adopted. This created some confusion and the position was clarified by the Ministry of Finance in 1963 as follows :

> ***"As a result of the constitutional change, it became necessary to replace the King's portrait on the notes, etc. with some emblem and the adoption of the crest of the Ashoka pillar was approved for the purpose. It was only incidental that the same crest of the Ashoka pillar with the Motto was later approved as the State Emblem of the Government of India".***

The Government of India by regulating the Emblem and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950, prevents and prohibits private use of the motto as this has been included in the State Emblem. It can only appear below the Ashokan Capital crest where the crest itself is permitted to be used.

भारत के राष्ट्रचिह्न संबंधी आदेश

राष्ट्रीय चिह्न का केवल सरकारी उद्देश्यों हेतु ही उपयोग किया जा सकता है, अर्थात् भारत सरकार के शासकीय उद्देश्यों तथा राज्य सरकार हेतु। नियमों के अनुसार अशोक शीर्ष अभिप्राय को शासकीय मुहरों पर निम्न द्वारा ही प्रयुक्त किया जा सकता है :

- भारत के राष्ट्रपति;
- केन्द्रीय सरकार के मंत्री तथा मंत्रालय;
- विदेश स्थित राजनयिक शिष्टमण्डल;
- राज्यों के राज्यपाल तथा प्रमुख आयुक्त; तथा
- राज्य सरकार के मंत्री और विभाग।

वैधानिक निकायों को राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। वे भिन्न शीर्षो को अपने हेतु अभिगृहीत कर सकते हैं।

मंत्रियों द्वारा अर्ध–शासकीय उपयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर नीले रंग से, जबकि इसी प्रकार की अधिकारियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर लाल रंग से राष्ट्रीय चिह्न अंकित होता है। कुछ विशेष रूप से उल्लेखित अधिकारियों, जिन्हें विदेशी सरकारों के साथ पत्र–व्यवहार करना होता है, उन्हें भी नीले रंग से अंकित राष्ट्रीय चिह्न से युक्त लेखन सामग्री का उपयोग करने की अनुमति है।

मंत्रियों तथा अधिकारियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर संबधित पदाधिकारी अथवा अधिकारी का नाम अंकित नहीं होना चाहिए।

संसद सदस्य भी राष्ट्रीय चिह्नांकित लेखन–सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। लोक सभा के सदस्यों के लिए हरा तथा राज्य सभा के सदस्यों हेतु लाल रंग निर्धारित किया गया है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय चिह्न के दो डिज़ाइन तैयार किए थे।

एक डिज़ाइन राष्ट्रीय चिह्न को छोटे आकार में प्रस्तुत करने हेतु, जैसे – अर्ध – शासकीय लेखन–सामग्री, मुहरों तथा डाई–मुद्रण हेतु है। राष्ट्रीय चिह्न की प्रस्तुति सही अर्थो में निर्धारित डिजाईनों के अनुसार ही होनी चाहिए।

सरकार की ओर से निम्न सामग्री पर राष्ट्रीय चिह्न के उपयोग की अनुमति हैः

- सरकारी प्रकाशन;
- भारत सरकार के फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्मादि;
- विदेशों में भारतीय शिष्ट मण्डलों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली कटलरी तथा क्रॉकरी (चीनी के बर्तन); तथा
- विदेशों में स्थित भारतीय शिष्ट मण्डलों के वर्ग – 4 के स्टाफ की वर्दी के मद

Orders relating to the National Emblem of India

The National Emblem can be used for Government purposes only, that is, for official purposes of the Government of India and the State Governments. Rules provide that the Ashokan capital motif can be used for their official seals only by :

i) The President of India;
ii) Ministers and Ministries of the Central Government;
iii) Diplomatic Missions abroad;
iv) Governors of States and Chief Commissioners; and
v) Ministers and Departments of the State Government.

Statutory bodies are not permitted to use the National Emblem. They can adopt distinct crests of their own for their use.

The stationery for demi-official use by the Ministers bears the National Emblem in blue whereas similar stationery for use by officers bears the Emblem in red. A few specified officers, who have to correspond with foreign Governments, have also been permitted to use stationery carrying the Emblem printed in blue.

The stationery used by Ministers and officers should not carry the name of the concerned dignitary or officer.

Members of Parliament can also use stationery bearing the National Emblem. The colour prescribed for members of the Lok Sabha is green and for members of the Rajya Sabha, red.

The Government of India had laid down two designs of the National Emblem. One design is for reproduction in small sizes e.g. for use in demi-official stationery seals and die-printing. Reproduction of the National Emblem must conform strictly to the prescribed designs.

The Government permits the use of the National Emblems on :
i) Government publications;
ii) Films produced by the Films Division of the Government of India;
iii) Crockery and cutlery used by Indian Missions abroad; and
iv) Items of uniform of class-IV staff of Indian Missions abroad.

The National Emblem can be used on Government House Vehicles, i.e. the vehicles of Rashtrapati Bhawan at the Centre and of Raj Bhavans in the States.

राष्ट्रीय चिह्न का सरकारी वाहनों, अर्थात् केन्द्र में राष्ट्रपति भवन के वाहनों तथा राज्यों में राज निवास के वाहनों पर उपयोग किया जा सकता है।

अशोक चक्र युक्त त्रिकोणाकार धातु पट्टिकाओं (जो राष्ट्रीय चिह्न का एक भाग है) का मंत्रियों (उप–मंत्रियों को छोड़ कर) की गाड़ियों पर उपयोग किया जा सकता है।

राष्ट्रीय चिह्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण भवनों पर ही प्रदर्शित किया जाता है, जैसे संसद भवन, सचिवालय, आदि।

अप्राधिकृत व्यक्ति तथा निकायों (संस्थाओं) को किसी भी उद्देश्य हेतु राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। खेल संस्थाओं तथा संघ को अपनी लेखन–सामग्री अथवा भुगतानकर्त्ताओं द्वारा तैयार कराई गई रंगीन जाकिटों पर राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। यह नियम मंत्रालयों की खेल संस्थाओं और सरकार के अन्य अधिकारियों पर लागू होता है।

चिह्न तथा नाम (अनुचित उपयोग की निषेधाज्ञाएं) अधिनियम, 1950 के अन्तर्गत व्यापार, वाणिज्य तथा व्यवसाय हेतु राष्ट्रीय चिह्न के उपयोग पर रोक है। उपरोक्त उद्देश्यों के लिए भारत सरकार की पूर्व अनुमति के बिना राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने वाले व्यक्ति अभियोग के जिम्मेदार हैं।

The triangular metal plaques incorporating *Ashoka Chakra* (which is a part of the National Emblem) can be used on the Cars of Ministers (except Deputy Ministers).

The National Emblem is displayed only on very important buildings like the Parliament House, the Secretariat, etc.

Unauthorised persons and bodies are not permitted to use the National Emblem for any purpose. Sports bodies and associations are not permitted to use the National Emblem either on their stationery or on the blazers of the players. This applies to sports bodies of Ministries and other offices of the Goverment.

The Emblem and Names (Preventions of Improper Use) Act, 1950, prohibits the use of the National Emblem for trade, business, or profession. Persons using the National Emblem for such purposes, without prior permission of the Government of India are liable to be prosecuted.

छात्रों तथा अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

जातक कथाओं, पंचतंत्र तथा हितोपदेश पर जानकारी तथा विविध विषय–वस्तुओं के संदर्भ में भारतीय कला की शिल्प कृतियों में प्रदर्शित पक्षियों तथा पशुओं के चित्र व फोटोग्राफ्ज भी एकत्रित कीजिए।

वैदिक काल से लेकर समकालीन काल तक एकाश्म *(मोनोलिथिक)* स्तम्भों के विकास को विविध रूपों व परिकल्पनाओं में प्रदर्शित करती एक फोटो प्रदर्शनी की कल्पना कर, तैयार कीजिए।

विविध भारतीय राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों के प्रतीक चिह्न का संग्रह कर इन प्रतीक चिह्न के अभिग्रहण (एडाप्शन) संबंधी जानकारी एकत्रित कीजिए।

विश्व भर की विभिन्न संस्कृतियों में जारी किए गए शैल आदेश पत्रों *(रॉक एडिक्ट्स)* के चित्र एकत्रित कीजिए।

"सत्यमेव जयति" किस प्रकार "सत्यमेव जयते" हो गया, इस पर विद्वानों/प्रसिद्ध व्यक्तियों/इतिहासकारों/राजनैतिक नेताओं के साथ चर्चा कीजिए।

पत्थर तथा धातु का कार्य करने वाले शिल्पकारों का साक्षात्कार करके उनकी कला, जीवन–शैली, कार्य सारणी की जानकारी लीजिए।

चट्टानों तथा ताड़ के पत्तों आदि पर लिखी गई प्राचीन भारतीय लिपि का अर्थ ढूंढिए।

पुरालेख शास्त्र के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों तथा व्यक्तियों के विषय में और अधिक जानने की चेष्टा कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Collect information on Jataka tales, Panchatantra and Hitopadesha. And also collect paintings, photos of sculptures in Indian art showing birds and animals in various themes.

Conceptualize and design a photo exhibition showing development of monolithic pillars from Vedic times till contemporary period in various forms and designs.

Make a collection of Emblems of various Indian States and Union Territories and the information on the adoption of these emblems.

Collect pictures of rock edicts made in different cultures all around the world and organise an exhibition.

Discuss with scholars/eminent people/historians/political leaders as to how *"Satyameva Jayati"* became *"Satyameva Jayate"*.

Interview the craftsmen working with stone, metal and glass and get information about their art, life style and work schedule.

Learn to decipher ancient Indian scripts used in rocks and palm leaves, etc.

Try to find more about the institutions and individuals/persons engaged in epigraphy.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

References

Agrawal, V.S., (1967), "Chakra-Dhvaj", New Delhi.

Brown, Percy, (1974), "Indian Architecture : Buddhist and Hindu", Bombay.

Marshall, John, "The Cambridge History of India".

Mookerji, Radhakumud, "Our National Insignia".

Mundaka Upanishad, (1990), Gorakhpur.

Radhakrishnan, S., (1953), Trans. "The Principal Upanishads", London.

Sahni, Daya Ram, (1914), "Catalogue of the Museum of Archaeology of Sarnath", Kolkata.

Sharma, B.R., "Chakra, The Symbol of eternity through the ages, Vishvesharanand Indological Journal", (March and September, 1970).

Sivaramamurti, C., (1967), "Our National Emblem", New Delhi.

Sivaramamurti, C., "The Art of India".

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

भारतीय झंडा संहिता

NATIONAL FLAG CODE

भारतीय झंडा संहिता

भारत का राष्ट्रीय झंडा, भारत के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिरूप है। यह हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। पिछले पांच दशकों में अनेक लोगों और सशस्त्र सैनिकों ने इस तिरंगे को पूर्ण गौरव के साथ फहराते रहने के लिए सहजता पूर्वक अपने जीवन का बलिदान दिया है।

राष्ट्रीय झंडे के रंगों और उसके मध्य मे चक्र के महत्व का यथेष्ट वर्णन डा० राधाकृष्णन द्वारा संविधान सभा में किया गया था। इस संविधान सभा ने सर्वसम्मति से राष्ट्रीय झंडे को स्वीकार किया था। डा० राधाकृष्णन ने स्पष्ट किया कि ''भगवा या केसरिया रंग त्याग या निःस्वार्थ भावना का प्रतीक है। हमारे नेतागणों को भौतिक सुखों से विरक्त तथा अपने कार्य के प्रति समर्पित होना चाहिए। झंडे के मध्य में सफेद रंग हमें सच्चाई के पथ पर चलने और अच्छे आचरण की प्रेरणा देता है। हरा रंग मिट्टी और वनस्पतियों के साथ हमारे संबंधों को उजागर करता है, जिन पर सभी प्राणियों का जीवन आश्रित है। सफेद रंग के मध्य में अशोक चक्र धर्म के राज का प्रतीक है। इस झंडे तले शासन करने वाले लोगों को सत्य, धर्म या नैतिकता के सिद्धांतो का पालन करना चाहिए। पुनश्च, चक्र प्रगति का प्रतीक है, जड़ता प्राणहीनता का प्रतीक है। चलना ही जिंदगी है। भारत को परिवर्तन की अनदेखी नहीं करनी है, अपितु आगे ही बढ़ना है। चक्र शान्तिपूर्ण परिवर्तन की गतिशीलता का प्रतीक है।''

सब के मन में राष्ट्रीय झंडे के लिए प्रेम, आदर और निष्ठा है। लेकिन प्रायः देखने में आया है कि राष्ट्रीय झंडे को फहराने के लिए जो नियम, रिवाज और औपचारिकाताएं हैं, उसकी जानकारी न तो आम जनता को है और न ही सरकारी संगठनों और एजेंसियों को। सरकार द्वारा समय–समय पर जारी असांविधिक निर्देशों, संप्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग का निवारण) अधिनियम, 1950 (1950 का सं. 12) तथा राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 (1971 का 69) के उपबंधों के तहत राष्ट्रीय झंडे का प्रदर्शन नियंत्रित होता है। सभी के मार्गदर्शन और हित के लिए भारतीय झंडा संहिता, 2002 में सभी नियमों, रिवाज़ों, औपचारिकताओं और निर्देशों को एक साथ लाने का प्रयास किया गया है।

सुविधा के लिए भारतीय झंडा संहिता, 2002 को तीन भागों में बांटा गया है। संहिता के भाग 1 में राष्ट्रीय झंडे के बारे में सामान्य विवरण दिया गया है। आम जनता, निजी संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों आदि द्वारा राष्ट्रीय झंडा फहराए जाने के बारे में संहिता के भाग 2 में विवरण दिया गया है। केन्द्र और राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों व एजेंसियों द्वारा राष्ट्रीय झंडा फहराए जाने का विवरण संहिता के भाग 3 में दिया गया है।

''झंडा संहिता–भारत'' के स्थान पर ''भारतीय झंडा संहिता, 2002'' को 26 जनवरी, 2002 से लागू किया गया है।

भाग–I

सामान्य

1.1 राष्ट्रीय झंडे पर तीन अलग–अलग रंगों की पट्टियां होंगी, जो समान चौड़ाई वाली तीन आयताकार पट्टियां होंगी। सबसे ऊपर भारतीय केसरी रंग की पट्टी होगी और सबसे नीचे भारतीय हरे रंग की पट्टी होगी। बीच की पट्टी सफेद रंग की होगी, जिसके बीचों बीच बराबर की दूरी पर नेवी ब्लू रंग में 24 धारियों वाला अशोक चक्र बना होगा। बेहतर होगा, यदि अशोक चक्र स्क्रीन से प्रिंट किया हुआ या अन्यथा छपा हुआ या स्टेंसिल किया हुआ या उचित रूप से कढ़ाई किया हुआ हो, जो सफेद पट्टी के बीच में झंडे के दोनों ओर स्पष्ट दिखाई देता हो।

1.2 भारत का राष्ट्रीय झंडा हाथ से काते गए और हाथ से बुने गए ऊनी/सूती/सिल्क खादी के कपड़े से बनाया गया हो।

1.3 राष्ट्रीय झंडे का आकार आयताकार होगा। झंडे की लंबाई और ऊंचाई (चौड़ाई) का अनुपात 3:2 होगा।

FLAG CODE OF INDIA

The Indian National Flag represents the hopes and aspirations of the people of India. It is the symbol of our national pride. Over the last five decades, several people including members of armed forces have ungrudgingly laid down their lives to keep the tricolour flying in its full glory.

There is universal affection and respect for, and loyalty to, the National Flag. Yet, a perceptible lack of awareness is often noticed, not only amongst people but also in the organisations/agencies of the government, in regard to laws, practices and conventions that apply to the display of the National Flag. Apart from non-statutory instructions issued by the Government from time to time, display of the National Flag is governed by the provisions of the Emblems and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950 (No. 12 of 1950) and the Prevention of Insults to National Honour Act, 1971 (No. 69 of 1971). Flag Code of India, 2002 is an attempt to bring together all such laws, conventions, practices and instructions for the guidance and benefit of all concerned.

For the sake of convenience, Flag Code of India, 2002, has been divided into three parts. Part I of the Code contains general description of the National Flag. Part II of the Code is devoted to the display of the National Flag by members of public, private organizations, educational institutions, etc. Part III of the Code relates to display of the National Flag by Central and State government and their organisations and agencies.

Flag Code of India, 2002, takes effect from January 26, 2002 and supersedes the 'Flag Code - India' as it existed.

PART-I

GENERAL

1.1 The National Flag shall be a tri-colour panel made up of three rectangular panels or sub-panels of equal widths. The colour of the top panel shall be India saffron (Kesari) and that of the bottom panel shall be India green. The middle panel shall be white, bearing at its centre the design of Ashoka Chakra in navy blue colour with 24 equally spaced spokes. The Ashoka Chakra shall preferably be screen printed or otherwise printed or stenciled or suitably embroidered and shall be completely visible on both sides of the Flag in the centre of the white panel.

1.2 The National Flag of India shall be made of hand spun and hand woven wool/cotton/ silk khadi bunting.

1.3 The National Flag shall be rectangular in shape. The ratio of the length to the height (width) of the Flag shall be 3:2.

1.4 The standard sizes of the National Flag shall be as follows:-

Flag Size No.	Dimensions in mm
1	6300 x 4200
2	3600 x 2400
3	2700 x1800
4	1800 x 1200
5	1350 x 900
6	900 x 600
7	450 x 300
8	225 x 150
9	150 x 100

1.4 राष्ट्रीय झंडे के मानक आकार निम्नलिखित होंगे :–

झंडे का आकार वर्ग	मिलीमीटरों में माप
1	6300 x 4200
2	3600 x 2400
3	2700 x 1800
4	1800 x 1200
5	1350 x 900
6	900 x 600
7	450 x 300
8	225 x 150
9	150 x 100

1.5 फहराने के लिए समुचित आकार के झंडे का चुनाव किया जाए। 450x300 मिलीमीटर आकार के झंडे अतिगणमान्य व्यक्तियों को ले जाने वाले हवाई जहाजों के लिए 225x150 मिलीमीटर आकार के झंडे मोटर कारों और 150x100 मिलीमीटर आकार के झंडे मेजों के लिए हैं।

भाग–II

आम जनता, गैर–सरकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थाओं आदि के द्वारा राष्ट्रीय झंडे का फहराया जाना/प्रदर्शन/प्रयोग

धारा–I

2.1 आम जनता, गैर–सरकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थाओं आदि के द्वारा राष्ट्रीय झंडे के प्रदर्शन पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा, सिवाय संप्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग का निवारण) अधिनियम, 1950* और राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 तथा इस विषय पर**

*** संप्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग का निवारण) अधिनियम, 1950**

धारा 2 : इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो:–

(क) 'संप्रतीक का अर्थ अनुसूची में विनिर्दिष्ट किसी चिह्न, मोहर, झंडा, तमगा, कोट–आफ–आर्म्स या चित्रात्मक स्वरूप से है;

धारा 3 : इस समय लागू किसी भी कानून में, कोई बात होते हुए भी कोई भी व्यक्ति, केन्द्र सरकार या सरकार के ऐसे अधिकारी, जिसे केन्द्र सरकार की ओर से प्राधिकृत किया जाए, की पूर्व अनुमति के बिना केन्द्रीय सरकार द्वारा यथा–निर्धारित ऐसे मामलों और ऐसी परिस्थितियों के सिवाय, किसी व्यापार, कारोबार, आजीविका का व्यवसाय के प्रयोजन के लिए, किसी पेटेंट के हक में या डिजाइन के किसी ट्रेड मार्क में, अनुसूची में विनिर्दिष्ट किसी नाम और चिह्न या उससे मिलती–जुलती किसी नकल के प्रयोजनों के लिए प्रयोग करना जारी नहीं रखेगा।

नोट : इस अधिनियम की अनुसूची में भारतीय राष्ट्रीय झंडे को एक संप्रतीक के रूप निर्धारित किया गया है।

****राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971**

धारा 2 : कोई भी व्यक्ति जो किसी सार्वजनिक स्थान पर या किसी भी ऐसे स्थान पर जो सार्वजनिक रूप से दृष्टिगोचर हो, भारतीय राष्ट्रीय झंडे या भारत के संविधान या उसके किसी भाग को जलाता है, विकृत करता है, विरूपित करता है, दूषित करता है, कुरूपिता करता है, कुचलता है या अन्यथा (मौखिक या लिखित शब्दों में अथवा कृत्यों द्वारा) अपमान करता है, उसे 3 वर्ष तक के कारावास से, या जुर्माने से, या दोनों से दंडित किया जाएगा।

स्पष्टीकरण 1– भारत के संविधान में संशोधन करने या विधिसम्मत तरीके से भारतीय राष्ट्रीय झंडे में परिवर्तन करने की दृष्टि से सरकार के किसी उपाय की आलोचना या अस्वीकृति व्यक्त करते हुए की गई कोई टिप्पणी इस धारा के अंतर्गत अपराध नहीं बनती।

स्पष्टीकरण 2– 'भारतीय राष्ट्रीय झंडे' की अभिव्यक्ति में कोई भी तस्वीर, पेंटिंग, ड्राईंग या फोटोग्राफ या भारतीय राष्ट्रीय झंडे या उसके किसी भाग या भागों का अन्य स्पष्ट चित्रण, जो किसी पदार्थ से बना हो या पदार्थ पर दर्शाया गया हो, शामिल है।

स्पष्टीकरण 3– 'सार्वजनिक स्थान' की अभिव्यक्ति के अर्थ में ऐसा कोई स्थान, जो जनता द्वारा उपयोग के लिए हो अथवा जहां जनता की पहुंच हो और इसमें कोई भी सार्वजनिक वाहन शामिल है।

1.5 An appropriate size should be chosen for display. The flags of 450x300 mm size are intended for aircrafts on VVIP flights, 225x150 mm size for motor-cars and 150x100 mm size for table flags.

PART-II

HOISTING/DISPLAY/USE OF NATIONAL FLAG BY MEMBERS OF PUBLIC, PRIVATE ORGANISATIONS, EDUCATIONAL INSTITUTIONS, ETC.

SECTION I

2.1 **There shall be no restriction on the display of the National Flag by members of general public, private organizations, educational institutions, etc.,** except to the extent provided in the Emblems and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950* and the Prevention of Insults to National Honour Act, 1971** and any other law enacted on the subject. Keeping in view the provisions of the aforementioned Acts-

(i) the Flag shall not be used for commercial purposes in violation of the Emblem and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950;

(ii) the Flag shall not be dipped in salute to any person or thing;

(iii) the Flag shall not be flown at half-mast except on occasions on which the Flag is flown at half-mast on public buildings in accordance with the instructions issued by the Government.

(iv) the Flag shall not be used as a drapery in any form whatsoever, including private funerals;

(v) the Flag shall bot be used as a portion of costume or uniform of any description nor shall it be embroidered or printed upon cushions, handkerchiefs, napkins or any dress material;

***The Emblems and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950.**

Section 2 : In this Act, unless the context otherwise requires:-
(a) "emblem" means any emblem, seal, flag, insignia, coat-of-arms or pictorial representation specified in the Schedule.

Section 3 : Notwithstanding anything contained in any law for the time being in force, no person shall, except in such cases and under such conditions as may be prescribed by the Central Government, use, or continue to use, for the purpose of any trade, business, calling or profession, or in the title of any patent, or in any trade mark of design, any name or emblem specified in the Schedule or any colourable imitation thereof without the previous permission of the Central Government or of such officer of Government as may be authorised in this behalf by the Central Government.

NOTE : The Indian National Flag has been specified as an emblem in the Schedule to the Act.

****The Prevention of Insults to National Honour Act, 1971**

Section 2 : Whoever in any public place or in any other place within public view burns, mutilates, defaces, defiles, disfigures, destroys, tramples upon or otherwise brings into contempt (whether by words, either spoken or written, or by acts) the Indian National Flag..... or any part thereof, shall be punished with imprisonment for a term which may extend to three years, or with fine, or with both.
Explanation 1. Comments expressing disapprobation or criticism of ..... the Indian National Flag or of any measures of the Government with a view to obtain.....or an alteration of the Indian National Flag by lawful means do not constitute an offence under this section.
Explanation 2. - The expression "Indian National Flag" includes any picture, painting, drawing or photograph, or other visible representation of the Indian National Flag, or of any part or parts there of, made of any substance or represented on any substance.
Explanation 3. - The expression "public place" means any place intended for use by or accessible to, the public and includes any public conveyance.

बनाए गए किसी अन्य कानून में बताए गए प्रतिबंध के उपर्युक्त अधिनियमों में की गई व्यवस्था के अनुसार निम्नलिखित बातों का ध्यान में रखा जाएगा :–

(i) झंडे का प्रयोग व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए किया जाएगा अन्यथा संप्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग का निवारण) अधिनियम, 1950 का उल्लंघन होगाः

(ii) किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देने के लिए झंडे को झुकाया नहीं जाएगा;

(iii) झंडे को आधा झुका कर नहीं फहराया जाएगा, सिवाय उन अवसरों के, जब सरकारी भवनों पर झंडे को आधा झुका फहराने के आदेश जारी किए गए हों;

(iv) झंडे को किसी भी रूप में लपेटने, जिसमें व्यक्तिगत शवयात्रा शामिल है, के काम में नहीं लाया जाएगा;

(v) किसी प्रकार की पोशाक या वर्दी के भाग में झंडे का प्रयोग नहीं किया जाएगा और न ही तकियों, रूमालों, नेपकिनों अथवा किसी ड्रेस सामग्री पर इसे काढ़ा अथवा मुद्रित किया जाएगा;

(vi) झंडे पर किसी प्रकार के अक्षर नहीं लिखे जाएंगे;

(vii) झंडे को किसी वस्तु को प्राप्त करने, देने, पकड़ने अथवा ले जाने पात्र के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा;

लेकिन विशेष अवसरों और राष्ट्रीय दिवसों पर जैसे गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस समारोह के अंग के रूप में झंडे को फहराए जाने से पूर्व उसमें फूलों की पंखुड़ियां रखने में कोई आपत्ति नहीं होगी;

(viii) किसी प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर झंडे को सम्मान के साथ और पृथक रूप से प्रदर्शित किया जाएगा और इसका प्रयोग अथवा स्मारक को ढकने के लिए नहीं किया जाएगा;

(ix) झंडे का प्रयोग न तो वक्ता की मेज को ढकने और न ही वक्ता के मंच को सजाने के लिए किया जाएगा;

(x) झंडे को जानबूझकर जमीन अथवा फर्श को छूने अथवा पानी में घसीटने नहीं दिया जाएगा;

(xi) झंडे को वाहन, रेलगाड़ी, नाव अथवा वायुयान की टोपदार छत, ऊपर बगल अथवा पीछे से ढकने के काम में नहीं लाया जाएगा;

(xii) झंडे का प्रयोग किसी भवन में परदा लगाने के लिए नहीं किया जाएगा और

(xiii) झंडे को जानबूझकर ''केसरिया'' रंग को नीचे प्रदर्शित करके नहीं फहराया जाएगा।

2.2 जनता का कोई भी व्यक्ति, कोई भी गैर–सरकारी संगठन अथवा कोई भी शिक्षा संस्था राष्ट्रीय झंडे को सभी दिनों और अवसरों, औपचारिकताओं या अन्य अवसरों पर फहरा/प्रदर्शित कर सकता है। राष्ट्रीय झंडे की मर्यादा रखने और उसे सम्मान प्रदान करने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाए :–

(i) जब कभी राष्ट्रीय झंडे फहराया जाए तो उसकी स्थिति सम्मानजनक और पृथक होनी चाहिए;

(ii) फटा हुआ या मैला–कुचैला झंडा प्रदर्शित नहीं किया जाए;

(iii) झंडे को किसी अन्य झंडे अथवा झंडों के साथ एक ही ध्वज–दंड से नहीं फहराया जाए;

(iv) संहिता के भाग–III की धारा IX में की गई व्यवस्था के सिवाय झंडे को किसी वाहन पर नहीं फहराया जाएगा;

(v) यदि झंडे का प्रदर्शन सभी मंच पर किया जाता है, तो उसे इस प्रकार फहराया जाना चाहिए कि जब वक्ता का मुंह श्रोताओं की ओर हो तो झंडा उनके दाहिनी ओर रहे अथवा झंडे को वक्ता के पीछे दीवार के साथ और उससे ऊपर लेटी हुई स्थिति मे प्रदर्शित किया जाए;

(vi) जब झंडे का प्रदर्शन किसी दीवार के सहारे, लेटी हुई और समतल स्थिति में किया जाता है तो केसरिया भाग सबसे ऊपर रहना चाहिए और जब वह लम्बाई में फहराया जाए तो केसरी भाग झंडे के हिसाब से दाईं ओर होगा (अर्थात् झंडे को सामने से देखने वाले व्यक्ति के बाईं ओर);

(vii) जहां तक सम्भव हो झंडे का आकार इस संहिता के भाग–I में निर्धारित किए गए मानकों के अनुरूप होना चाहिए;

(viii) किसी दूसरे झंडे या पताका को राष्ट्रीय झंडे से ऊचा या उससे ऊपर या उसके बराबर में नहीं लगाया जाए और न ही पुष्प, माला, प्रतीक या अन्य कोई वस्तु उसके ध्वज–दंड के ऊपर रखी जाए;

(vi) lettering of any kind shall not be put upon the Flag;

(vii) the Flag shall not be used as a receptacle for receiving, delivering, holding or carrying anything;

provided that there shall be no objection to keeping flower petals inside the Flag before it is unfurled as part of celebrations on special occasions and on National Days like the Republic Day and the Independence Day;

(viii) when used on occasions like unveiling of a statue, the Flag shall be displayed distinctly and separately and it shall not be used as a covering for the statue or monument;

(ix) the Flag shall not be used to cover a speaker's desk nor shall it be draped over a speaker's platform;

(x) the Flag shall not be intentionally allowed to touch the ground or the floor or trail in water.

(xi) the Flag shall not be draped over the hood, top, sides or back of a vehicle, train boat or an aircraft;

(xii) the Flag shall not be used as a covering for a building; and

(xiii) the Flag shall not be intentionally displayed with the "saffron" down.

2.2 A member of public, a private organization or an educational institution may hoist/ display the National Flag on all days and occasions, ceremonial or otherwise. Consistent with the dignity and honour of the National Flag -

(i) whenever the National Flag is displayed, it should occupy the position of honour and should be distinctly placed;

(ii) a damaged or dishevelled Flag should not be displayed;

(iii) the Flag should not be flown from a single masthead simultaneously with any other flag or flags;

(iv) the Flag should not be flown on any vehicle except in accordance with the provisions contained in Section IX of Part III of this Code;

(v) when the Flag is displayed on a speaker's platform, it should be flown on the speaker's right as he faces the audience or flat against the wall, above and behind the speaker;

(vi) when the Flag is displayed flat and horizontal on a wall, the saffron band should be upper most and when displayed vertically, the saffron band shall be on the right with reference to the Flag (i.e. left to the person facing the Flag);

(vii) to the extent possible, the Flag should conform to the specifications prescribed in Part-I of this Code.

(viii) no other Flag or bunting should be placed higher than or above or side by side with the National Flag; nor should any object including flowers or garlands or emblem be placed on or above the Flag-mast from which the Flag is flown;

(ix) the Flag should not be used as a festoon, rosette or bunting or in any other manner for decoration;

(x) the Flag made of paper may be waved by public on occasions of important national, cultural and sport events. However, such paper Flags should not be discarded or thrown on the ground after the event. As far as possible it should be disposed of in private consistent with the dignity of the Flag;

(ix) फूलों का गुच्छा या पताका या बन्दनवार बनाने या किसी अन्य प्रकार की सजावट के लिए झंडे का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा;

(x) जनता द्वारा कागज के बने झंडों को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और खेलकूद के अवसरों पर हाथ में लेकर हिलाया जा सकता है। परन्तु ऐसे कागज के झंडों को समारोह पूरा होने के पश्चात् न तो विकृत किया जाएगा और न ही जमीन पर फेंका जाएगा। जहां तक सम्भव हो, ऐसे झंडों का निपटान उनकी मर्यादा के अनुरूप एकान्त में किया जाए;

(xi) जहां झंडे का प्रदर्शन खुले में किया जाता है, वहां मौसम को ध्यान में रखे बिना उसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिए;

(xii) झंडे का प्रदर्शन इस प्रकार बांधकर न किया जाए, जिससे कि वह फट जाए; और

(xiii) जब झंडा फट जाए या मैला हो जाए तो उसे एकान्त में पूरा नष्ट कर दिया जाए। बेहतर होगा यदि उसे जलाकर या उसकी मर्यादा के अनुकूल किसी अन्य तरीके से नष्ट कर दिया जाए।

धारा II

2.3 शौक्षिक संस्थाओं (स्कूल, कालेज, खेल शिविर, स्काऊट शिविर आदि) में राष्ट्रीय झंडा फहराया जाए, ताकि मन से झंडे का सम्मान करने के लिए प्रेरणा दी जा सके। मार्गदर्शन के लिए हिदायतें नीचे दी गई हैं :–

(i) स्कूल के विद्यार्थी इकट्ठे होकर एक खुला वर्गाकार बनायेंगे। इस वर्ग में तीन तरफ विद्यार्थी खड़े होंगे और चौथी तरफ बीच में झंडा होगा। प्रधानाध्यापक, मुख्य छात्र और झंडे को फहराने वाला व्यक्ति (यदि वह प्रधानाध्यापक के अलावा कोई दूसरा हो) झंडे से तीन कदम पीछे खड़े होंगे।

(ii) छात्र कक्षाक्रम से दस–दस के दल में (अथवा कुल संख्या के अनुसार किसी दूसरे हिसाब से) खड़े होंगे और वे एक दल के पीछे दूसरे दल के क्रम में रहेंगे। कक्षा का मुख्य छात्र अपनी कक्षा की पहली पंक्ति की दाईं ओर खड़ा होगा और कक्षा अध्यापक अपनी कक्षा की अंतिम पंक्ति से तीन कदम पीछे बीच में खड़ा होगा। कक्षाएं वर्गाकार में इस प्रकार खड़ी होंगी कि सबसे बड़ी कक्षा सबसे दाईं ओर रहेगी और उसके बाद वरिष्ठता क्रम से अन्य कक्षाएं खड़ी होंगी।

(iii) हर पंक्ति के बीच कम से कम एक कदम (30इंच) का फासला होना चाहिए और हर कक्षा के बीच में समान फासला होना चाहिए।

(iv) जब हर कक्षा तैयार हो जाए, तो कक्षा का नेता आगे बढ़कर स्कूल के चुने हुए छात्र–नेता का अभिवादन करेगा। जब सारी कक्षाएं तैयार हो जाएं तो स्कूल का छात्र–नेता प्रधानाध्यापक की ओर बढ़कर उनका अभिवादन करेगा। प्रधानाध्यापक अभिवादन का उत्तर देगा। इसके बाद झंडा फहराया जाएगा। इसमें स्कूल का छात्र–नेता सहायता कर सकता है।

(v) स्कूल का छात्र–नेता, जिसे परेड (या सभा) का भार सौंपा गया है, झंडा फहराने के ठीक पहले परेड को सावधान (अटेंशन) हो जाने की आज्ञा देगा और झंडे के लहराने पर परेड को झंडे को सलामी देने की आज्ञा देगा। परेड कुछ देर तक सलामी की अवस्था में रहेगी और फिर ''कमान'' आदेश पाने पर सावधान (अटेंशन) की अवस्था में आ जाएगी।

(vi) झंडे को सलामी देने के बाद राष्ट्रगान होगा। इस कार्यनक्रम के दौरान परेड सावधान (अटेंशन) की अवस्था में रहेगी।

(vii) शपथ लेने के सभी अवसरों पर शपथ राष्ट्र गान के बाद ली जाएगी। शपथ लेने के समय सभा सावधान (अटेंशन) की अवस्था में खड़ी रहेगी। प्रधानाध्यापक शपथ पढ़ेंगे और सभा उसको दोहराएगी।

(viii) स्कूलों में राष्ट्रीय झंडे के प्रति निष्ठा की शपथ लेते समय निम्नलिखित कार्यप्रणाली अपनाई जाएगी :–

सभी हाथ जोड़कर खड़े होंगे और निम्नलिखित शपथ दोहराएंगे :–

''मैं राष्ट्रीय झंडे और लोकतंत्रात्मक संपूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न समाजवादी पंथ–निरपेक्ष गणराज्य की प्रति निष्ठा की शपथ लेता/लेती हूं, जिसका यह झंडा प्रतीक है।''

(xi) where the Flag is displayed in open, it should, as far as possible, be flown from sunrise to sunset, irrespective of weather conditions;

(xii) the Flag should not be displayed or fastened in any manner as may damage it; and

(xiii) when the Flag is in a damaged or soiled condition, it shall be destroyed as a whole in private, preferably by burning or by any other method consistent with the dignity of the Flag.

SECTION II

2.3 The National Flag may be hoisted in educational institutions (schools, colleges, sports camps, scout camps, etc.) to inspire respect for the Flag. A model set of instructions for guidance is given below -

(i) The School will assemble in open square formation with pupils forming the three sides and the Flag-staff at the centre of the fourth side. The Headmaster, the pupil leader and the person unfurling the Flag (if other than the Headmaster) will stand three paces behind the Flag-staff.

(ii) The pupils will fall according to classes and in squads of ten (or other number according to strength). These squads will be arranged one behind the other. The pupil leader of the class will stand to the right of the first row of his class and the form master will stand three paces behind the last row of his class, towards the middle. The classes will be arranged along the square in the order of seniority with the seniormost class at the right end.

(iii) The distance between each row should be at least one pace (30 inches); and the space between Form and Form should be the same.

(iv) When each Form or Class is ready, the Class leader will step forward and salute the selected school pupil leader. As soon as all the Forms are ready, the school pupil leader will step up to the Headmaster and salute him. The Headmaster will return the salute. Then, the Flag will be unfurled. The School pupil leader may assist.

(v) The School pupil leader in charges of the parade (or assembly) will call the parade to attention, just before the unfurling, and he will call them to the salute when the Flag flies out. The parade will keep at the salute for a brief interval, and then on the command "order", the parade will come to the attention position.

(vi) The Flag Salutation will be followed by the National Anthem. The parade will be kept at the attention during this part of the function.

(vii) On all occasions when the pledge is taken, the pledge will follow the National Anthem. When taking the pledge the Assembly will stand to attention and the Headmaster will administer the pledge ceremoniously and the Assembly will repeat it after him.

(viii) In pledging allegiance to the National Flag, the practice to be adopted in Schools is as follows:-

Standing with folded hands, all repeat together the following pledge:

"I pledge allegiance to the National Flag and to the Sovereign Socialist Secular Democratic Republic for which it stands."

भाग–III

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों और एजेंसियों द्वारा राष्ट्रीय झंडे का फहराया जाना/प्रदर्शन

धारा I

रक्षा प्रतिष्ठानों द्वारा तथा दूतावासों/कार्यालयों के प्रमुखों द्वारा झंडा फहराया जाना

3.1 राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए जिन रक्षा प्रतिष्ठानों के अपने नियम हैं, उन पर इस भाग में की गयी व्यवस्था लागू नहीं होंगी।

3.2 राष्ट्रीय झंडा विदेश स्थित उन दूतावासों/कार्यालयों के मुख्यालयों और उनके प्रमुखों के आवासों पर भी फहराया जा सकता है, जहां राजनयिक और कोंसुलर प्रतिनिधियों के लिए अपने मुख्यालयों तथा सरकारी आवासों पर अपने राष्ट्रीय झंडें का फहराए जाने का प्रचलन है।

धारा II

झंडे का सरकारी तौर पर फहराया जाना

3.3 उपर्युक्त धारा 1 में उल्लिखित व्यवस्था के अध्यधीन सभी सरकारों तथा उनके संगठनों/एजेंसियों के लिए इस भाग में की गई व्यवस्था का पालन करना अनिवार्य होगा।

3.4 सरकारी तौर पर झंडा फहराये जाने के सभी अवसरों पर केवल उसी झंडे का प्रयोग किया जाएगा जो भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप हो और जिस पर ब्यूरो का मानक चिह्न लगा हो। दूसरे अवसरों पर भी समुचित आकार के ऐसे ही झंडे फहराना वांछनीय होगा।

धारा III

झंडा फहराने का सही तरीका

3.5 जब भी झंडा फहराया जाए तो उसे सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए और उसे ऐसी जगह पर लगाना चाहिए, जहां वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे।

3.6 यदि किसी सरकारी भवन पर झंडा फहराने का प्रचलन है तो उस भवन पर हर रविवार और छुट्टियों में भी सभी दिन फहराया जाएगा और, इस संहिता में की गई व्यवस्था के अतिरिक्त इसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाएगा, चाहे मौसम कैसा भी क्यों न हो। ऐसे भवन पर रात को भी झंडा फहराया जा सकता है किन्तु ऐसा केवल विशेष अवसरों पर ही किया जाना चाहिए।

3.7 झंडे को सदा स्फूर्ति से फहराया जाए, और धीरे–धीरे एवं आदर के साथ उतारा जाए। जब झंडे को फहराते समय और उतारते सयम बिगुल बजाया जाता है तो इस बात का ध्यान रखा जाए कि झंडे को बिगुल की आवाज के साथ ही फहराया जाए, और उतारा जाए।

3.8 जब झंडा किसी भवन की खिड़की, बालकनी या अगले हिस्से से आड़ा या तिरछा फहराया जाए तो झंडे की केसरी पट्टी सबसे दूर वाले सिरे पर होगी।

3.9 जब झंडे का प्रदर्शन किसी दीवार के सहारे आड़ा और चौड़ाई में किया जाता है तो केसरी पट्टी सबसे ऊपर रहेगी और जब वह लम्बाई में फहराया जाए, तो केसरी पट्टी झंडे के हिसाब से दाईं ओर होगी अर्थात् वह झंडे को सामने से देखने वाले व्यक्ति के बाईं ओर होगी।

3.10 यदि झंडे का प्रदर्शन सभा मंच पर किया जाता हे तो उसे इस प्रकार फहराया जाएगा कि जब वक्ता का मुँह श्रोताओं की ओर हो तो झंडा उनके दाहिने ओर रहे; अथवा झंडे को दीवार के साथ वक्ता के पीछे और उससे ऊपर आड़ा फहराया जाए।

3.11 किसी प्रतीमा के अनावरण के अवसर पर झंडे को सम्मान के साथ और पृथक रूप से प्रदर्शित किया जाए।

3.12 जब झंडा किसी मोटर कार पर लगाया जाता है तो उसे बोनट के आगे बीचोंबीच या कार के आगे दाईं ओर कसकर लगाये हुए एक डंडे (स्टाफ) पर फहराया जाए।

PART-III

HOISTING/DISPLAY OF THE NATIONAL FLAG BY THE CENTRAL AND STATE GOVERNMENTS AND THEIR ORGANISATIONS AND AGENCIES.

SECTION I

DEFENCE INSTALLATIONS/HEADS OF MISSIONS/POSTS

3.1 The provisions of this Part shall not apply to Defence Installations that have their own rule for display of the National Flag.

3.2 The National Flag may also be flown on the Headquarters and the residences of the Heads of Missions/Posts abroad in the countries where it is customary for diplomatic and consular representatives to fly their National Flags on the Headquarters and their official residences.

SECTION II

OFFICIAL DISPLAY

3.3 Subject to the provisions contained in Section I above, it shall be mandatory for all Governments and their organisations/agencies to follow the provisions contained in this Part.

3.4 On all occasions for official display, only the Flag conforming to specifications laid down by the Bureau of Indian Standards, and bearing their standard mark shall be used. On other occasions also, it is desirable that only such Flags of appropriate size are flown.

SECTION III

CORRECT DISPLAY

3.5 Wherever the Flag is flown, it should occupy the position of honour and be distinctly placed.

3.6 Where the practice is to fly the Flag on any public building, it shall be flown on that building on all days including Sundays and holidays and, except as provided in this Code, it shall be flown from sun-rise to sun-set irrespective of weather conditions. The Flag may be flown on such a building at night also but this should be only on very special occasions.

3.7 The Flag shall always be hoisted briskly and lowered slowly and ceremoniously. When the hoisting and the lowering of the Flag is accompanied by appropriate bugle calls, the hoisting and lowering should be simultaneous with the bugle calls.

3.8 When the Flag is displayed from a staff projecting horizontally or at an angle from a windowsill, balcony, or front of a building, the saffron band shall be at the farther end of the staff.

3.9 When the Flag is displayed flat and horizontal on a wall, the saffron band shall be upper most and when displayed vertically, the saffron band shall be to the right with reference to the Flag, i.e., it may be to the left of a person facing it.

3.10 When the Flag is on a speaker's platform, it shall be flown on a staff on the speaker's right as he faces the audience or flat against the wall above and behind the speaker.

3.11 When used on occasions like the unveiling of a statue, the Flag shall be displayed distinctly and separately.

3.12 When the Flag is displayed alone on a motor car, it shall be flown from a staff, which should be affixed firmly either on the middle front of the bonnet or to the front right side of the car.

3.13 जब झंडा किसी जुलूस या परेड में ले जाया जा रहा हो तो वह मार्च करने वालों के दाई ओर अर्थात् झंडे के भी दाहिनी ओर रहेगा या यदि दूसरे झंडों की भी कोई लाइन हो तो राष्ट्रीय झंडा उस लाइन के मध्य में आगे होगा।

धारा IV

झंडा फहराने के गलत तरीके

3.14 फटा या मैला कुचैला झंडा नहीं फहराया जाएगा।

3.15 किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देने के लिए झंडे को झुकाया नहीं जाएगा।

3.16 किसी दूसरे झंडे या पताका को राष्ट्रीय झंडे से ऊंचा या ऊपर नहीं लगाया जाएगा, और आगे बताई गई व्यवस्था को छोड़कर, राष्ट्रीय झंडे के बराबर में भी नहीं रखा जाएगा; और न ही कोई दूसरी वस्तु उस ध्वज–दंड के ऊपर रखी जाएगी, जिस पर झंडा फहराया जाता है। इन वस्तुओं में फूल अथवा मालाएं अथवा प्रतीक भी शामिल है।

3.17 फूलों का गुच्छा या झंडियां या बन्दनवार बनाने या किसी दूसरे प्रकार की सजावट के लिए झंडे का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।

3.18 झंडे का प्रयोग न तो वक्ता की मेज को ढकने के लिए और न ही वक्ता के मंच को सजाने के लिए किया जाएगा।

3.19 'केसरी' पट्टी को नीचे रखकर झंडा नहीं फहराया जाएगा।

3.20 झंडे को जमीन, या फर्श छूने या पानी में घसीटने नहीं दिया जाएगा।

3.21 झंडे का प्रदर्शन इस प्रकार बांधकर नहीं किया जाएगा, जिससे कि वह फट जाए।

धारा V
झंडे का दुरुपयोग

3.22 राजकीय/सैन्य/केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों से सम्बन्धित शवयात्राओं, जिनके सम्बन्ध में आगे व्यवस्था की गई है, को छोड़कर झंडे का प्रयोग किसी भी रूप में लपेटने के लिए नहीं किया जाएगा।

3.23 झंडे को वाहन, रेलगाड़ी अथवा नाव की टोपदार छत, बगल अथवा पिछले भाग को ढकने के काम में नहीं लाया जाएगा।

3.24 झंडे का प्रयोग इस प्रकार से नहीं किया जाएगा या उसे इस प्रकार नहीं रखा जाएगा कि वह फट जाए या मैला हो जाए।

3.25 जब झंडा फट जाए या मैला हो जाए, तो उसे फेंका नहीं जाएगा और न ही अनादरपूर्वक उसका निपटान किया जाएगा, बल्कि झंडे को एकांत में पूरा नष्ट कर देना चाहिए। बेहतर होगा यदि उसे जलाकर या उसकी मर्यादा के अनुकूल किसी दूसरे तरीके से नष्ट कर दिया जाए।

3.26 झंडे का प्रयोग किसी भवन में पर्दा लगाने के लिए नहीं किया जाएगा।

3.27 किसी प्रकार की पोशाक या वर्दी के भाग के रूप में झंडे का प्रयोग नहीं किया जाएगा। इसे गद्दियों, रूमालों, बक्सों अथवा नेपकीनों पर काढ़ा या छापा नहीं जाएगा।

3.28 झंडे पर किसी प्रकार के अक्षर नहीं लिखे जाएंगे।

3.29 किसी भी प्रकार के विज्ञापन के रूप में झंडे का प्रयोग नहीं किया जाएगा और न ही उस डंडे पर कोई विज्ञापन लगाया जाएगा जिस पर कि झंडा फहराया जा रहा हो।

3.30 झंडे को किसी वस्तु को प्राप्त करने, देने, पकड़ने या ले जाने वाले पात्र के रूप में प्रयोग नहीं किया जाएगा।

लेकिन विशेष अवसरों तथा गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय दिवसों पर समारोह के एक अंग के रूप में झंडे को फहराए जाने से पूर्व उसमे फूलों की पंखुड़ियां रखे जाने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

3.13 When the Flag is carried in a procession or a parade, it shall be either on the marching right, i.e., the Flag's own right, or if there is a line of other flags, in front of the centre of the line.

SECTION IV

INCORRECT DISPLAY

3.14 A damage or disheveled Flag shall not be displayed.

3.15 The Flag shall not be dipped in salute to any person or thing.

3.16 No other Flag or bunting shall be placed higher than or above or, except as hereinafter provided, side by side with the National Flag; nor shall any object including flowers or garlands or emblem be placed on or above the Flag-mast from which the Flag is flown.

3.17 The Flag shall not be used as a festoon, rosette or bunting or in any other manner for decoration.

3.18 The Flag shall not be used to cover a speaker's desk nor shall it be draped over a speaker's platform.

3.19 The Flag shall not be displayed with the "saffron" down.

3.20 The Flag shall not be allowed to touch the ground or the floor or trail in water.

3.21 The Flag shall not be displayed or fastened in any manner as may damage it.

SECTION V

MISUSE

3.22 The Flag shall not be used as a drapery in any form whatsoever except in State/Military/ Central Para military Forces funerals hereinafter provided.

3.23 The Flag shall not be draped over the hood, top, sides or back of a vehicle, train or boat.

3.24 The Flag shall not be used or stored in such a manner as may damage or soil it.

3.25 When the Flag is in a damaged or soiled condition, it shall not be cast aside or disrespectfully disposed of but shall be destroyed as a whole in private, preferably by burning or by any other method consistent with the dignity of the Flag.

3.26 The Flag shall not be used as a covering for a building.

3.27 The Flag shall not be used as a portion of a costume or uniform of any description. It shall not be embroidered or printed upon cushions, handkerchiefs, napkins or boxes.

3.28 Lettering of any kind shall not be put upon the Flag.

3.29 The Flag shall not be used in any form of advertisement nor shall an advertising sign be fastened to the pole from which the Flag is flown.

3.30 The Flag shall not be used as a receptacle for receiving, delivering, holding or carrying anything.

Provided that there shall be no objection to keeping flower petals inside the Flag before it is unfurled, as part of celebrations on special occasions and on National Days like the Republic Day and the Independence Day.

SECTION VI

SALUTE

3.31 During the ceremony of hoisting or lowering the Flag or when the Flag is passing in a parade or in a review, all persons present should face the Flag and stand at attention. Those present in uniform should render the appropriate salute. When the Flag is in a moving column, persons present will stand at attention or salute as the Flag passes them. A dignitary may take the salute without a head dress.

धारा VI
झंडे को सलामी

3.31 झंडे को फहराते समय या उतारते समय या झंडे को परेड में या किसी निरीक्षण के अवसर पर ले जाते समय वहां पर उपस्थित सभी लोग झंडे की ओर मुंह करके सावधान (अटैंशन) की अवस्था में खड़े होंगे। वर्दी पहने हुए व्यक्ति समुचित ढंग से सलामी देंगे। जब झंडा जा रही सैन्य टुकड़ी के साथ हो तो उपस्थित व्यक्ति सावधान खड़े होंगे या जब झंडा उनके पास से गुजरे तो वे उसको सलामी देंगे। गणमान्य व्यक्ति सिर पर कोई वस्त्र पहने बिना भी सलामी ले सकते हैं।

धारा VII
राष्ट्रीय झंडे का दूसरे राष्ट्रों के झंडों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के झंडे के साथ फहराया जाना

3.32 जब राष्ट्रीय झंडा दूसरे राष्ट्रों के झंडों के साथ एक ही पंक्ति में फहराया जाए तो उसे सबसे दाईं ओर रखा जाएगा, अर्थात, यदि कोई पर्यवेक्षक झंडों की पंक्ति के बीच में श्रोताओं की ओर मुख करके खड़ा होता है तो राष्ट्रीय झंडा उसके सबसे दाईं ओर होगा। यह स्थिति नीचे क चित्र में स्पष्ट की गई है :–

3.33 राष्ट्रीय झंडे के बाद दूसरे राष्ट्रों के झंडे संबंधित राष्ट्रों के नामों के अंग्रेजी वर्णक्रम के अनुसार लगाए जाएंगे। ऐसे मामले में राष्ट्रीय झंडे को झंडों की पंक्ति के शुरू में, नाम के अंग्रेजी वर्णक्रम के अनुसार झंडों की पंक्ति के मध्य में और पंक्ति के अन्त में भी लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय झंडा सबसे पहले फहराया जाएगा और सबसे बाद में उतारा जाएगा।

3.34 यदि झंडों को खुले गोलाकार में, अर्थात – अर्धगोलाकार में फहराया जाता है तो इस धारा के पिछले खंड में बताई गई कार्यविधि ही अपनाई जाएगी। यदि झंडे एक पूर्ण गोलाकार में फहराए जाते हैं तो आंरभ में राष्ट्रीय झंडा लगाया जाएगा और दूसरे राष्ट्रों के झंडे घड़ी की सुई के दिशाक्रम में इस प्रकार रखे जाएंगे कि अन्तिम झंडा राष्ट्रीय झंडे तक आ जाए। गोलाई का आरंभ और अन्त दर्शाने के लिए दूसरा राष्ट्रीय झंडा लगाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे बन्द गोलाकार में वर्णक्रम के अनुसार अपने स्थान पर भी राष्ट्रीय झंडे को लगाया जाएगा।

SECTION VII

DISPLAY WITH FLAGS OF OTHER NATIONS AND OF UNITED NATIONS

3.32 When displayed in a straight line with flags of other countries, the National Flag shall be on the extreme right; i.e. if an observer were to stand in the centre of the row of the flags facing the audience, the National Flag should be to his extreme right. The position is illustrated in the diagram on page no. 14.

3.33 Flags of foreign countries shall proceed as from the National Flag in alphabetical order on the basis of English versions of the names of the countries concerned. It would be permissible in such a case to begin and also to end the row of flags with the National Flag and also to include National Flag in the normal countrywise alphabetical order. The National Flag shall be hoisted first and lowered last.

3.34 In case flags are to be flown in an open circle i.e., in an arc or a semi-circle, the same procedure shall be adopted as is indicated in the preceding clause of this Section. In case flags are to be flown in a closed, i.e., complete circle, the National Flag shall mark the beginning of the circle and the flags of other countries should proceed in a clockwise manner until the last flag is placed next to the National Flag. It is not necessary to use separate National Flags to mark the beginning and the end of the circle of flags. The National Flag shall also be included in its alphabetical order in such a closed circle.

3.35 When the National Flag is displayed against a wall with another flag from crossed staffs, the National Flag shall be on the right i.e. the Flag's own right, and its staff shall be in front of the staff of the other flag. The position is illustrated in the diagram below :-

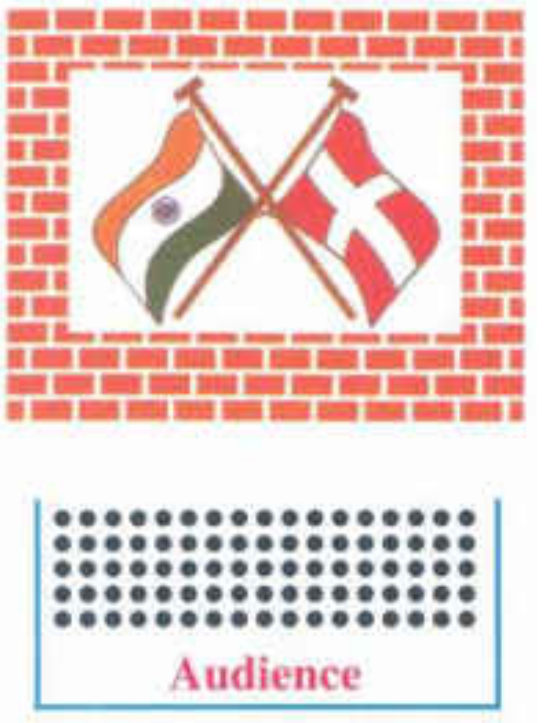

3.35 जब राष्ट्रीय झंडा और कोई दूसरा झंडा एक साथ किसी दीवार पर दो ऐसे डंडों पर फहराये जाएं, जो एक–दूसरे को क्रास करते हों, तो राष्ट्रीय झंडा दायीं ओर अर्थात झंडे की अपनी दाईं ओर होगा और उसका डंडा दूसरे डंडे के ऊपर रहेगा। यह स्थिति पृष्ठ सं० 15 के चित्र में स्पष्ट की गई है।

3.36 जब संयुक्त राष्ट्र संघ का झंडा राष्ट्रीय झंडे के साथ फहराया जाता है तो वह राष्ट्रीय झंडे के किसी भी ओर लगाया जा सकता है। सामान्यतः राष्ट्रीय झंडे को इस प्रकार फहराया जाता है कि वह अपने सामने वाली दिशा के हिसाब से अपने एकदम दाईं ओर होता है, (अर्थात् झंडा फहराने के समय झंडे की ओर मुख किए हुए व्यक्ति के एकदम बाईं ओर) यह स्थिति नीचे के चित्र में स्पष्ट की गई है :–

3.37 जब राष्ट्रीय झंडा दूसरे राष्ट्रों के साथ फहराया जाए तो सारे झंडो के ध्वज–दंड समान आकार के होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार शान्ति काल में किसी एक राष्ट्र के झंडे को दूसरे राष्ट्र के झंडे से ऊंचा नहीं फहराया जाता है।

3.38 राष्ट्रीय झंडा एक ही समय में किसी दूसरे झंडों के साथ एक ही ध्वज–दंड से नहीं फहराया जाएगा। अलग–अलग झंडों के लिए अलग–अलग ध्वज–दंड होंगे।

धारा VIII

सरकारी भवनों एवं आवासों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाना

3.39 सामान्यतः उच्च न्यायालयों, सचिवालयों, कमिश्नरों के कार्यालयों, जिला कचहरियों, जेलों तथा जिला बोर्ड के कार्यालयों, नगर पालिकाओं, जिला परिषदों तथा विभागीय/सरकारी उपक्रमों के कार्यालयों जैसे महत्वपूर्ण सरकारी भवनों पर ही झंडा फहराया जाना चाहिए।

3.40 सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमा–शुल्क चौकियों, जांच चौकियों (चेकपोस्ट), सीमा चौकियों (आउट पोस्ट) और अन्य ऐसी खास जगहों पर, जहां कि झंडा फहराने का विशेष महत्व है, राष्ट्रीय झंडा फहराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, सीमावर्ती गश्ती दलों (बार्डर पेट्रोल) के शिविरों पर झंडा फहराया जा सकता है।

3.36 When the United Nation's Flag is flown along with the National Flag , it can be displayed on either side of the National Flag. The general practice is to fly the National Flag on the extreme right with reference to the direction which it is facing (i.e., extreme left of an observer facing the masts flying the Flags). The position is illustrated in the diagram on page no. 16.

3.37 When the National Flag is flown with flags of other countries, the flag masts shall be of equal size. International usage forbids the display of the flag of one nation above that of another in time of peace.

3.38 The National Flag shall not be flown from a single mast head simultaneously with any other flag or flags. There shall be separate mast-heads for different flags.

SECTION VIII

DISPLAY OVER PUBLIC BUILDINGS/OFFICIAL RESIDENCES

3.39 Normally the National Flag should be flown only on important public buildings such as High Courts, Secretariats, Commissioners' Offices, Collectorates, Jails and offices of the District Boards, Municipalities and Zilla Parishads and Departmental/Public Sector Undertakings.

3.40 In frontier areas, the National Flag may be flown on the border customs posts, check posts, out posts and at other special places where flying of the Flag has special significance. In addition, it may be flown on the camp sites of border patrols.

3.41 The National Flag should be flown on the official residences of the President, Vice-President, Governors and Lieutenant Governors when they are at Headquarters and on the building in which they stay during their visits to places outside the Headquarters. The Flag flown on the official residence should, however, be brought down as soon as the dignitary leaves the Headquarters and it should be re-hoisted on that building as he enters the main gate of the building on return to the Headquarters. When the dignitary is on a visit to a place outside the Headquarters, the Flag should be hoisted on the building in which he stays as he enters the main gate of that building and it should be brought down as soon as he leaves that place. However, the Flag should be flown from sun-rise to sun-set on such official residences, irrespective of whether the dignitary is at Headquarters or not on the - Republic Day, Independence Day, Mahatma Gandhi's Birthday, National Week (6th to 13th April, in the memory of martyrs of Jalianwala Bagh), any other particular day of national rejoicing as may be specified by the Government of India or, in the case of a State, on the anniversary of formation of that State.

3.42 When the President, the Vice-President or the Prime Minister visits an institution, the National Flag may be flown by the institution as a mark of respect.

3.43 On the occasions of the visit to India by foreign dignitaries, namely, President, Vice-President, Emperor/King or Heir Prince and the Prime Minister, the National Flag may be flown along with the Flag of the foreign country concerned in accordance with the rules contained in Section VII by such private institutions as are according reception to the visiting foreign dignitaries and on such public buildings as the foreign dignitaries intend to visit on the day of visit to the institution.

3.41 राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति, राज्यपाल, उप–राज्यपाल, जब अपने मुख्यालय में हों, तो उनके सरकारी आवासों पर, और जब वे अपने मुख्यालयों से बाहर दौरे पर हों, तो जिन भवनों में वे निवास करें, उन पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाना चाहिए। लेकिन, सरकारी आवास पर फहराया गया राष्ट्रीय झंडा गणमान्य व्यक्ति के मुख्यालय से बाहर जाते ही उतार दिया जाना चाहिए और वापस मुख्यालय आने पर उक्त भवन के मुख्य द्वार से उनके प्रविष्ट होते ही राष्ट्रीय झंडा पुनः फहरा दिया जाना चाहिए। जब गणमान्य व्यक्ति मुख्यालय से बाहर किसी स्थान के दौरे पर हों तो जिस भवन में वे निवास करें, उस भवन के मुख्य द्वार से उनके प्रवेश करते ही उस भवन पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया जाना चाहिए और जब वे उस स्थान से बाहर जाएं तो राष्ट्रीय झंडा उतार दिया जाना चाहिए। तथापि, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी जयंती, राष्ट्रीय सप्ताह (6 से 13 अप्रैल तक जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में), भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट राष्ट्रीय उल्लास के किसी अन्य विशेष दिवस अथवा किसी राज्य के मामले में उस राज्य के गठन की वर्षगांठ के अवसर पर उक्त सरकारी आवासों पर राष्ट्रीय झंडा सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिए, चाहे गणमान्य व्यक्ति उन दिनों मुख्यालय में उपस्थित हों या न हों।

3.42 जब राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री किसी संस्था का दौरा करते है तो उस संस्था द्वारा उनके सम्मान में राष्ट्रीय झंडा फहराया जा सकता है।

3.43 जब विदेश का कोई गणमान्य व्यक्ति, अर्थात् – राष्ट्रपति, उप–राष्ट्रपति, सम्राट, उत्तराधिकारी युवराज या प्रधानमंत्री भारत का दौरा कर रहे हों और उस दौरान कोई संस्था उनके लिए स्वागत समारोह का आयोजन करती है तो उस संस्था द्वारा धारा VII में उल्लिखित नियमों के अनुसार राष्ट्रीय झंडा और संबंधित देश का राष्ट्रीय झंडा साथ–साथ फहराये जाएं। यदि वह गणमान्य व्यक्ति उसी दिन किसी सरकारी भवन का भी दौरा करना चाहें जिस दिन वह उक्त संस्था में आए हों तो उन सरकारी भवनों पर भी धारा VII में उल्लिखित नियमों के अनुसार ही राष्ट्रीय झंडा और संबंधित देश का झंडा साथ–साथ फहराए जाएं।

धारा IX

मोटर कारों पर राष्ट्रीय झंडा लगाया जाना

3.44 मोटर–कारों पर राष्ट्रीय झंडा लगाने का विशेषाधिकर केवल निम्नलिखित गणमान्य व्यक्तियों को ही हैः–

(1) राष्ट्रपति;

(2) उप–राष्ट्रपति;

(3) राज्यपाल और उप–राज्यपाल;

(4) विदेशों में नियुक्त भारतीय दूतावासों एवं कार्यालयों के अध्यक्ष;

(5) प्रधान मंत्री और केबिनट मंत्री;
केन्द्र के राज्यमंत्री और उपमंत्री;
राज्यों अथवा संघ शासित क्षेत्रों के मुख्यमंत्री और अन्य केबिनेट मंत्री;
राज्यों अथवा संघ शासित क्षेत्रों के राज्य मंत्री और उप मंत्री;

(6) लोक सभा के अध्यक्ष;
राज्य सभा के उप सभापति;
लोक सभा के उपाध्यक्ष;
राज्य विधान परिषदों के सभापति;
राज्य और संघ शासित क्षेत्रों की विधान सभाओं के अध्यक्ष;
राज्य विधान परिषदों के उप सभापति;
राज्य और संघ शासित क्षेत्रों की विधान सभाओं के उपाध्यक्ष;

(7) भारत के मुख्य न्यायाधीश;
उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश;
उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश;
उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश।

SECTION IX

DISPLAY ON MOTOR CARS

3.44 The privilege of flying the National Flag on motor cars is limited to the :-

(1) President;

(2) Vice-President;

(3) Governors and Lieutenant Governors;

(4) Heads of Indian Missions/Posts abroad in the countries to which they are accredited;

(5) Prime Minister and other Cabinet Ministers;
Ministers of State and Deputy Ministers of the Union;
Chief Minister and other Cabinet Ministers of a State or Union Territory;
Ministers of State and Deputy Ministers of a State or Union Territory;

(6) Speaker of the Lok Sabha;
Deputy Chairman of the Rajya Sabha;
Deputy Speaker of the Lok Sabha;
Chairmen of Legislative Councils in States
Speakers of Legislative Assemblies in States and Union territories.
Deputy Chairmen of Legislative Councils in States;
Deputy Speakers of Legislative Assemblies in States and Union territories;

(7) Chief Justice of India;
Judges of Supreme Court;
Chief Justice of High Courts;
Judges of High Courts.

3.45 The dignitaries mentioned in Clauses (5) to (7) of paragraph 3.44 may fly the National Flag on their cars, whenever they consider it necessary or advisable.

3.46 When a foreign dignitary travels in a car provided by Government, the National Flag will be flown on the right side of the car and the Flag of the foreign countries will be flown on the left side of the car.

SECTION X

DISPLAY ON TRAINS/AIRCRAFTS

3.47 When the President travels by special train within the country, the National Flag should be flown from the driver's cab on the side facing the platform of the station from where the train departs. The Flag should be flown only when the special train is stationary or when coming into the station where it is going to halt.

3.48 The National Flag will be flown on the aircraft carrying the President, the Vice-President or the Prime Minister on a visit to a foreign country. Alongside the National Flag , the Flag of the country visited should also be flown but, when the aircraft lands in countries enroute, the National Flag of the countries touched would be flown instead, as a gesture of courtesy and goodwill.

3.49 When the President goes on tour within India, the National Flag will be displayed on the side by which the President will embark the aircraft or disembark from it.

3.45 पैरा 3.44 के खंड (5) से (7) तक में उल्लिखित गणमान्य व्यक्ति, जब कभी आवश्यक या उचित समझें, अपनी कारों पर राष्ट्रीय झंडा लगा सकते हैं।

3.46 जब कोई विदेशी गणमान्य व्यक्ति सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई कार में यात्रा करें, तो राष्ट्रीय झंडा कार के दाईं ओर लगाया जाएगा और संबंधित देश का झंडा कार के बाईं ओर लगाया जाएगा।

धारा X

रेल गाड़ियों और वायुयानों पर राष्ट्रीय झंडा लगाया जाना

3.47 जब राष्ट्रपति देश में ही विशेष रेलगाड़ी से यात्रा करते हैं तो जिस स्टेशन से गाड़ी रवाना होती है वहां ड्राईवर की कैबिन पर प्लेटफार्म की ओर राष्ट्रीय झंडा तब तक लगाया जाए तब तक गाड़ी वहां खड़ी रहती है। राष्ट्रीय झंडा केवल तभी लगाया जाए जब उक्त विशेष रेलगाड़ी किसी स्टेशन पर खड़ी हो या गन्तव्य स्टेशन पर पहुंच गई हो।

3.48 राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति या प्रधान मंत्री के विदेश यात्रा करते समय उस विमान पर राष्ट्रीय झंडा लगाया जाएगा, जिसमें वे यात्रा कर रहे हों। जिस देश की यात्रा की जा रही है, उसका झंडा भी राष्ट्रीय झंडे के साथ–साथ लगाया जाना चाहिए, परन्तु मार्ग में जिन–जिन देशों में विमान उतरे तो शिष्टाचार और सद्भावना के नाते उस झंडे के स्थान पर संबंधित देशों के राष्ट्रीय झंडे लगाए जाएं।

3.49 राष्ट्रपति देश में ही कहीं दौरे पर जाएं तो राष्ट्रीय झंडा वायुयान के उस ओर लगाया जाए, जिस ओर राष्ट्रपति विमान में चढ़े या उससे उतरें।

धारा XI

झंडे को आधा झुकाना

3.50 निम्नलिखित गणमान्य व्यक्तियों में से किसी का निधन होने पर प्रत्येक पदनाम् के सामने उल्लिखित स्थानों पर निधन के दिन राष्ट्रीय झंडा आधा झुका दिया जाएगाः

गणमान्य व्यक्ति	**स्थान**
राष्ट्रपति उप–राष्ट्रपति प्रधान मंत्री	समस्त भारत
लोक सभा के अध्यक्ष भारत के मुख्य न्यायाधीश	दिल्ली
केन्द्रीय केबिनेट मंत्री	दिल्ली और राज्यों की राजधानियां
केन्द्र के राज्य मंत्री और उप मंत्री	दिल्ली
राज्यपाल उप–राज्यपाल राज्य का मुख्य मंत्री संघ शासित क्षेत्र का मुख्यमंत्री	संबंधित समस्त राज्य या संघ शसित क्षेत्र
राज्य का केबिनेट मंत्री	संबंधित राज्य की राजधानी

3.51 यदि किसी गणमान्य व्यक्ति के निधन की सूचना अपराह्न में प्राप्त होती है तो ऊपर बताए गए स्थान या स्थानों पर अगले दिन भी झंडा आधा झुका दिया जाएगा, बशर्ते कि उक्त दिन सूर्योदय से पूर्व अंत्येष्टि न हुई हो।

3.52 ऊपर उल्लिखित गणमान्य व्यक्ति की अंत्योष्टि के दिन उस स्थान पर झंडा आधा झुका दिया जाएगा, जहां अंत्येष्टि की जानी है।

SECTION XI

HALF-MASTING

3.50 In the event of the death of the following dignitaries, the National Flag shall be half-masted at the places indicated against each on the day of the death of the dignitary :-

Dignitary	Place or places
President Vice-President Prime Minister	Throughout India
Speaker of the Lok Sabha Chief Justice of India	Delhi
Union Cabinet Minister	Delhi and State Capitals
Minister of State or Deputy Minister of the Union	Delhi
Governor Lt. Governor Chief Minister of State Chief Minister of a Union territory	Throughout the State or Union territory concerned.
Cabinet Minister in a State	Capital of the State concerned.

3.51 If the intimation of the death of any dignitary is received in the afternoon, the Flag shall be half-masted on the following day also at the place or places indicated above, provided the funeral has not taken place before sun-rise on that day.

3.52 On the day of the funeral of a dignitary mentioned above, the Flag shall be half-masted at the place where the funeral takes place.

3.53 If State mourning is to be observed on the death of any dignitary, the Flag shall be half-masted throughout the period of the mourning throughout India in the case of the Union dignitaries and throughout the State or Union territory concerned in the case of a State or Union territory dignitary.

3.54 Half-masting of the Flag and, where necessary, observance of State mourning on the death of foreign dignitaries will be governed by special instructions which will issue from the Ministry of Home Affairs in individual cases.

3.55 Notwithstanding the above provisions, in the event of a half-mast day coinciding with the Republic Day, Independence Day, Mahatma Gandhi's Birthday, National Week (6th to 13th April, in the memory of martyrs of Jalianwala Bagh), any other particular day of national rejoicing as may be specified by the Government of India or, in the case of a State, on the anniversary of formation of that State, the Flags shall not be flown at halfmast except over the building where the body of the deceased is lying until such time it has been removed and that Flag shall be raised to the full-mast position after the body has been removed.

3.56 If mourning were to be observed in a parade or procession where a Flag is carried, two streamers of black crepe shall be attached to the spear head, allowing the streamers to fall naturally. The use of black crepe in such a manner shall be only by an order of the Government.

3.53 यदि किसी गणमान्य व्यक्ति के निधन पर राजकीय शोक मनाया जाता है तो केन्द्रीय गणमान्य व्यक्ति के मामले में समस्त भारत में और किसी राज्य या संघ शासित क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति के मामले में संबंधित राज्य या पूरे संघ शासित क्षेत्र में शोकावधि के दौरान झंडा आधा झुका रहेगा।

3.54 किसी विदेशी गणमान्य व्यक्ति का निधन होने पर झंडे को आधा झुकाये जाने और, जहां आवश्यक हो, राजकीय शोक मनाये जाने के संबंध में ऐसे विशेष अनुदेश लागू होंगे, जो कि अलग–अलग मामलों में गृह मंत्रालय द्वारा जारी किये जाएंगे।

3.55 ऊपर बताई गई व्यवस्थाओं के बावजूद, यदि झंडे को आधा झुकाने का दिन और गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी जयंती, राष्ट्रीय उल्लास का कोई अन्य विशेष दिवस अथवा किसी राज्य के मामले में उस राज्य के गठन की वर्षगांठ का दिन एक साथ पड़ते है, तो उस भवन को छोड़कर जहां दिवंतग व्यक्ति का पार्थिव शरीर रखा है, अन्य स्थानों पर झंडा नहीं झुकाया जाएगा और उस भवन में भी, जहां दिवंगत व्यक्ति का पार्थिव शरीर रखा गया है, उस समय तक ही झंडा झुका रहेगा जब तक कि दिवंगत व्यक्ति का पार्थिव शरीर वहां से उठाया नहीं जाता और दिवंगत व्यक्ति का पार्थिव शरीर उठाये जाने के बाद उस भवन पर भी झंडा पूरी तरह फहरा दिया जाएगा।

3.56 यदि झंडा ले जा रही परेड या जुलूस के रूप मे शोक मनाया जाता है तो आगे काले कपड़े (क्रेप) की दो पट्टियां लगा दी जाएंगी जो कि स्वाभावित रूप से लटकी रहेंगी। इस प्रकार से काले कपड़े (क्रेप) का प्रयोग सरकार के आदेश से ही किया जा सकेगा।

3.57 जब झंडा झुकाया जाना हो तो उसे पहले एक बार पूरी ऊंचाई तक फहराया जाए और फिर उसे झुकी हुई स्थिति में उतारा जाए, किन्तु दिन–भर के बाद शाम को झंडा उतारने से पूर्व उसे एक बार फिर पूरी ऊंचाई तक उठाया जाए।

टिप्पणी : झंडा आधा झुकाए जाने (हाफ–मास्ट) से तात्पर्य है, झंडे को चोटी तथा 'गाई लाईन' के बीच आधे तक नीचे लाया जाना और 'गाई लाईन' न होने की अवस्था में झंडे को डंडे (स्टाफ) के आधे हिस्से तक झुकाया जाना।

3.58 राजकीय/सैनिक/केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के सम्मान से युक्त अंत्येष्टि के अवसरों पर शवपेटिका या अर्थी झंडे का केसरिया भाग अर्थी या शवपेटिका के अग्रभाग की ओर रहेगा। झंडे को कब्र में दफनाया या चिता में जलाया नहीं जाएगा।

3.59 किसी दूसरे देश के राष्ट्राध्यक्ष का निधन हो जाने पर उस देश में प्रत्यायित भारतीय दूतावास अपने राष्ट्रीय झंडे को झुका सकता है, चाहे वह घटना गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महात्मा गांधी जयंती, राष्ट्रीय सप्ताह (6 से 13 अप्रैल तक जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में) अथवा भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट राष्ट्रीय उल्लास के किसी अन्य विशिष्ट दिन को ही हुई हो। उस देश के किसी अन्य गणमान्य व्यक्ति का निधन होने पर भारतीय दूतावास को झंडा नही झुकाना चाहिये, जब तक कि वहां की स्थानीय प्रथा या शिष्टाचार (जिसका पता, जहां–कहीं भी आवश्यक हो, राजनयिक कोर के अधिष्ठता–डीन आफ दि डिप्लोमेटिक कोर से लगाया जाना चाहिए) के अनुसार उस देश में विदेशी दूतावास के राष्ट्रीय झंडे को भी झुकाना अपेक्षित न हो।

---

*स्रोत : भारतीय झंडा संहिता, 2002, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

3.57 When flown at half-mast, the Flag shall be hoisted to the peak for an instant, then lowered to the half-mast position but before lowering the Flag for the day, it shall be raised again to the peak.

Note : - By half-mast is meant hauling down the Flag to one half the distance between the top and the guy-line and in the absence of the guy-line, half of the staff.

3.58 On occasions of State/Military/Central Para-Military Forces funerals, the Flag shall be draped over the bier or coffin with the saffron towards the head of the bier or coffin. The Flag shall not be lowered into the grave or burnt in the pyre.

3.59 In the event of death of either the Head of the State or Head of the Government of a foreign country, the Indian Mission accredited to that country may fly the National Flag at half-mast even if that event falls on Republic Day, Independence Day, Mahatma Gandhi's Birthday, National Week (6th to 13th April, in the memory of martyrs of Jalianwala Bagh) or any other particular day of national rejoicing as may be specified by the Government of India. In the event of death of any other dignitary of that country, the National Flag should not be flown at half-mast by the Missions except when the local practice or protocol (which should be ascertained from the Dean of the Diplomatic Corps, where necessary) require that the National Flag of a Foreign Mission in that country should also be flown at half-mast.

**Source:* National Flag Code 2002, Ministry of Home Affairs, Govt. of India, New Delhi.

राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971

1971 की संख्या 69 (23 दिसम्बर, 1971)

(राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2003 द्वारा संशोधित)

2005 की संख्या 51 (20 दिसम्बर, 2005)

राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण के लिए एक अधिनियम

इसे संसद द्वारा भारतीय गणतंत्र के बाइसवें वर्ष में निम्न प्रकार से अधिनियमित किया जाएः—

1. संक्षिप्त शीर्षक और विस्तार

(1) यह अधिनियम राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 कहलाएगा।
(2) इसका विस्तार संपूर्ण भारत भर होगा।

2. भारतीय राष्ट्रीय झंडे तथा भारतीय संविधन का अपमान

कोई भी व्यक्ति जो किसी सार्वजनिक स्थान पर या किसी भी ऐसे स्थान पर सार्वजनिक रूप से भारतीय राष्ट्रीय झंडे या भारत के संविधान या उसके किसी भाग को जलाता है, विरूपित करता है, दूषित करता है, कुरूपित करता है, नष्ट करता है, कुचलता है या अन्यथा उसके प्रति अनादर प्रकट करता है या (मौखिक या लिखित शब्दों में, या कृत्यों द्वारा) अपमान करता है तो उसे तीन वर्ष तक के कारावास से, या जुर्माने से, या दोनों से दंडित किया जाएगा।

स्पष्टीकरण 1— भारत के संविधन में संशोध्न करने या विध्सिम्मत तरीके से भारतीय राष्ट्रीय झंडे में परिवर्तन करने की दृष्टि से सरकार के किसी उपाय की आलोचना या अस्वीकृति व्यक्त करते हुए की गई कोई टिप्पणी इस धारा के अंतर्गत अपराध नहीं बनती।

स्पष्टीकरण 2— 'भारतीय राष्ट्रीय झंडे' की अभिव्यक्ति में कोई भी तस्वीर, पेंटिंग, ड्रांइग या फोटोग्राफ या भारतीय राष्ट्रीय झंडे या उसके किसी भाग या भागों का अन्य स्पष्ट चित्रण जो किसी पदार्थ से बना हो या पदार्थ पर दर्शाया गया हो, शामिल है।

स्पष्टीकरण 3— 'सार्वजनिक स्थान' की अभिव्यक्ति के अर्थ में ऐसा कोई स्थान जो जनता द्वारा उपयोग के लिए हो अथवा जहां जनता की पहुंच हो और इसमें कोई भी सार्वजनिक वाहन शामिल है।

स्पष्टीकरण 4— भारतीय राष्ट्रीय झंडे के अपमान का अर्थ निम्नलिखित होगा इसमें निम्नलिखित शामिल होंगे।

(क) भारतीय राष्ट्रीय झंडे का घोर अपमान या अनादर करनाऋ या
(ख) किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय झंडे को झुकाना; या
(ग) सरकार द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार जिन अवसरों पर सरकारी भवनों पर भारतीय राष्ट्रीय झंडे को आध झुकाकर पफहराया जाना हो, उन अवसरों के सिवाय झंडे को आध झुकाकर फहराना; या

THE PREVENTION OF INSULTS TO NATIONAL HONOUR ACT, 1971

No. 69 of 1971 (23rd December, 1971)

(Amended by the Prevention of Insults to National Honour (Amendment) Act, 2005)

No. 51 of 2005 (20th December, 2005)

An Act to Prevent Insults to National Honour

Be it enacted by Parliament in the Twenty-second year of the Republic of India as follows :-

1. SHORT TITLE AND EXTENT

(1) This Act may be called the Prevention of Insults to National Honour Act, 1971.

(2) It extends to the whole of India.

2. INSULT TO INDIAN NATIONAL FLAG AND CONSTITUTION OF INDIA

Whoever in any public place or in any other place within public view burns, mutilates, defaces, defiles, disfigures, destroys, tramples upon or *otherwise shows disrespect to or brings into contempt (whether by words, either spoken or written, or by acts) the Indian National Flag or the Constitution of India or any part thereof, shall be punished with imprisonment for a term which may extend to three years, or with fine, or with both.

Explanation 1 - Comments expressing disapprobation or criticism of the Constitution or of the Indian National Flag or of any measures of the Government with a view to obtain an amendment of the Constitution of India or an alteration of the Indian National Flag by lawful means do not constitute an offence under this section.

Explanation 2 - The expression, “Indian National Flag” includes any picture, painting, drawing or photograph, or other visible representation of the Indian National Flag, or of any part or parts thereof, made of any substance or represented on any substance.

Explanation 3- The expression “public place” means any place intended for use by, or accessible to, the public and includes any public conveyance.

*Explanation 4- The disrespect to the Indian National flag means and includes-

(a) a gross affront or indignity offered to the Indian National Flag; or

(b) dipping the Indian National Flag in salute to any person or thing; or

(c) flying the Indian National Flag at half-mast except on occassions on which the Flag is flown at half-mast on public buildings in accordance with the instructions issued by the Government; or

(d) using the Indian National Flag as a drapery in any form whatsoever except in state funerals orarmed forces or other para-military forces funerals; or

(घ) राजकीय अंत्येष्टियों या सशस्त्र सैन्य बलों या अन्य अर्धसैनिक बलों की अंत्येष्टियों को छोड़कर झंडे का किसी अन्य रूप में लपेटने के लिए प्रयोग करना; या

(घ) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का,

(1) किसी भी प्रकार की ऐसी वेषभूषा, वर्दी या उपसाधन के, जो किसी व्यक्ति की कमर से नीचे पहना जाता है, किसी भाग के रूप में, या

(2) कुशनों, रूमालों नैपकिनों, अधेवस्त्राों या किसी पोशाक सामग्री पर कशीदाकारी या छपाई करके, उपयोग करना; या

(च) भारतीय राष्ट्रीय झंडे पर किसी प्रकार का उत्कीर्णन करना; या

(छ) गणतंत्रा दिवस या स्वंतत्रता दिवस सहित विशेष अवसरों पर समारोह के एक अंग के रूप में भारतीय राष्ट्रीय झंडे को फहराए जाने से पूर्व उसमें पूफलों की पंखुड़ियां रखे जाने के सिवाय भारतीय राष्ट्रीय झंडे को किसी वस्तु को प्राप्त करने, देने या ले जाने वाले पात्रा के रूप में प्रयोग करना; या

(ज) किसी प्रतिमा या स्मारक या वक्ता की मेज़ या वक्ता के मंच को ढकने के लिए भारतीय राष्ट्रीय झंडे का प्रयोग करना; या

(झ) जानबूझकर भारतीय राष्ट्रीय झंडे को जमीन या फर्श से छूने देना या पानी पर घसीटने देना; या

(ञ) भारतीय राष्ट्रीय झंडे को किसी वाहन, रेलगाड़ी, नाव या किसी वायुयान या ऐसी किसी अन्य वस्तु के हुड, टाप और बगल या पिछले भाग पर लपेटना, या

(ट) भारतीय राष्ट्रीय झंडे को किसी भवन में पर्दा लगाने के लिए प्रयोग करना; या

(ठ) जानबूझकर 'केसरी' पट्टी को नीचे रखकर भारतीय राष्ट्रीय झंडे को फहराना।

3. राष्ट्रीय गान के गायन को रोकना

जो किसी व्यक्ति जानबूझकर भारतीय राष्ट्रीय गान को गाए जाने से रोकता है या ऐसी गायन कर रही किसी सभा में व्यवधान पैदान करता है उसे तीन वर्ष तक के कारावास, या जुर्माने, या दोनों से दंडित किया जाएगा।

3क. दूसरी बार के या बाद के अपराध के लिए न्यूनतम दंड

जो कोई व्यक्ति, जिसे धारा 2 या धरा 3 के अंतर्गत किसी अपराध के लिए पहने ही दोषसिद्ध ठहराया गया हो, ऐसे किसी अपराध के लिए फिर से दोषसिद्ध ठहराया जाता है तो उसे दूसरी बार के या उसके बाद के हर बार के अपराध के लिए कम से कम एक वर्ष के कारावास से दंडित किया जा सकेगा।

नोट 1 राष्ट्रीय गौरव निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2003 (2003 की संख्या 31, दिनांक 8.5.2003) के तहत जोड़ा गया।

नोट 2. राष्ट्रीय गौरव निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2005 (2005 की संख्या 51, दिनांक 20.12.2005) के तहत जोड़ा गया।

(e) #using the Indian National Flag:-

(i) as a portion of costume, uniform or accessory of any description which is worn below the waist of any person; or

(ii) by embroidering or printing it on cushions, handkerchiefs, napkins, undergarments or an dress material; or

(f) putting any kind of inscription upon the Indian National Flag; or

(g) using the Indian National Flag as a receptacle for receiving, delivering or carrying anything except flower petals before the Indian National Flag is unfurled as part of celebrations on special occasions including the Repubic Day or the Independence Day; or

(h) using the Indian National Flag as covering for a statue or a monument or a speaker's desk or a speaker's platform; or

(i) allowing the Indian National Flag to touch the ground or the floor or trail in water intentionally; or

(j) draping the Indian National flag over the hood, top, and sides or back or on a vehicle, train, boat or an aircraft or any other similar object; or

(k) using the Indian National Flag as a covering for a building; or

(l) intentionally displaying the Indian National Flag with the "saffron" down.

3. PREVENTION OF SINGING OF NATIONAL ANTHEM

Whoever intentionally prevents the singing of the Indian National Anthem or causes disturbances to any assembly engaged in such singing shall be punished with imprisonment for a term, which may extend to three years, or with fine, or with both.

*3A MINIMUM PENALTY ON SECOND OR SUBSEQUENT OFFENCE

Whoever having already been convicted of an offence under section 2 or section 3 is again convicted of any such offence shall be punishable for the second and for every subsequent offence, with imprisonment for a term, which shall not be less than one year.

Note 1 : * Inserted vide The Prevention of Insults to National Honour (Amendment) Act, 2003 (No. 31 of 2003 dated 8.5.2003)

Note 2 : # Inserted vide The Prevention of Insults to National Honour (Amendment) Act, 2005 (No. 51 of 2005 dated 20.12.2005)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
Centre for Cultural Resources and Training
Ministry of Culture, Govt. of India
15A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110075, India
Phone : 47151000 (100 Lines) Fax : 91-11-25088637
email: dg.ccrt@nic.in, website : www.ccrtindia.gov.in

PULL FLAP TO OPEN

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING

15A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110075

Phone : 47151000 (100 Lines) Fax : 91-11-25088637

email: dg.ccrt@nic.in, website : www.ccrtindia.gov.in

राष्ट्रीय प्रतीक

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय प्रतीक

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग

सत्यमेव जयते

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय प्रतीक

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय प्रतीक

मोर

Peacock

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय पक्षी

मोर

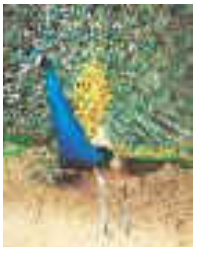

Peacock

NATIONAL BIRD

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

मोर

भारत में 2000 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ हैं, जिनमें सर्वाधिक भव्य, मनमोहक और आकर्षक पक्षी है – मोर। वर्षा ऋतु में मोर का नृत्य आनन्द व उत्सव की भावनाएं उत्पन्न करता है।

संस्कृत में मोर को *मयूर* कहते है। मोर सांपो को मारने के लिए जाना जाता है। भारतीय चित्रकला तथा शिल्पकला में मोर की चोंच में झलते सर्प (भुजंगभुक्) के असंख्य चित्रण हैं। मोर के सिर पर कलगी या नीले तार समान पंखों का मुकुट होने के कारण इसे 'शिखी' अथवा 'शिखावल' भी कहा जाता है।

मोर, मौर्य वंश का प्रतीक चिह्न था। मौर्य नाम 'मोर' शब्द से ही गृहीत है। कहा जाता है कि मोर बादलों की गड़गड़ाहट (मेघ गर्जन) से इतना अधिक सम्मोहित हो जाता है कि पखावज अथवा मृदंगम जैसे ताल वाद्यों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि को, वर्षा के आने से पूर्व बादलों की गर्जन मानकर मानसून ऋतु का अग्रदूत बन कर नृत्य करना आरंभ कर देता है।

'नाचत मोर संग श्याम' – यहां पर ***'श्याम'*** शब्द काले बादलों के प्रतीकार्थ को भी प्रस्तुत कर रहा है।

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा मराठी में इसे मोर, कन्नड में नविलु; तमिल और मलयालम में मायिल; संस्कृत में नीलकंठ, भुजंगभुक्, शिखी, केकिन, मेघानन्द, शिखण्डिन; और फारसी में तौस कहते हैं।

भारतीय मोर (पावो क्रिसटेटस) महोख (फेजेण्ट या फासियानिडे) परिवार का सदस्य है। मोर शब्द नर के लिए और मादा के लिए मोरनी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन दोनों की जोड़ी को मोर–मोरनी कहा जाता है। मोर का शरीर बड़ा और इसकी गर्दन लंबी छरहरी तथा पूँछ में लगभग 150 पंख होते हैं, जो करीब एक मीटर लंबे होते हैं। इन पर हरे, भूरे और नील लोहित (बैंगनी) रंग के आँख जैसे बिन्दु होते हैं। इस प्रजाति के नर की ही इस प्रकार की विशेष पूंछ होती है। मोरनी, पूँछ रहित भूरे रंग की पक्षी होती है और एक बार में चार से छह बड़े अण्डे देती है। मोर के बच्चों की शक्ल पहले वर्ष में अपनी मां से काफी मिलती – जुलती है। मोर एंव मोरनी द्वारा जब अण्डे "से" लिए जाते हैं, तब मोर – मोरनी का परिवार भोजन की तलाश में घूमता है। ये सर्वभक्षी पक्षी होते हैं, पर अधिकांश का प्रधान भोजन बीज और बेर ही होता है।

अपनी पूंछ सीधे ऊपर उठा कर जब मोर मोरनी के समक्ष नृत्य करता है, तब उसके झिलमिलाते पंख स्पंदित पंखे की भांति फैल जाते हैं। मोर का प्रजनन काल वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर आरंभ होता है। कड़ी, थका देने वाली गर्मी के पश्चात् वर्षा द्वारा प्रदान की जाने वाली राहत और आनन्द के साथ मोर का नृत्य जुड़ा हुआ है।

PEACOCK

There are over 2000 species of birds in India of which the Peacock is the most magnificent and elegant. During the rainy season the Peacock dance brings joy and a feeling of celebration.

The Peacock is called *Mayura* in Sanskrit, it is known to kill snakes. There are numerous depictions of the peacock भुजंगभुक् holding a dangling snake in its beak in Indian paintings and sculptures. Another name for the peacock is *Shikhi* or *Shikhavala* "the possessor of the crest", for the peacock has a crest or crown on its head of blue-wire like feathers, also called plumage, which gives it a majestic and regal appearance.

The peacock was the symbol of the Mauryas, a name derived from the word *mor* (peacock). It is said, that the peacock is so hypnotised by the sound of the thunder of the clouds that, mistaking the sounds emanating from percussive instruments such as *Pakhawaj* or *Mridangam* for the thundering of clouds before the advent of the rains, it begins to dance in sheer ecstacy to herald the monsoon season.

नाचत मोर संग श्याम - here श्याम can signify dark clouds also.

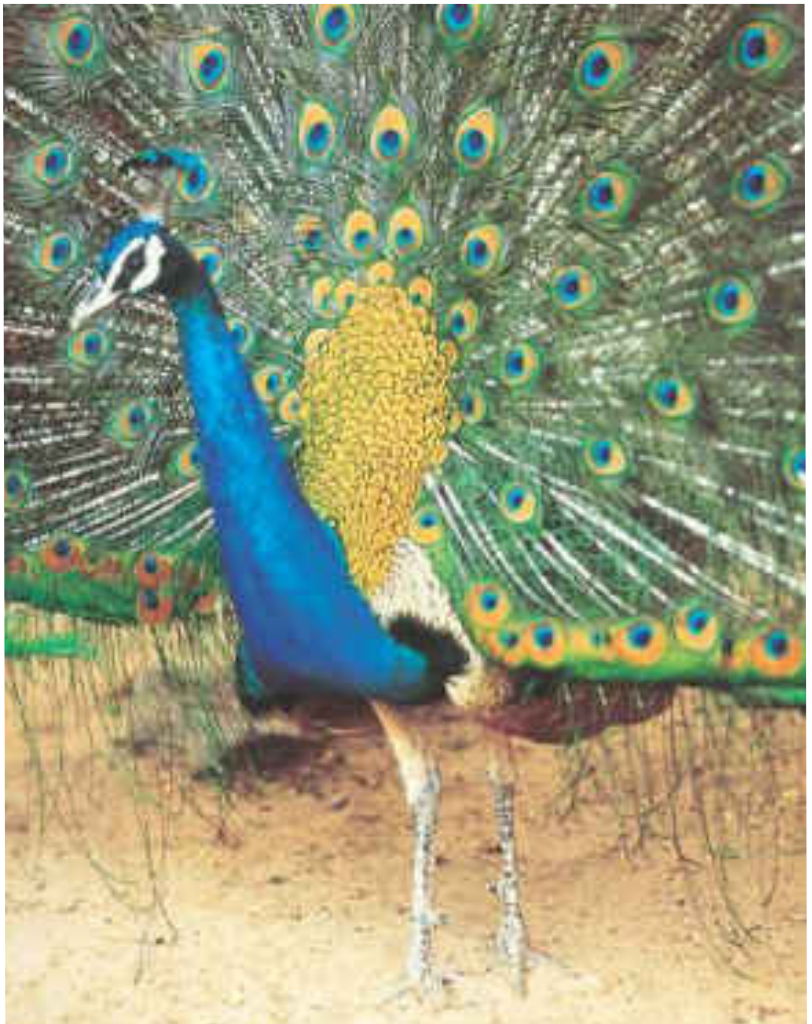

मोरों की चाल सुकुमार होती है और वे गौरवपूर्ण तथा शानदार होते हैं। मोर के पंख छोटे और गोलाई लिए होते हैं, जिनका वे तेजी से उड़ान भरने के लिए प्रयोग करते हैं, पर लंबी निरंतर उड़ान भरने के लिए ये पंख अनुपयुक्त हैं।

मोर जल्द ही पालतू बन जाता है, अतः बड़े बड़े खेतों, बागों, उपवनों और जंगलों में प्रचुर मात्रा में मोर पाया जाता है।

मोर बुद्धिमान पक्षी है। वह दोस्त और दुश्मन में सहज ही अन्तर मालूम कर लेता है। मोर अपने दुश्मन से दूर भाग जाता है, पर मित्रवत् व्यक्ति के निकट आकर अक्सर उसे भोजन देने के लिए संकेत देता है।

मोर तीक्ष्ण दृष्टि वाला एक जिज्ञासु प्रेक्षक होता है। वह शिकार की खोज करते हुए परभक्षी का तुरंत पता 'केका–केका' की चीख से खतरे का संकेत देता है।

संभवतः मोर एक प्राचीनतम, लोकप्रिय, शोभाकारी पक्षी है। व्यापार मार्गो के माध्यम से मेसोपोटेमिया की संस्कृति में 4,000 वर्ष से भी अधिक समय पूर्व मोर पक्षी का प्रवेश हुआ था और फिर वहां से मोर भूमध्य सागरीय देशों में पहुँचा। प्राचीन समय मे मोर अत्यधिक सम्मानित था। उसे इतना महत्व प्राप्त था कि एक भारतीय नरेश ने भेंट स्वरूप राजा सोलोमन को मोर भेजा था। कहा जाता है कि सिकदंर भारत से इस प्रजाति को अपने साथ ले गया था और वहां से यह पक्षी प्रजाति लगभग 326 ईसा पूर्व में रोम और इंग्लैंड पहुंची।

हमें कला, सहित्य, लोक सहित्य, धार्मिक अनुष्ठानों तथा विधी–विधानों में मोर के विविध संदर्भ प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में बताया गया है कि युद्ध देवता इन्द्र ने घोड़ों के बाल मोर के पंखों जैसे और पूंछ मोर के समान थी। अथर्ववेद में सांपों को मारने और उनके टुकड़े करने के संदर्भ मे मोर के जोश का उल्लेख प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रंथ ऐतरेय, आरण्यक और सांख्य में मोर को स्वर्ग का एक मनोहर पक्षी बताया गया है।

तीसरी शताब्दी ई. पू. में सम्राट अशोक ने मोर के मारे जाने पर रोक लगाकर तथा अभयारण्यों की स्थापना करके मोर को संरक्षण प्रदान किया।

महात्मा बुद्ध अपने पूर्व जन्मों में से एक में मोर के रूप में अवतरित हुए थे और अमरावती में बुद्ध भगवान के जीवन से संबंधित मोर जातक कथा प्रदर्शित है।

रामायण में कई जगह मोर का संदर्भ दिया गया है। रावण के विरूद्ध युद्ध में सहायता किए जाने पर इंद्रदेव ने मोर को पूंछ पर नयनाकृति भेंट स्वरूप दी थी। एक अन्य घटना में, जब सीता राम के लिए विलाप कर रहीं थी, तो उन्हें देख मोरों द्वारा सीता की भावनाओं के साथ एकीकृत होकर भावातिरेक तथा दुख में अपना सुन्दर नृत्य रोक दिए जाने का संदर्भ भी प्राप्त होता है। महाभारत में मृत व्यक्तियों को, पक्षियों व कीड़ो, विशेषकर मोरों द्वारा खाए जाने का विवरण है।

In Hindi, Urdu, Punjabi and Marathi the peacock is known as *Mor*, in Kannada, *Navilu*; in Tamil and Malayalam, *Mayil*; in *Sanskrit*, *Neelakantha*, *Bhujangabhuk*, *Shikhi*, *Kekin, Meghananda, Shikhandin and Candrakin;* and in Persian, *Taus*.

The Indian Peacock *(pavo cristatus)* belongs to the family of pheasants (Phasianidae). Peacock is the term used for the male, and the female is the peahen, collectively both are called peafowl. The peacock's body is large with a long slender neck and the tail has about 150 feathers that measure a metre long, with 'eye spots' of green, brown and purple. Only the male of the species has this distinguishing tail. The peahen is a brown coloured bird without the train of feathers and lays four to six large eggs and the young peafowl resemble the mother in its first year. Once the eggs are hatched, the peafowl family move around searching for food to eat. They are omnivorous feeders, but seeds and berries are the staple diet of the majority.

The peacock raises his train of feathers vertically and the glimmering feathers spread out like a fan quivering as the bird dances towards the peahen. The breeding season starts at the break of the rains and the peacock dance is associated with the joy and relief the rains bring after a gruelling hot summer.

Peacocks have a dainty gait and are stately and dignified. They have short and rounded wings, specially adapted for rapid take-off, but ill-suited for a long sustained flight.

The peacock adapts readily to domestication, therefore, it is found throughout the country, in large agricultural farms, gardens, groves and forests.

The peacock is an intelligent bird and can distinguish between friend and foe. It runs away from the enemy, but goes close to the friendly person and often signals him to feed it.

The peacock is an inquisitive observer with a keen eyesight. It readily detects a predator on the prowl and raises alarm by shrieking 'keka-keka'

It is probably the oldest known ornamental bird. More than 4000 years ago it was introduced to the cultures of Mesopotamia via trade routes and from there to the Meditteranean nations. It was so much prized in the past that Indian kings sent it as a gift to King Solomon. Alexander, it is said, carried the species from India to his own country, from where it reached Rome and then England in about 326 B.C.E.

One can find various references to the peacock in art and literature, folklore, religious rituals and ceremonies. The *Rigveda* mentions that the war God Indra's horses possessed hair like peacock's feathers and tails like those of the peacock. The *Atharvaveda* refers to the peacock's zeal in killing and chopping snakes to pieces. The Brahamanical texts like *Aitareya, Aranyaha,* and *Sankhya* describe the peacock as a glorious bird of the heaven.

प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने मोर का विशेष उल्लेख किया है। "कुमार संभव" में उन्होंने शिव तथा पार्वती के विवाहोपलक्ष्य पर मोरों द्वारा प्रस्तुत लालित्यपूर्ण, मनोहारी नृत्य का विस्तृत वर्णन किया है। मेघदूत में भी कालिदास ने जीवन के आनन्द के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में मोर को दर्शाया है।

'यन्त्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा, हंसश्रेणी रचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा, नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।।

जिस अलकापुरी में सारे वृक्ष सदा फूलों वाले होने के नाते उन्मत्त भौंरो से शब्दायमान रहते हैं। कमलिनियाँ सदा कमलों वाली होने के कारण हंसो की पंक्तियों से निर्मित शब्दायमान रसना से युक्त रहती हैं, घरेलू मोर सदा चमकते हुए पंखो वाले होने के कारण केका–संगीत प्रस्तुत करते हुए उद्ग्रीव रहते हैं और रात्रियाँ सदा चाँदनी वाली होने के कारण अंधकार की सत्ता के नष्ट हो जाने से सुहावनी हुआ करती है।

बृहत्संहिता के लेखक वराहमिहिर ने मोर को एक शुभ मंगलकारी पक्षी स्वीकार कर "मौर्य चित्रकम्" शीर्षक अध्याय में मोर की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। उनके अनुसार मोर दर्शन से व्यक्ति विशेष को अपने कार्य निष्पादन के समय लाभ होता है।

बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारतीय पक्षियों का वर्णन ही मोर से आरंभ किया है।

"मोर सुन्दर रंगों से परिपूर्ण एक शानदार पक्षी है। उसका शरीर सारस के शरीर जैसा बड़ा तो हो सकता है, पर वह उतना लंबा नहीं है। मोर और मोरनी, दोनों ही के सिर पर 2 अथवा 3 इंच ऊंचे 20 या 30 पंख होते हैं। मोरनी न तो रंगीन होती है और न ही सुन्दर होती है। मोर के सिर पर एक बहुरंगी कलगी होती है और उसकी गर्दन सुन्दर नीले रंग की होती है। गर्दन के नीचे उसकी पीठ के पीले, तोतिया हरे, नीले और बैंगनी (नील लोहित) रंगों की होती है। उसकी पीठ पर फूल बहुत ही छोटे होते हैं; पीठ के नीचे, जहां तक पूंछ के सिरे बड़े होते हैं, फूल उन्हीं रंगों के होते हैं। कुछ मोरों की पूंछ, मनुष्य की फैली हुई बांहों की लंबाई के बराबर बड़ी भी हो जाती है। अन्य पक्षियों की पूंछ की ही भांति, फूलों से सज्जित पंखों के नीचे की ओर मोर की एक छोटी लाल पूंछ होती है। मोर की उड़ान, महोखों (फेजेण्ट) की तुलना में कमजोर होती है। मोर एक या दो छोटी उड़ानों से अधिक उड़ान नहीं भर सकता। हिन्दुस्तानी में इस पक्षी को मोर कहते हैं।"

एम. एस. रंधावा – "पेंटिग्स ऑफ बाबरनामा"

मुगल बादशाहों को मोर से विशेष प्रेम था और वे इस पक्षी को पालतू बनाकर अपने दरबार के बागों में रखते थे। बादशाह शाहजहां तो मोर से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने अपने एक सुन्दर सिंहासन को

In the 3rd century B.C.E, Emperor Ashoka granted protection to the Peacock by prohibiting its killing and creation of abhyaranyas (wild life sanctuaries).

The Buddha, in one of his previous births, was born as a peacock and the Mor *Jataka*, which deals with this life of the Buddha is illustrated at Amaravati.

Several references of the peacock are made in the *Ramayana*. The 'eyes' of the peacock tail are said to be the gift of Indra, for having assisted him in a battle against Ravana. In another instance , while Sita was shedding tears for Rama even the peacocks halted their beautiful dance in compassion and sorrow. The *Mahabharata* refers to the dead being eaten by birds and insects, specifically by peacocks.

Kalidasa while describing the beauty of nature has made special mention of the peacock. In *Kumarasambhava*, he has described in detail the graceful dance by peacocks on the occasion of the marriage of Shiva and Parvati. Kalidasa talks of the peacocks as the supreme symbol of the joy of life in *Meghadoota*.

'यन्त्रोनमत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा, हंसश्रेणी रचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा, नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।।'

Varahamihira, the author of *Brihatsamhita*, regards the peacock as an auspicious bird and according to him, in one of the chapters titled *Mayurachitrakam*, if one comes across peacock as one steps out for the day's business, it brings good luck.

Babar in his autobiography starts his account of the birds of India with the peacock.

> ***"The peacock is a beautifully coloured and splendid bird. Its body may be as large as the crane's but it is not so tall. On the head of both the peacock and the peahen are 20 or 30 feathers rising some 2 or 3 inches high. The peahen has neither colour nor beauty. The head of the peacock has an iridescent collar; its neck is of a beautiful blue; below the neck, its back is painted in yellow, parrot green, blue and violet colours. The flowers on its back are much smaller; below the back as far as tail-tips are larger flowers painted in the same colours. The tail of some peacocks grows to the length of a man's extended arms. It has a small red tail, under its flowered feathers, like the tail of other birds. Its flight is feebler than the pheasants; it cannot do more than one or two short flights. Hindustani call the peacock MOR."***
>
> **M.S. Randhawa- "Paintings of Baburnama"**

The Mughals had a soft corner for the peacock and tamed it in their court gardens. Emperor Shahjahan was so impressed with it that he named his beautiful throne the *Takht-e-Taus* - the Peacock Throne. It had a pair of peacocks with an elevated tail made of blue sapphires and other precious stones, the body being of gold, studded with

तख़्त–ए–ताऊस (मयूर सिंहासन) का नाम दिया था। इस सिंहासन पर मोरों का जोड़ा है, जिनकी उठी हुई पूंछ नीले नीलम तथा अन्य बहुमूल्य पत्थरों से बनी है। इनकी शरीराकृति पन्नों से जड़ित स्वर्ण से निर्मित है और वक्षःस्थल के अग्र भाग में एक बड़ा माणिक लगा है, जहां 50 कैरेट की नाशपाती के आकार का मोती टंगा हुआ था। यह सिंहासन राजवंश के गौरव का प्रतीक था और इसे दिल्ली के दरबार में रखा गया था। फारस का सम्राट नादिरशाह, जिसने सन् 1739 में मुगलों की राजधानी को लूट लिया था तथा इस बहुमूल्य लूट को अपने देश ले गया था।

अनेक उत्कृष्ट लघुचित्रकृति कलाकर इस सुन्दर पक्षी द्वारा प्रेरित हुए। एक चित्रकृति में सम्राट शाहजहां मयूर सिंहासन पर बैठा हुआ है, एक गुलाब का फूल दाहिने हाथ में है, जो राजस्व का प्रतीक है तथा बायां हाथ कटार पर आराम से रखा हुआ है। इस अद्‌भुत सिंहासन का निर्माण बिबादल खान के निरीक्षण में हुआ तथा सात वर्षो में पूर्ण हुआ था।

नीचे दर्शित चित्र चित्रकार मोलाराम द्वारा गढ़वाल शैली में बनायी गयी "गिरी गोवर्धन" शीर्षक चित्रकृति है जो मेघराज इन्द्र के कोप से ब्रज को बचाने के लिए कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाए जाने की दंतकथा से संबद्ध है। अन्य मनुष्यों तथा जानवरों के साथ मोर ने भी पर्वत के नीचे शरण ली। जब काले घने बादलों से वर्षा हुई, तब इन्द्र ने अपने श्वेत हाथी ऐरावत पर सवार होकर ब्रज पर घनघोर वर्षा करने का आदेश बादलों को दिया। गोवर्धन पर्वत पर मोर, वर्षा के प्रारंभ को प्रतीक स्वरूप उद्‌घाटित करता है।

गिरि गोवर्धन–लघु चित्रकृति गढ़वाल शैली, मोलाराम, 18वीं शताब्दी उत्तर काल

emeralds, had a large ruby studded in the breast, from where hung a pear-shaped pearl of 50 carats. It was a symbol of glory of the dynasty and was kept at the court in Delhi. Nadir Shah, the Emperor of Persia, who attacked and looted the capital of the Mughals in 1739, carried away their precious possessions to his country.

Shahjahan seated on the Peacock Throne, Diwan-i-Am, 1639 C.E.

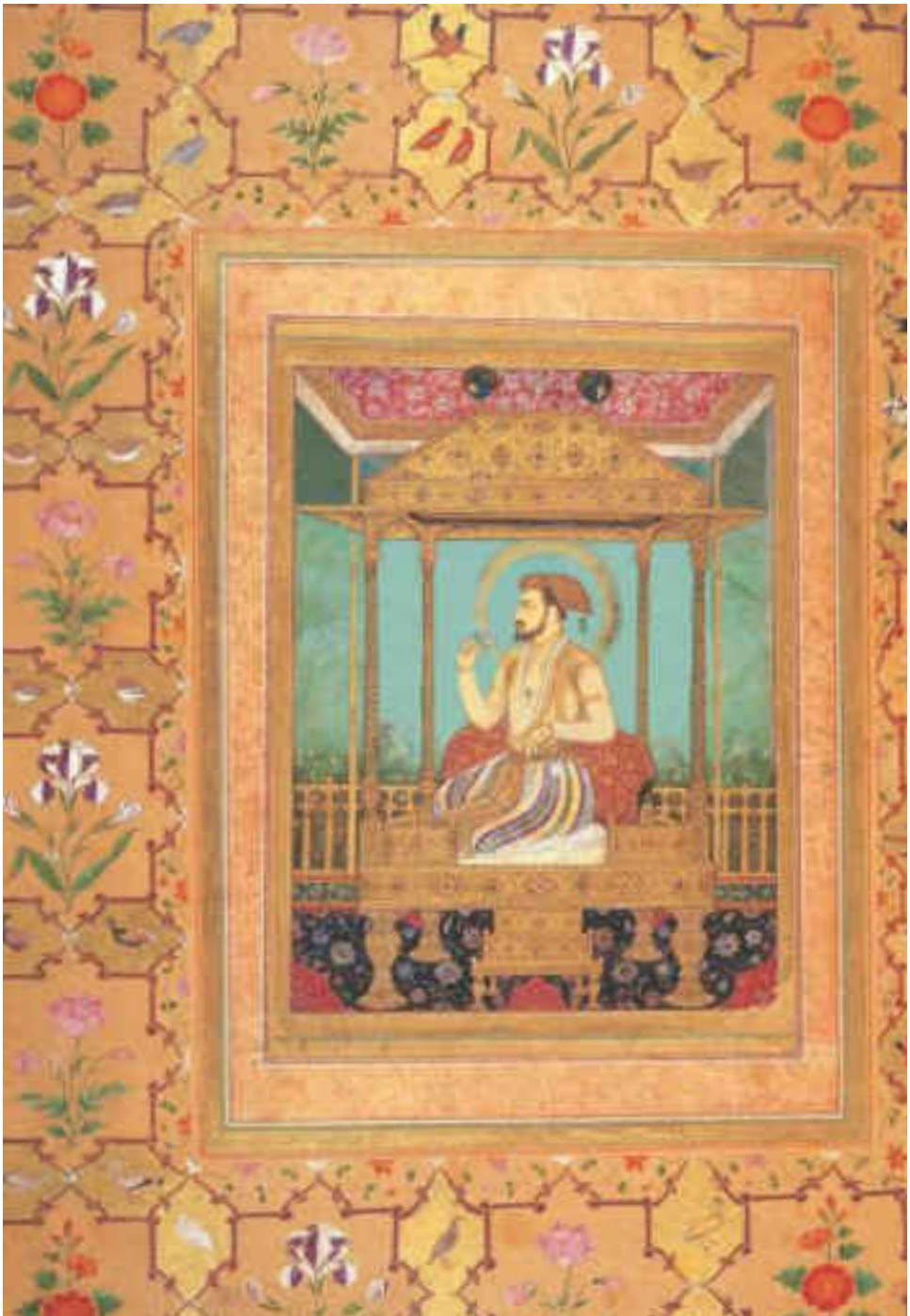

भारतीय संगीत पद्धतियों के राग व रागिनियां चित्रात्मक रूप से रागमाला चित्रकृतियों में प्रदर्शित हैं, जिनमें से अधिकांश में मोर के अभिप्राय को प्रयोग किया गया है। मल्हार राग में मोर प्रेम के लिए तृष्णा (पिपासा) को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करता है। राग वसन्त में मोर की शरीर संरचना एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशिष्टता है। इसमें भगवान कृष्ण को प्रमुखता दी गई है। 'मधु माधवी रागिनी' प्रेयसी की मूक व्यथा को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करती है। अनुपस्थित प्रियतम को मोर के प्रतीक स्वरूप दिखाया गया है। ये राग तथा रागिनियां 17वीं तथा 18वीं शताब्दी की विविधशैलियों की रागमाला चित्रकृतियों की शृंखलाओं में देखी जा सकती हैं।

'मधु माधवी रागिनी' 18वीं शतीब्दी ईसा पूर्व के मध्य की बूंदी शैली की चित्रकृति का एक सुन्दरतम उदाहरण है। ग्रीष्म ऋतु के गर्म दिन समाप्त हो चुके हैं और आकाश में छाए बादल वर्षा ऋतु के प्रारंभ में ऋतु परिवर्तन का समाचार लेकर आते हैं। मंत्रमुग्ध हो मोर अपनी पुकार से प्रकृति में निहित सौन्दर्य के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। महल की स्त्रियां आई हुई पक्षियों को दाना और पानी दे रही हैं। एक स्त्री पात्र थामे है, जबकि एक अन्य स्त्री मोर को भोजन खिला रही है।

भारत में मुगल शासन का संस्थापक बाबर, पक्षियों और पशुओं का प्रेमी था। उसने पक्षियों, पशुओं और फूलों की चित्रकृतियां बनाने के लिए कलाकारों को नियुक्त किया। बाबर की आत्मकथा "बाबरनामा" में गिलहरी, मोर तथा मोरनी, सारस, बगुलों एवं विभिन्न प्रकार की मछलियों का वर्णन एवं चित्रण है। एक चित्रकृति, भवानी नामक चित्रकार द्वारा बनाई गई है, जिसे पक्षियों तथा पशुओं की चित्रकारी में दक्षता प्राप्त थी। चित्रकृति में ऊपर की ओर, पेड़ पर गिलहरियां खेल रही हैं। बीचों बीच मोर का एक जोड़ा दिखाया गया है। इसके नीचे की ओर सारस का जोड़ा और तालाब में मछलियों का जोड़ा है। यह बाबरनामा में प्रस्तुत पक्षियों की अत्यंत सुन्दर चित्रकृतियों में से एक है।

मुगल सम्राट जहांगीर ललित कलाओं का संरक्षक था, जिसने उच्च स्तरीय कृतियां निर्मित करने हेतु अपने कलाकारों व शिल्पकारों को प्रेरित किया। मंसूर द्वारा चित्रित जहांगीर की "मोर मोरनी" एक उत्कृष्ट कलाकृति है। उस्ताद मंसूर अत्यंत सिद्धहस्त एवं प्रसिद्ध चित्रकार थे, जिन्हें "नादिर–उल– अस्र" (वंडर ऑफ दि वर्ल्ड) का खिताब दिया गया था। यह चित्रकृति मोर पक्षी के लालित्य तथा चारूता को प्रदर्शित करती है। मोर अपनी चोंच में एक छोटे–से सांप को थामे आगे भागता है। मोरनी उस सर्प के तड़पते छोटे–छोटे टुकड़ों को देखने के लिए अपनी गर्दन घुमाती है। उसकी मुखाकृति को विशिष्टतापूर्वक दर्शाया गया है और इसके अतिरिक्त पैर के पृष्ठ भाग की गति, सिन्दूरी रंग में गोलाकार पंखयुक्त गर्दन, सुदूरवर्ती पहाड़ियों, पथरीली चट्टानों, वृक्षों तथा फूलों से युक्त सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

मोर का पंख भगवान कृष्ण के मुकुट पर सुशोभित होता है। मोर के पंख महलों, घरों व मंदिरों में रखे जाते हैं तथा मस्ज़िदों और मज़ारों में भी मौलवी आशीर्वाद देने हेतु भक्त के सिर पर मोर के पंखों से स्पर्श करते हैं।

भगवान शिव के पुत्र, कार्तिकेय अथवा स्कन्द अपने वाहन (कार्तिकेय षण्मुख) मोर पर सवार हैं। मोर को एक हिमायती, विजेता योद्धा के रूप में जाना जाता है और उसे देवताओं की सेना का प्रधान माना जाता है। महाभारत तथा पुराणों में, मोर पर सवार भगवान कार्तिकेय के विवरण प्राप्त होते हैं, जिन्होंने तारकासुर का नाश तथा त्रिपुरारी के रथ की रक्षा की थी।

Many eminent miniature painting artists were inspired by the beautiful bird. In a painting, the emperor Shahjahan, seated on the Peacock Throne, holds a rose, the Mughal symbol of royalty, in his right hand, and his left hand rests lightly on the dagger. This marvellous throne was constructed under the supervision of Bebadal Khan and was completed in seven years.

The painting titled "Giri Govardhan" is associated with the legend of Krishna lifting the mountain to protect Braja from the wrath of the rain God Indra. The peacock along with human beings and other animals took refuge under the mountain. While rain pours from dark black clouds, Indra mounted on his white elephant, the *Airavat*, orders the clouds to pour down heavy rain on Braja. A peacock on the Mount Govardhana symbolises the onset of rainfall.

Indian musical modes, the *ragas* and *raginis* are pictorially represented in the Ragamala Paintings, many of which use the peacock motif. In *Malhara Raga*, the peacock represent thirst for love. In *Raga Vasanta*, the plumage of the peacock is a prominent feature, the focus is on Lord Krishna. The *Madhu-Madhavi Ragini* depicts the silent longing of the beloved or the lover, the peacock symbolising the absent lover. These *ragas* and *raginis* and many others are seen in series of Ragamala Paintings of several schools of the 17th and 18th centuries.

Ragni Madhu Madhavi, Jaipur, Rajasthan, Painting about 1630 C.E.

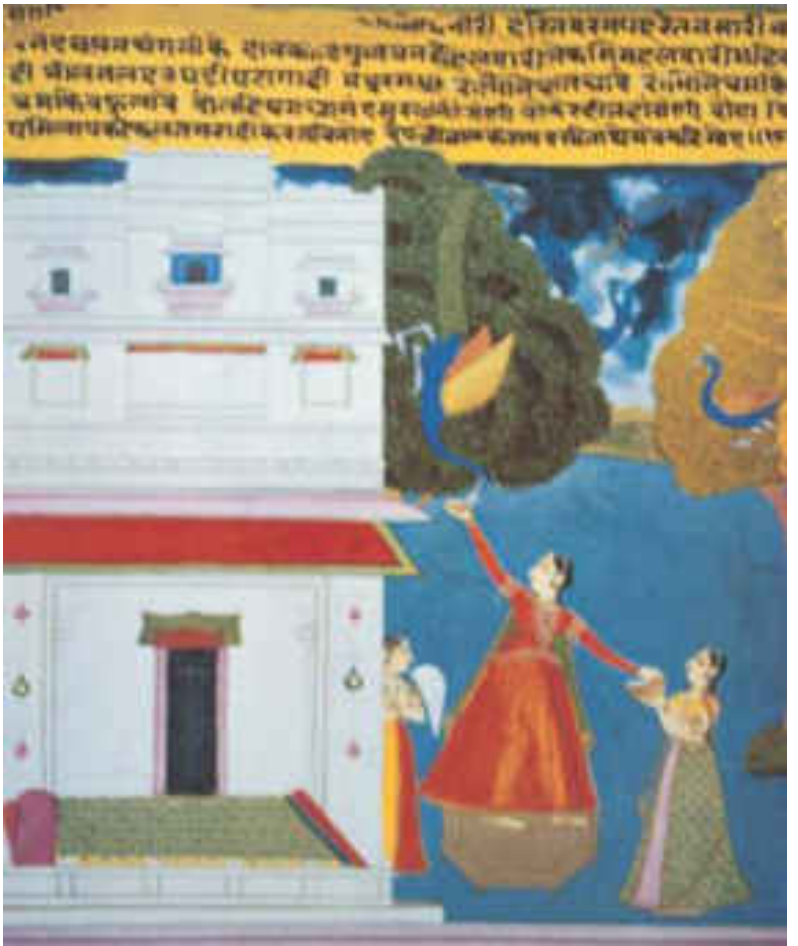

मोर को अन्य अनेक देवी–देवताओं के वाहन के रूप में भी जाना जाता है, जैसेः

गणेश (अपने एक अवतार में) – **मयूरेश, मयूरेश्वर**

कौमारी (दुर्गा का रूप) – **शिखिवाहना**

सरस्वती – यद्यपि सामान्यतः हंस को सरस्वती वाहन माना जाता है, तद्यपि कुछ ऐसे संदर्भ प्राप्त होते हैं, जिनमें देवी सरस्वती को मयूर पर सवार बताया गया है तथा कुछ प्रस्तुतियों में मोर को देवी सरस्वती के पास खड़ा दिखाया गया है।

कार्तिकेय, उत्तर चोल, 12वीं शताब्दी ई०

Ragini *Madhu-Madhavi* is one of the finest examples of Bundi Painting of the mid 18th century C.E The hot days of summer are over and dark clouds in the sky bring joyous tidings of the onset of the monsoon season. The peacocks are enchanted and respond to the beauty in nature. The ladies of the palace offer the perching birds food and water. One lady holds the vessel while the second feeds a peacock.

Babar, the founder of Mughal rule in India, was a great lover of birds and animals. He commissioned artists to make paintings of birds, animals and flowers. In his autobiography "Baburnama" there is a description of the painting of "Squirrels, A Peacock and A Peahen, Sarus, Cranes and Fishes". This painting is by Bhawani, who excelled in painting birds and animals. On the top, squirrels are playing on a tree. In the middle, a peacock and a peahen are shown, below this is a pair of Sarus cranes, and in the pond, a pair of fishes. It is one of the most beautiful paintings of birds and animals in the Baburnama.

The Mughal emperor, Jahangir, was a patron of fine arts who motivated his artists and craftsmen to produce works of the highest quality. Jahangir's "Peafowl", painted by Mansur, is a masterpiece. Ustad Mansur was the most famous animal painter and was given the title, "Nadir-ul-Asr" (Wonder of the World). The painting depicts the grace and elegance of the bird. The peacock rushes forward with a small snake in his beak. The peahen twists her neck to watch the squirming morsel. The plumage has been exquisitely painted and great attention has been paid to fine details like the movement of the rear leg, rounded feathered neck in vermilion, the landscape suggestive of distant hills and rocky cliffs, trees and flowers.

Peafowl, painted by Ustad Mansur, Mughal painting, 1610 C.E.

षडजं वदति मयूरः पुनः स्वरमृषभं चातकों ब्रूते।
गांधाराख्यं छागो निगदति च मध्यमं क्रौञ्चः।।
गदति पञ्चममञ्चितवाक्पिको रटति धैवतमुन्मददर्दुरः।
शृणि समाहतमस्तक कुञ्जरो गदति नासिकया स्वरमंतिकम्।।

कालिदास – 'रघुवंश महाकाव्य'

मयूर द्वारा षडज, चातक द्वारा ऋषभ, छाग द्वारा गांधार, क्रौञ्च द्वारा मध्यम, पिक द्वारा पंचम, दर्दुर द्वारा धैवत तथा कुञ्जर द्वारा निषाद स्वर की उत्पत्ति होती है। इन सातों पशु–पक्षियों को तत्तत् स्वर की उत्पत्ति के कारण विशेष महत्त्व प्राप्त है।

मोर, शिक्षा तथा भारतीय संगीत की देवी सरस्वती के साथ भी निकट रूप से संबद्ध है। सांगीतिक सप्तक के मूल प्रमुख स्वर षडज के निर्माण में मयूर का संदर्भ निर्विवाद रूप से प्राप्त होता है – **षडजं वदति मयूरः।** इससे मन में एक संभावना जागती है कि सरस्वती देवी निश्चित रूप से संगीत से संबद्ध हैं, उन्होंने अपने हाथों मे वीणा पकड़ी हुई है। मयूरी नामक एक वीणा भी है।

मोर की आकृति का चित्रण सर्वप्रथम हड़प्पा के अस्थि कलशों पर प्रकट हुआ। इसमें मृत व्यक्ति की आत्मा अथवा सूक्ष्म शरीर को मोर के उदर पर अनुप्रस्थ मुद्रा में अवस्थित दिखाया गया है। ऐसा विश्वास था कि ये पक्षी आत्मा को दूसरे विश्व में ले जाते हैं।

प्रथम शताब्दी ईसा पू. के आश्चर्यजनक सांची स्तूपों के पाषाण प्रवेश द्वारों के स्तंभों व प्रस्तर पादों पर दो मोर शोभावृद्धि कर रहे हैं। प्रत्येक आकृति पंखे के समान सीधे पंखो पर अवस्थित गोलाकार नेत्रों को विस्तार से प्रदर्शित करती है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के बीच हो रहे झगड़ों से उकता कर शांति की तलाश में जंगल में चले गये, जहां उन्हें जंगली और पालतू जानवरों ने विधिवत आदर प्रदान किया। सांची स्तूपों के तोरण पर बने मोर, कलाकारों की विशेषज्ञता तथा शिल्पकृति की पूर्ण दक्षता को उद्घाटित करते हैं। इन स्तूपों में शिल्पात्मक कला के रूप में पशुओं का प्रस्तुतीकरण अपनी पूर्ण पराकाष्ठा पर है।

साँची–स्तूप के उत्तर द्वार पर मोर एवं मोरनी, सातवाहन वंश, प्रथम शताब्दी ई. पू.

The peacock feather decorates the crown of Krishna and fans made of peacock feathers were kept in palaces, homes and temples. In mosques and *majhars* also, the priest touches the head of a devotee with peacock feathers to bless him.

Karttikeya or Skanda, the son of Shiva is seated on a peacock which is his vehicle or *Vahana* (कार्तिकेय षण्मुख). He is identified as the champion fighter and commander-in-chief of the army of gods. The Mahabharata and the Pauranic texts carry descriptions of Karttikeya, mounted on the peacock, who defended Tripurari's chariot and destroyed Tarakasur.

The peacock is also known as the vehicle of several other deities such as :

Ganesha (गणेश) (in one of his incarnations) - ***Mayuresha*** (मयूरेश),
Mayureshwar (मयूरेश्वर)
Kaumari (कौमारी) (form of Durga) - ***Shikhivahana*** (शिखिवाहना)

Saraswati(सरस्वती)- although usually swan (हंस) is her vehicle, there are some references to her riding a peacock (मयूर)also, in some depictions the *Mayura* is installed by her side.

षडजं वदति मयूरः पुनः स्वर मृषभं चातकों ब्रूते।
गांधाराख्यं छागो निगदति च मध्यमं क्रोञ्चः।।
गदति पञ्चममञ्चितवाक्पिको रटति धैवतमुन्मददर्दुरः।
शृणि समाहतमस्तक कुञ्जरो गदति नासिकया स्वरमंतिकम्।।

Kalidas - 'Raghuvansha'

The peacock is also closely associated with Saraswati, the goddess of learning and with Indian music. The association of *Mayura* (मयूर) in producing the basic keynote of the musical gamut - षडज. षडज वदति मयूरः is an uncontroversial convention. It brings to mind a possible relevance to the fact that the Goddess Saraswati is convincingly associated with music holding a Veena in her hands - *Veenadharani* (वीणाधारिणी). There is also a Veena known as *Mayuri Veena* (मयूरी वीणा).

The peacock is first seen on the funeral urns of Harappa. The dead man's spirit or *suksma sarira* is depicted as horizontally placed in the belly of the peacock which these birds are supposed to transport to the other world.

The fabulous Sanchi Stupas of the Ist century. B.C.E have group of twin peacocks decorating the architraves and posts of the stone entrance gateways, each figure shows in detail the circular eyes on the erected fan-tail feathers. The legend goes that Lord Buddha, tired of the disputes among his disciples, left for the forest in search of peace where he was given due respect by all the animals, amongst them were a pair of peacocks. The peacocks on the Sanchi *torana* reveal the mastery and expertise of the artists. In Sanchi the representations of animals in sculptural art reached a high stage of perfection.

पांचवी शताब्दी के देवगढ़ स्थित दशावतार मंदिर में शेषशायी विष्णु मूर्तिफलक के ऊपरी भाग में उड़ते मोर की पीठ पर सवार कार्तिकेय का भव्य प्रस्तुतीकरण है। मध्यप्रदेश की कुछ गुप्तकालीन पाषाण शिल्पकृतियों में भी मोर पर सवार कार्तिकेय को प्रदर्शित किया गया है। अमरता का प्रतीक–मोर परंपरागत रूप से सर्पों का नाशक है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से सम्बन्धित शास्त्रों के अनुसार मयूर द्वारा सर्पहत्या उसके कालजयी होने का प्रतीक है एवं इससे मयूर की शत्रु दमन शक्तियाँ उद्घाटित होती हैं। अतः मोर को देवताओं में व्यापक रूप से लोकप्रिय एवं सेनापति, कार्तिकेय के वाहन का पद उचित ही प्रदान किया गया है।

मोर की सुन्दरता, लालित्य और मित्रतासुलभ गुणों के साथ ही साथ पिछली अनेकानेक शताब्दियों से पुराणों, दंतकथाओं तथा साहित्य में मोर के प्रचुर संदर्भ को देखते हुए वर्ष 1963 में मोर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया।

In the famous 5th century temple of Deogarh, there is a remarkable depiction of a flying peacock with Karttikeya on its back on the upper portion of *Sheshashayi Vishnu*. Some of the Gupta stone sculptures from *Madhyadesha* also depict Karttikeya mounted on a peacock. Karttikeya is seen sitting on his mount the peacock, Paravani. The Peacock, the bird of immortality is traditionally the killer of serpents. Cosmologically the serpent is a symbol of the cyclic concept of the time. In killing the serpent, the peacock annihilates time - which indicates its power to destroy enemies. Therefore, it has appropriately been attributed the status of the *vahana* of Karttikeya, the generalissimo of Gods.

Considering its beauty, grace and qualities of friendship as well as its reference in myth, legend and later literature dating back to several centuries the Peacock was declared as India's National Bird in 1963.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

मौर्य राजवंश का नाम मोर (मयूर) पक्षी के ही आधार पर रखा गया था। मौर्यकालीन स्वर्ण व रजत अनेकानेक सिक्कों पर मोर की आकृति अंकित मिलती है। मौर्यकालीन मोर अंकित कुछ स्वर्ण, रजत सिक्कों के चित्र बनाइये अथवा एकत्रित कीजिए।

'तख़्त–ए–ताऊस' (मोर सिंहासन) पर एक अनुच्छेद लिखिए।

मोर के साथ जुड़ी दंतकथाओं में से कहानियां एकत्रित कीजिए।

संग्रहालयों तथा कला वीथिकाओं की यात्रा कर मोर को प्रदर्शित करने वाली संगृहीत वस्तुओं एवं चित्रकृतियों का अध्ययन कीजिए।

वर्षा ऋतु में मोर द्वारा किए जाने वाले नृत्य पर एक कविता/अनुच्छेद लिखिए।

वर्षा के साथ मोर की पुकार के जुड़े होने के कारण खोजिए।

पक्षियों के गिरे पंख एकत्रित कर प्रत्येक पंख का विवरण देते हुए चित्र संग्रह (एलबम) तैयार कीजिए।

भारत के "संकटापन्न पक्षियों" (एन्डेन्जर्ड) तथा उनके संरक्षण से जुड़े कानूनों की एक सूची बनाइए।

Creative Activities for Students and Teachers

The Mauryan dynasty was named after the bird Peacock *(Mayura)*. A number of Mauryan gold and silver coins show the peacock. Collect pictures or draw some of the Mauryan gold and silver coins showing the peacock.

Write a paragraph on the "Peacock Throne".

Collect stories from legends associated with the peacock.

Visit the Museums and Art Galleries and study artefacts and paintings showing the peacock.

Write a poem/paragraph on the dance of the peacock during the rainy season.

Find out why the peacock call is associated with rain.

Collect fallen feathers of birds and make an album describing each feather.

Make a list of "endangered birds" of India and laws related to their protection.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

Acknowledgements

Dr. Sumati Mutatkar

Dr. B. N. Goswamy

References

Asian Folklore Studies, (1974), VOL. XXXII, "The Peacock Cult in Asia, "Japan.

Jobes, Gertrude, (1963), " Dictionary of Mythology, Folklore and Symbols", London.

Journal of the Asiatic Society, (1973), Calcutta.

Nair, P.T., (1973), "Peacock-National Bird of India", Kolkata.

Randhawa, M.S., (1983), "The Paintings of Baburnama", New Delhi.

Sivaramamurthi, C., (1975), "Birds and animals in Indian Sculpture", New Delhi

Vedas, Rig, Yajur and Atharva.

Zimmer, Heinrich, "Myths and Symbols in Indian Art and Civilization", London.

Photo Credits

National Museum, New Delhi

Sangeet Natak Akademi, New Delhi

B.N. Khazanchi.

Phal S. Girota.

Stanley and Belinda Breeden, World Wide Fund for Nature-India.

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem

National Flag

National Anthem

National Song

National Flower

National Bird

National Animal

National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

राष्ट्रीय प्रतीक

बाघ

Tiger

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्रीय पशु

बाघ

Tiger

NATIONAL ANIMAL

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

बाघ

शक्ति एवं शौर्य के प्रतीक बाघ की आकर्षक व मनोहारी गतिविधियां – वन्य प्राणियों में एक अद्‌भुत भय पैदा कर देती हैं। फिर भी मानव ने अपने स्नेहयुक्त शिक्षण द्वारा इस हिंसक जंगली जानवर को समय–समय पालतू बनाने में सफलता प्राप्त की है।

भारतीय बाघ (पैन्थेरा टिगरिस) विश्व भर के कुल बाघों की आबादी का साठ प्रतिशत हिस्सा है। पूरे देश में बाघ के विशाल वितरण को ध्यान मे रखते हुए ही वर्ष 1972 में इसे राष्ट्रीय पशु घोषित किया गया।

सुन्दरवन के कच्छ वनस्पति दलदलों से लेकर उत्तर–पश्चिमी भारत के सूखे कंटक वनों और हिमालय के निचले भागों में स्थित और ऊंचे, मैदानी, घास युक्त जंगलों तक बाघ भिन्न प्रकार के प्राकृतिक आवासों में पाया जाता है। सुन्दरवन में पाया जाने वाला रॉयल बंगाल प्रजाति का बाघ अत्यन्त सुन्दर पशुओं में से एक है। यह लालिमा युक्त भूरे रंग का होता है और इसके सिर और पीठ पर चौड़ी काली धारियाँ पाई जाती हैं। इसकी चमकदार आँखें, शक्तिशाली जबड़े, भैंस को भी सरलता से चीरने–फाड़ने में सक्षम पैने दांत और दो मील से भी ज्यादा दूर तक सुनाई देने व कँपकँपी पैदा करने वाली दहाड़ सभी को भयभीत कर देती है। बंगाल प्रजाति के बाघ से मिलता–जुलता, सफेद बाघ भी भारत के विभिन्न भागों में पाया जाता है। यह सफेद रंग का होता है और इसकी आँखे सामान्य रूप से पाए जाने वाले सुनहरी भूरे रंग की बजाय नीली होती है। इसके शरीर की धारियों का रंग भी हल्का होता है। यह वास्तव में बाघ की कोई नई प्रजाति नहीं है, बल्कि पहले से पाए जाने वाले दो अनुवांशिक (जीन) बाघों के संयोग से उत्पन्न बिल्कुल अलग विशिष्टताओं वाला बाघ है। पहला सफेद बाघ, मध्यप्रदेश में स्थित रीवा के महाराजा द्वारा अचानक शिकार करते समय सन् 1951 में देखा गया था।

TIGER

The Tiger is a symbol of power and strength. Its majestic, graceful movements create an awesome fear in the inhabitants of the forest. Yet, man has sometimes been able to tame the great beast with love and discipline.

The Indian tiger (Panthera tigris) accounts for sixty percent of the world's tiger population. Considering the wide distribution of the tiger, it was declared the National Animal of India in 1972.

The tiger is found in many habitats; from the mangrove swamps of Sunderbans to the dry thorn forests of north western India and the tall grass jungles in the Himalyan foothills. The Royal Bengal Tiger, found in Sunderbans, is one of the most magnificent animals. It is reddish brown in colour with broad black stripes on his head and back. Its bright burning eyes, powerful jaws and sharp teeth that can effortlessly tear up a buffalo, the blood chilling roar which can be heard for more than two miles, fill one with fear. Similar to the Bengal Tiger, White tiger is also found in different parts of India. It is white in colour and has blue eyes instead of the normal golden brown eyes. The stripes are also lighter in colour. It is not really a new species of tiger but actually a result of two successive genes coming together and showing their characters externally. The first white tiger was sighted quite by accident in 1951 by the Maharaja of Rewa in Madhya Pradesh while hunting.

The tiger is often described as the spirit of the jungle. It is said that the status of the tiger in the country is an index of the ecological health of the wilderness. Where the tiger thrives, there will be ample forest cover, regular supply of life nourishing water and plenty of other animals - antelopes, deer, gaurs, etc. that tigers can feed on.

The tiger is a carnivorous animal and feeds on various small and big animals. He usually attacks its prey from the back making very slow stealthy advances. He entertains no interference during his meal and after being completely satisfied, he usually doesn't hunt for the entire day or till he is hungry again. A tiger is not a man eater by nature, he only indulges in such a practice when he cannot stalk or hunt down his natural prey, due to an injury or old age.

The tiger belongs to the "Cat" Family. The length of a normal tiger ranges between 2.6 mts. to 2.9 mts. and it weighs about 180 kg. Essentially a loner, a tiger and tigress come together in the mating season. A tigress gives birth to five to six cubs at a time, out of which only two to three make it to adulthood. Tiger cubs are tiny, blind and helpless when they are born and are totally dependent on their mother for food for about three months. The maximum age of a tiger is about 20 years.

बाघ को प्रायः 'वन की आत्मा' कहा जाता है। देश में बाघ की स्थिति को ही हमारे जंगल–बीहड़ों के परिस्थितिकीय स्वास्थ्य का सूचक माना जाता है। जहां कहीं भी बाघ होंगे, वहां पर पर्याप्त घने जंगल, जीवनदायी जल की नियमित उपलब्धता और कई अन्य जानवर, जैसे – कुरंग, हिरण, बोदा (गौर) आदि भी अवश्य ही होंगे, जिनका शिकार कर वे जीवन–निर्वाह कर सकें।

बाघ एक मांसाहारी पशु है और तरह–तरह के छोटे–बड़े जानवरों का भक्षण करता है। वह अपने शिकार पर बहुत धीरे और चुपके से आकर पीछे से वार करता है। बाघ भोजन करते समय किसी प्रकार की दखलंदाजी पसन्द नहीं करता और पूर्ण–रूप से तृप्त होने पर पूरा–पूरा दिन या पुनः भूखा होने तक शिकार नहीं करता। बाघ, स्वभावतः नरभक्षी नहीं है। परन्तु चोट लगने अथवा बूढ़ा होने के कारण जब वह लुक–छिपकर अपने शिकार का पीछा करने में असमर्थ हो जाता है, तभी वह आदमखोर बनता है।

बाघ "बिल्ली" प्रजाति का पशु है। सामान्यतः एक बाघ की लंबाई 2.6 मीटर से 2.9 मीटर तथा इसका वजन लगभग 180 कि.ग्रा. होता है। मुख्यतः अकेले रहने वाले बाघ व बाघिन, संगम ऋतु में इकट्ठे रहते हैं। बाघिन एक बार में पांच से छह शावकों को जन्म देती है, जिनमें से केवल दो या तीन शावक ही प्रोढ़ावस्था तक पहुंच पाते हैं। बाघ के शावक, जन्म के समय नन्हें, दृष्टिहीन और असहाय होते हैं तथा लगभग पहले तीन माह तक भोजन के लिए अपनी मां पर ही आश्रित रहते हैं। एक बाघ की अधिकतम आयु लगभग 20 वर्ष होती है।

भारतीय बाघ प्राचीन समय में वैदिक काल के पूर्व से ही भारत में लोकप्रिय था। भारत में बाघ की प्राचीनतम आकृतियां 2500 ईसा पू. सिन्धु घाटी सभ्यता की हड़प्पा कालीन प्रसिद्ध मोहरों पर प्राप्त होती हैं। कहीं–कहीं बाघ की ये आकृतियां आगे के आधे भाग में स्त्री तथा पीछे के आधे भाग में बाघ के रूप में भी प्राप्त होती हैं।

हड़प्पा कालीन मोहर पर अंकित बाघ (2500 ईसा पू.)

बाघ ने भारतीय पौराणिक कथाओं में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शेर और बाघ क्रमशः दुर्गा तथा काली के वाहन माने जाते हैं। देश के अधिकतर भागों में मनाया जाने वाला विजया–दशमी पर्व बुराई पर अच्छाई का प्रतीक हैं। बाघ पर सवार देवी द्वारा भैंसे की मुखाकृति वाले राक्षस महिषासुर को एक घमासान युद्ध में मार कर विजय प्राप्त करने के कारण ही उन्हें 'महिषासुर मर्दिनी' के नाम से जाना जाता है।

हमें यजुर्वेद में भी उग्र बाघ से रक्षा का संदर्भ प्राप्त होता है। अथर्ववेद में बाघ के भय से संरक्षण देने पर पूरा सूक्त है, तथा ऐत्तरेय ब्राह्मण में बाघ को जानवरों में क्षत्रिय के रूप में दर्शाया गया है।

अजेय शक्ति के प्रतीक बाघ की खाल–व्याघ्रचर्म–भगवान शिव का वस्त्र – स्वरूप है। इसलिए उन्हें वाघंबरधारी के नाम से भी जाना जाता है। वनों अथवा गुफाओं में गहन तपस्या करते समय ऋषि–मुनि बाघ की खाल पर बैठते हैं, क्योंकि इससे डर कर कीड़े, सर्प अथवा बिच्छू निकट नहीं आते हैं।

एक प्राचीन रिवाज के अनुसार, राज्य करने का दावा सिद्ध करने के लिए बाघ से लड़ाई करना आवश्यक था। ऐसे सभी अवसरों पर, बाघ को हिंसा का नहीं, बल्कि शक्ति का प्रतीक माना जाता था।

टीपू सुल्तान का बाघ के साथ अत्यधिक लगाव था। उसके प्रतीक चिह्न, सेना की वर्दी और 'भारत के बाघ' के रूप में उसकी प्रसिद्धि से उसके बाघ–प्रेम का पता चलता है। उसके सिंहासन की दोनों बगलें बाघ शीर्ष के जोड़ों से अलंकृत थीं। यह रत्नों और कीमती पत्थरों से जड़ा हुआ तथा सोने व चांदी से गढ़ा हुआ एक उत्कृष्ट धातु शिल्प है। निस्संदेह बाघ को राजसी प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया था।

शताब्दियों से शिल्पकारों और चित्रकारों ने बाघ संबंधी पौराणिक तथा दंतकथाओं से प्रेरणा प्राप्त की है। कवियों, गायकों और नर्तक कलाकारों ने बाघ पर कविताएं व गीत लिखे हैं एवं इन कथाओं का नाटकीकरण किया है।

देश के विभिन्न प्रदेशों की अनके पंरपरागत नाट्य शैलियों में बाघ एक प्रमुख चरित्र है– कहीं एक शक्तिशाली पवित्र देवता के रूप में, तो कहीं परंपरागत नाटकों में हास्य–विनोद का भाव उत्पन्न करने हेतु एक हास्य चरित्र के रूप में, जैसे कश्मीर की भांड–पाथेर शैली की कहानियों में। परंपरागत तथा ग्रामीण नृत्य शैलियों में भी बाघ प्रमुखता से दिखाई देते हैं। आज भी देश के अनेक भागों में हमें इस अद्‌भुत जानवर की मनोहारी छवि को प्रदर्शित करने वाले बाघ के मुखौटे पहने या अपने शरीर पर इसकी धारियां अंकित कराए हुए नर्तक दिखाई देते हैं। बाघ ने अनेक शिल्पकारों को भी प्रेरित किया है, चाहे प्रस्तुति माध्यम–टेराकोटा, काठ, धातु, वस्त्र बुनाई अथवा कशीदाकारी कुछ भी हो, सभी में बाघ के अभिप्राय को प्रमुख स्थान प्राप्त होता है।

The Indian tiger was well known in India even in ancient times prior to the Vedic period. The earliest images of the tiger in India appear on the famous Harappan seals which survive from the Indus civilization and date from about 2500 B.C.E These images sometimes figure half woman and half tiger, of which the front half is a woman and the hind half a tiger.

The tiger has played a significant role in Indian mythology. The most powerful and fearsome of goddesses, Durga and Kali have lion and tiger as their *vahanas,* respectively. In many parts of the country, *Vijaya Dashami* is celebrated representing the victory of good over evil. The goddess, riding the tiger, overcomes Mahishasura, the great buffalo headed demon by killing him in a fierce battle, and hence is known as *Mahisasura mardini*.

Mahisasura mardini, *Markandeya Purana,* Guler, Pahari, *Circa* C.E 1780

प्राचीन कला तथा साहित्य में हमें बाघ के संदर्भ बहुतायत में प्राप्त होते हैं। वैदिक सूक्तों में पशुओं तथा मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ देवी–देवताओं के आह्वान का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में पशुओं की विनाशकारी विशेषताओं पर बल दिया गया है। तैत्तिरीय संहिता में सोते बाघ को जगाने से होने वाले खतरे का संदर्भ दिया गया है। ऐत्तेरेय बाह्मण में बाघ के लिए शार्दूल शब्द का प्रयोग किया गया है।

वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण में अक्सर प्राणि जगत से उपमांए देते हुए घटनाक्रमों का चित्रात्मक वर्णन किया है। राम के लिए वनवास का वर मांगने वाली रानी केकैयी के क्रूर वचनों से दुखी राजा दशरथ की तुलना एक हिरण से की गई है, जो केकैयी के रूप में एक बाघिन को देख दुखी और भयभीत हो गया है।

सम्राट अशोक ने उग्र तथा विनम्र आदि सभी प्रकार के जीवों के सरंक्षणार्थ आदेशपत्र जारी किया था। मुगल शासकों में, बादशाह जहाँगीर के पास लघुचित्रकृतियों का एक विशिष्ट संग्रह था, जिसमें हिरण तथा बाघ जैसे पशुओं पर विशेष बल देते हुए शिकार के दृश्यों को प्रदर्शित किया गया था। मंसूर एक प्रसिद्ध चित्रकार थे, जिन्होंने पशुओं की चित्रकारी में विशेष दक्षता प्राप्त की थी।

शिकार राजाओं का एक लोकप्रिय खेल था, पराक्रमी शूरवीर राजाओं के लिए नरव्याघ्र (मनुष्यों में बाघ) जैसे आदरसूचक शब्द प्रयोग किए जाते रहे हैं। "बाघ का शिकार करते हुए रघुराज सिंह" शीर्षक चित्रकृति में हम वृक्षों से घिरे भूरे से चट्टानी भू–दृश्य को देख सकते हैं। इसमें रघुराज सिंह अपने साथियों सहित हाथी पर सवार होकर बाघ का शिकार कर रहे हैं।

बाघ का शिकार करते हुए रघुराज सिंह, दतिया, बुंदेलखंड, 1855 ई.

There is reference in the *Yajur Veda* regarding protection from the ferocious tiger. In the *Atharva* Veda, there is a whole *Sukta* (सूक्त) dealing with protection from the fear of tiger. The *Aitareya Brahmana* refers to the tiger as a *Kshatriya* (क्षत्रिय)among animals.

A tiger skin, *Vyaghra Charm,* (व्याघ्रचर्म) a symbol of invincible strength, forms a garment for Lord Shiva. Therefore, he is also known as *Vaghambardhari* (वाघांबरधारी). Holy sages sit on a tiger skin while in deep meditation in forests or in caves, as no insect, snake or scorpion will go near it due to fear.

An ancient custom required combat with a tiger to establish claim to kingship. On such occasions, the tiger represented not violence but strength.

Tipu Sultan's obsession with the tiger is apparent from the emblem, army dress and above all, he himself was popular as 'The Tiger of India'. His throne had a couple of tiger head-finials on either side. It is an excellent metalwork wrought in gold and silver embedded with jewels and precious stones. The tiger was undoubtedly accepted as a symbol of royalty.

Sculptors and painters over the centuries have derived inspiration from the myths and legends associated with the tiger while poets, singers and dancers have written verses and songs and dramatised these stories.

The tiger is a major character in many traditional theatre forms of different regions of the country-somewhere as a mighty divine form, somewhere as a comical figure to add humour to the traditional plays as in some stories of the Bhand Pather of Kashmir. The

पशुओं के प्रति मनुष्य की भावनाओं में सदा ही विरोधाभास, भय, प्रशंसा, लालच, क्रूरता तथा प्रेम का मिला–जुला तत्त्व रहा है। कला में ये भावनाएं सतत जीवन्त रूप में अभिव्यक्त की गई हैं।

रागिनी सिहूती (कांगड़ा रागमाला चित्र, 1790 ई.) चित्रकृति में हम रागिनी सिहूती के दोनों ओर एक बाघों का जोड़ा देख सकते हैं, जो उसके द्वारा दिखाए गए स्नेह का पूर्ण आनन्द उठा रहे हैं। ये बाघ तनिक भी आक्रामक नहीं हैं। रागिनी सिहूती उनके सिरों को पुचकार रही है, जो कि मखमल के समान मुलायम हैं। कुछ कवियों ने तो प्रेम और पशु जीवन की जानकारी से भरपूर सुन्दर छन्दों की रचना की है। प्राचीन भारतीय कलाकार ने अनेकानेक सुन्दर कृतियों मे बाघ के लालित्य, शक्ति तथा गरिमा को विशेष महत्त्व दिया है, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।

रागिनी सिहूती, पहाड़ी रागमाला चित्र, 1790 ई.

tiger has always figured prominently in traditional and rural dance forms. Even today in many parts of the country we see dancers wearing tiger masks or with stripes painted on their bodies depicting the stealth and grace of the great animal. The tiger has inspired many a crafts person as well, whatever the medium - terracotta, wood, metal, textile weaving or embroidery, the tiger motif finds a prominent place.

Ancient art and literature is replete with reference to the tiger. The Vedic hymns call upon the heavenly bodies for the welfare of the animals as well as human beings. The *Atharva-Veda* stresses the destructive character of the animal. The *Tattriya Samhita* refers to the danger of waking a sleeping tiger. The *Brahmanas* use the term *'shardoola'* for tiger. Valmiki in the epic, *Ramayana* very often picturesquely describes situations by drawing similies from the world of animals. Dashratha, hurt by the cruel words of Kaikeyi, who asked for banishment of Rama, is compared to a deer, distressed and trembling at the sight of a tigress.

Emperor Ashoka passed edicts to preserve all forms of animals - the ferocious as well as the meek. Amongst the Mughal rulers, Jahangir had a unique collection of miniature paintings depicting hunting scenes with special focus on the deer and the tiger. Mansur was a famous painter who also excelled in the painting of animals.

Shikar was a popular sport of the royal princes. Honorific terms like *naravyaghra* (tiger among men) have been conferred upon valiant kings. In this painting, we can see brownish rocky landscape dotted with trees. Raghuraj Singh mounted on an elephant along with his accomplices is shooting at the tigers.

Man's feelings toward animals have always had this element of paradox, a mixture of fear, admiration, greed, cruelty and love. And these feelings have continuously and vividly been expressed in art. In the Pahari painting of Ragini Seehuti (1790 C.E.), we can seen a pair of tigers on either side of the Ragini Seehuti enjoying the affection being showered on them by her. They are gentle and not at all aggressive. Ragini Seehuti is caressing their head which is as soft as velvet. The ancient Indian artist has highlighted the vibrancy, grace, strength and dignity of the tiger in many beautiful works which form part of our cultural heritage.

The age of the Guptas was a period of refinement of intellectual brilliance and sophistication. Some exceptional animal sculptures can be seen, at Mahabalipuram, Muktesvar temple. etc. Animals associated with deities are not only sacred, they are also endowed with divine powers. Animals representations are numerous in ancient Indian sculptures of Bharhut, Sanchi, Bodhgaya and Mathura, revealing the innate love of the Indian artist for animals. At Bharhut, a tiger chases a herd of deer grazing confidently.

At the beginning of this century there were as many as eight sub-species of the tiger-the Amur, Bali, Bengal, Caspian, IndoChinese, Javan, South China and Sumatran; they numbered about 1,00,000 of which 40,000 were in India. However, in this century alone, three sub-species of the tiger were driven into extinction - The Bali, Javan and Caspian.

गुप्तकाल बौद्धिक वैभव व गौरवशाली संस्कृति का समय था। उस समय के कुछ असाधारण पशु शिल्प महाबलीपुरम तथा मुक्तेश्वर मंदिर आदि में देखे जा सकते हैं। देवी–देवताओं से संबद्ध पशु न केवल पवित्र, बल्कि दैवी से संपन्न भी माने जाते हैं।

भरहुत, सांची, बोधगया तथा मथुरा स्थित प्राचीन भारतीय शिल्पकृतियों में पशुओं को दर्शाया गया है, जो कि उनके प्रति भारतीय कलाकर के सहज प्रेम को अभिव्यक्त करता है। भरहुत स्थित शिल्पकृति में एक बाघ को आश्वस्त होकर चर रहे हिरणों के झुण्ड का पीछा करते हुए देखा जा सकता है।

इस शताब्दी के प्रारंभ में बाघ की आठ उप–प्रजातियां थीं – अमूर, बाली, बंगाली, कैस्पियन, भारत–चीनी, जावाई, दक्षिण–चीनी और सुमात्राई। इन सभी प्रजातियों के बाघों की संख्या लगभग 1,00,000 थी, जिनमें से 40,000 बाघ भारत में थे। हालांकि केवल इसी शताब्दी में बाघ की तीन उप–प्रजातियां – बाली, जावाई और कैस्पियन प्रायः लुप्त हो गई हैं।

स्वतंत्रता से पहले, अंग्रेजों तथा राजा–महाराजाओं ने हज़ारो बाघों का शिकार किया। खाल के लिए बाघों को मार कर इनका व्यापार आरंभ किया गया, क्योंकि उन दिनों बाघ की खाल पहनने का बहुत रिवाज़ था। आजकल बाघ की हड्डियों का औषधीय प्रयोग किया जाता है और ऐसी मान्यता है कि इनमें वाजीकर शक्तियां होती हैं।

हालांकि सन् 1970 में बाघ के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया और भारत सरकार ने 1973 में बाघ का संवर्धन करने के लिए देश में बाघ परियोजना भी आरंभ की, फिर भी, आज हमारे जंगलों में केवल 3,000 बाघ ही शेष हैं। भारत में 23 बाघ आरक्षित क्षेत्र हैं, जबकि अन्य कुछ क्षेत्रों तथा वनों में भी बाघ पाए जाते हैं।

सी आई टी ई एस (कन्वेन्शन ऑन इन्टरनेशनल ट्रेड इन एन्डेन्जर्ड स्पीशीस ऑफ वाइल्ड फॉना एण्ड फ्लोरा) के सदस्य देशों ने नवंबर, 1994 में बाघ की हड्डियों तथा उत्पादों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर रोक लगाने की दिशा में कदम उठाने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। इन सभी संरक्षात्मक उपायों के बावजूद भी, गैरकानूनी रूप से बाघ को मारना जारी है। साथ ही, जंगल में बाघ के प्राकृतिक वास भी कम हो रहे हैं। भूमि पर खनन, सिंचाई और बिजली संयंत्रों की बढ़ती मांग भी बाघ के जीवन के लिए खतरा बनी हुई है।

हम सबको एक सफल संवर्धन योजना विकसित कर बाघ संरक्षण की जिम्मेदारी लेनी होगी और उनका जीवन सुनिश्चित करना होगा। इसके लिए मनुष्य तथा प्रकृति के बीच सामंजस्य को बढ़ाना होगा। जन सामान्य को बाघ की संकटजन्य स्थिति से अवगत कराना होगा, ताकि वे बाघों को लुप्त होने से बचाने के प्रयासों में भाग लेने हेतु और अधिक जागृत हो सकें।

विश्व वन्य जीव कोष ने भारत का संरक्षित क्षेत्र कार्यक्रम (प्रोटेक्टेड एरियाज़ प्रोग्राम) आंरभ किया है, जो संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन, अभियान व माध्यम सतर्कता, कानूनी हस्तक्षेप; आधार आंकड़ो के विकास; शिक्षा तथा बोध गतिविधियों; अनुसंधान कार्य; सरकारी नीतियों; योजनाओं तथा कानून के पुनरावलोकन; मानव संसाधन विकास और वन्य जीवन व्यापार अनुवीक्षण पर केन्द्रित है।

Sculpture showing the goddess riding the tiger, Mahabalipuram, 6th Century C.E.

The Britishers and the Royal Princes, took the lives of thousands of tigers prior to Independence. The poaching trade was set up to shoot tigers for their skins as wearing tiger skin was in high fashion. Nowadays, tiger bones are used for medicinal purposes and believed to have aphrodisiac powers.

Although tiger hunting was banned in 1970 and the Indian Government launched Project Tiger in 1973 to conserve tigers in the country, today only 3000 survive in the wild. India has 23 Tigers Reserves though the animal is also found in some other protected areas and forests.

In November 1994, CITES (Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora) Member Nations decided to take steps in the direction of halting international trade in tiger bone and tiger products. Despite all these protective measures, illegal killing of the tiger continues. In addition, its forest habitat is also on the fast decline. The increasing demand of mining, irrigation and power plants on the land is also threatening the survival of the tiger.

All of us should shoulder the responsibility of protecting the tiger and ensure its survival by evolving a successful conservation strategy, that is, by promoting harmony between mankind and nature. People should be made aware of the crisis the tiger is facing and be more vigilant to participate actively in arresting the elimination of tigers.

World Wide Life Fund has launched India's Protected Areas Programme which focusses on protected areas management; campaigns and media alerts; legal interventions; database development; education and awareness activities; research work; review of government policies, plans and laws; human resources development; and monitoring of wildlife trade.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

"बाघ परियोजना" (प्रोजेक्ट टाइगर) पर एक अनुच्छेद लिखिए।

"बाघ परियोजना" से संबद्ध वन्य जीव अभयारण्यों तथा राष्ट्रीय उद्यानों में से कम से कम 5–7 स्थानों को भारत के रेखाचित्रीय मानचित्र पर अंकित कीजिए।

जाने – माने पर्यावरणविदों की सूची बनाकर, वन्य जीवन संवर्धन में उनके योगदान का ब्यौरा प्राप्त कीजिए।

'बिल्ली' (कैट) प्रजाति के अन्य सभी पशुओं के नाम बताइए। उनकी विशेषताएं लिखकर बाघ से भिन्नताओं का उल्लेख कीजिए।

बाघ के "पैरों के निशान" रेखांकित कीजिए।

किसी राष्ट्रीय उद्यान/वन्य जीवन अभयारण की यात्रा कीजिए और अपने अनुभव लिखिए।

बाघ को प्रदर्शित करती चित्रकृतियों एवं शिल्पकृतियों को ढूंढिए तथा उनके मूल संबंधित स्थान के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Write a paragraph on "Project Tiger".

On an outline map of India locate five to seven Wild Life Sanctuaries and National Parks associated with "Project Tiger".

Make a list of well known environmentalists and write about their contribution in the field of wild life conservation.

Name some animals of the "cat" family and write about their distinguishing features. How do they differ from the tiger?

Draw the "Pug marks" of a tiger.

Visit any National Park/Wild Life Sanctuary and write about your experiences.

Find out paintings and sculptures depicting the tigers and collect information about their places of origin.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The slides, with descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

Acknowledgements

Dr. Sumati Mutatkar

Dr. B.N. Goswamy

References

Banerjee, J.N., (1956), "The Development of Hindu Iconography", Kolkata.

Bhattacharya, Asok. K., (1974), "Chitralaksana : A Treatise on Indian Painting", Kolkata.

Dhaky, M.A. "The Vyala Figures on the Medieval Temples of India".

Grewal, Bikram, (1993), "Indian Wild Life", Singapore.

Gupta, R.S., (1972), "Iconography of the Hindus, Buddhists and Jains", Bombay.

Ions, Veronica, (1967), "Indian Mythology", London.

Journal of the World-Wide Fund for Nature India.

Sivaramamurti, C., (1978), "Chitrasutra of the Vishnudharmottara", New Delhi.

Photo Credit

National Museum, New Delhi

Sangeet Natak Akademi, New Delhi

E. Hanumantha Rao, Courtesy World Wide Fund for Nature -- India.

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

राष्ट्रीय प्रतीक

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।

Vande Mataram

NATIONAL SYMBOLS

राष्ट्र गीत

NATIONAL SONG

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

वन्दे मातरम्

''..... एक महान ऐतिहासिक परंपरा का वाहक गीत–'वन्दे मातरम्' स्पष्ट एवं निर्विवाद रूप से भारत का सर्वप्रथम राष्ट्र गीत है। ये गीत हमारे स्वतंत्रता संग्राम के साथ अंतरंग रूप से जुड़ा है। अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखने हेतु कटिबद्ध इस गीत का स्थान कोई अन्य गीत नहीं ले सकता। यह गीत स्वतंत्रता संघर्ष के भावातिरेक तथा मार्मिकता को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है .....''

(पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 25 अगस्त, 1948 को संसद में दिए गए वक्तव्य से)

राष्ट्र गान से पुराना गीत है–वन्दे मातरम्। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने सन् 1882 में इस गीत को लिखा और अपने उपन्यास 'आनन्दमठ' में प्रकाशित किया। शायद इस गीत की उत्पत्ति काफी समय पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में हुई थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वर्ष 1896 के सत्र में वन्दे मातरम् को पहली बार किसी राजनैतिक अवसर पर गाया गया। इस गीत की सांगीतिक स्वरलिपि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने तैयार की थी।

सन् 1905 में बंगाल के विभाजन ने राष्ट्रीय जागरण का आरंभ स्पष्टतः चिह्नित किया। बाद में बंगाल में चल रहे विभाजन–विरोधी आंदोलन के दौरान संपन्न सभी सभाओं में 'वन्दे मातरम्' गाया जाने लगा, क्योंकि इससे देशभक्ति की भावनाएं उत्पन्न होती थीं। सन् 1906 में बारिसाल में जब बंगाल प्रान्तीय सम्मेलन संपन्न हुआ, उस समय तक यह गीत इतना अधिक लोकप्रिय हो गया था कि इससे मातृभूमि के प्रति प्रेम व उमंग की भावनाएं जागृत हुई। उस समय विभाजन के विरोध को संबल प्रदान करने के लिए होने वाली सभी जन – सभाएं वन्दे मातरम् के गायन से ही आरंभ होती थीं। कांग्रेस सत्र के प्रथम दिन तो स्वयं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने यह गीत गाया था।

"वन्दे मातरम्" अंकित अगस्त 1906 का कलकत्ता में फहराया गया ध्वज

VANDE MATARAM

"....Vande Mataram is obviously and indisputably the premier National Song of India with a great historical tradition; it was intimately connected with our struggle for freedom. That position it is bound to retain and no other song can displace it. It represents the passion and poignancy of that struggle, ..."

[from statement made by Pt. Jawaharlal Nehru in Constituent Assembly on August 25, 1948]

The song, Vande Mataram is older than our National Anthem and was penned by Bankim Chandra Chatterjee in his novel Anandamath published in 1882. The origin, however, dates much earlier perhaps in the seventh decade of the nineteenth century. The first political occasion when Vande Mataram was sung was at the 1896 session of the Indian National Congress. Rabindranath Tagore scored the music for the song.

The partition of Bengal in 1905 marked the beginning of a national awakening. Later on during the anti-partition movement in Bengal, the song Vande Mataram was sung at all gatherings and evoked patriotic feelings. By the time the Bengal provincial conference was held at Barisal in 1906, the song had become very popular as it generated passion and love for the motherland. All the public meetings that were held in Bengal to protest against the partition started with the singing of Vande Mataram. Gurudev Rabindranath Tagore himself sang the song on the opening day of the Congress Session.

Postage Stamp of India (1976) depicting 'Vande Mataram'

'वन्दे मातरम्' की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देख अंग्रेज़ सत्ताधारियों ने तुरंत ही एक आदेश पारित कर दिया कि 'वन्दे मातरम्' का गली–कूँचों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर नारे के रूप में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, पर इसका कोई लाभ नहीं हुआ। धीरे–धीरे 'वन्दे मातरम्' गीत के यही प्रथम दो शब्द, राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रतीक और प्रचार का एक रूप बन गए। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि इन प्राथमिक शब्दों – जिसे मंत्र कहा जा सकता है – ने भारत की जनता को मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर करने के लिए प्रेरित किया। लोगों ने स्वेच्छा से अपना सब कुछ त्याग दिया और शारीरिक तथा मानसिक यातनाएं भी सहीं, जिसके फलस्वरूप हमारे राष्ट्र को स्वतंत्रता मिली।

'वन्दे मातरम्' इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि कांग्रेस कार्यकारी समिति ने उस समय प्रस्ताव पारित किया

''समस्त बातों को मदेनज़र रखते हुए यह समिति सुझाव देती है कि राष्ट्रीय सभाओं में, जहां कहीं भी 'वन्दे मातरम्' गीत गाया जाय, इसके केवल प्रथम दो अनुच्छेद ही गाए जाने चाहिए। साथ ही 'वन्दे मातरम्' के स्थान पर अन्य कोई भी अनापत्तिजनक गीत प्रस्तुत करने की आयोजकों को पूर्ण स्वतंत्रता होगी। ''

तब राष्ट्र गान के रूप में 'वन्दे मातरम्' की उपयुक्तता का गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परामर्श से परीक्षण करने के लिए सन् 1937 में कांग्रेस कार्यकारी समिति ने एक उप – समिति भी गठित की, जिसमें मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस तथा आचार्य नरेन्द्र देव को शामिल किया गया।

'वन्दे मातरम्' के बारे में महात्मा गांधी के विचार

''..... इस गीत का स्रोत कुछ भी रहा हो और केसे तथा कब इस गीत की रचना की गई, यह जाने बिना इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विभाजन के दिनों में बंगाल के मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच यह एक अत्यंत प्रभावशाली लड़ाई का उद्घोष बन गया था। यह एक साम्राज्य – विरोधी उद्घोष था। एक नवयुवक के रूप में, जब मुझे 'आनन्द मठ' अथवा उसके अमर लेखक बंकिम के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी, उस समय 'वन्दे मातरम्' गीत ने मुझे मंत्रामुग्ध कर दिया था और जब मैंने पहली बार इसे गीत रूप में सुना, तो इसके वशीभूत हो गया। मैं इस गीत में निहित विशुद्ध निर्मल राष्ट्रीय भावना से जुड़ गया। सभी समुदायों की मिली–जुली सभा में विशेष रूप से 'वन्दे मातरम्' गाने पर झगड़ा करने का खतरा मैं मोल नहीं लूँगा। इसका कभी गलत उपयोग नहीं होगा। यह गीत करोड़ो के हृदय में प्रतिष्ठापित है। यह गीत बंगाल तथा बंगाल के बाहर, करोड़ों की देशभक्ति को गहराई तक झकझोरता है। इस गीत के चुने हुए अनुच्छेद पूरे राष्ट्र को हम सबके बीच बंगाल की भेंट हैं।''

–हरिजन, 1 जुलाई, 1939

मैडम कामा द्वारा इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस, स्टुटगार्ड में वर्ष 1907 में फहराया गया ध्वज

Soon the British authorities passed the order that Vande Mataram should not be shouted on the streets or in public places ; but to no avail. Gradually, the first two words of the song Vande Mataram became the symbol and a form of propaganda of the nationalist movement. It is a fact that this initial word; the *mantra* inspired the people of India to lay down their lives for their motherland. People willingly sacrificed their all and suffered physical and mental tortures for attaining freedom.

'Vande Mataram' became so popular that the Congress Working Committee at that time resolved that —

"Taking all things into consideration, therefore, this committee recommends that wherever the Vande Mataram is sung at national gatherings, only the first two stanzas should be sung with perfect freedom to the organisers to sing any other song of an unobjectionable character, in addition to, or in place of, the Vande Mataram song."

Then in 1937, a Subcommittee consisting of Maulana Abul Kalam Azad, Jawaharlal Nehru, Subhash Chandra Bose and Acharya Narendra Dev was constituted to examine in consultation with Gurudev Rabindranath Tagore, the suitability of the song as a national anthem.

Mahatma Gandhi's views on Vande Mataram

"... No matter what its source was and how and when it was composed, it had become a most powerful battle cry among Hindus and Musalmans of Bengal during the partition days. It was an anti-imperialist cry. As a lad, when I knew nothing of Anandamath or even Bankim, it's immortal author, Vande Mataram had gripped me, and when I first heard it, sung it, had enthralled me. I associated the purest national spirit with it. It never occurred to me that it was a Hindu song or meant only for Hindus. Unfortunately now we have fallen on evil days. What was pure gold before has become base metal today. In touching it is wisdom not to market pure gold and let it be sold as base metal. I would not make a single quarrel over singing Vande Mataram at a mixed gathering. It will never suffer from misuse. It is enthroned in the hearts of millions. It stirs to its depth the patriotism of millions in and outside Bengal. Its chosen stanzas are Bengali's gift among many others to the whole nation."

-Harijan, July 1, 1939

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना–पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित–द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।

सप्तकोटिकण्ड–कल–कल–निनादकराले,
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृतखरकरवाले,
अबला केन मा एत बले!
बहुबलधारिणीं नमामितारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम्

तुमि विद्या तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल–दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमानि त्वां
नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीम् मातरम्।

('बंकिम रचनावली' से)

Vande mātaram

Vande mātaram.
Sujalām sufalām malayaja sheetalām
Shasyashyāmalām mātaram.
Shubhra jyotsnā-pulakita yāmineem
Fullkusumita-drumadala shobhineem,
Suhāsineem sumadhur bhāshineem
Sukhadām varadām mātaram.

Saptakotikantha-kala-kala-ninādakarāle,
Dwisaptakoti bhujaidhrita kharakarawāle,
Abalā ken mā aita bale!
Bahubaldhārineem namāmitārineem
Ripudalavārineem mātaram.

Tumi vidyā tumi dharmma
Tumi hridi tumi marmma
Twam hi prānāh shareere.
Bāhute tumi mā shakti,
hridaye tumi mā bhakti,
Tomāraee pratimā gadi mandire mandire.
Twam hi durgā dashapraharanadhārinee
Kamalā kamala-dalavihārinee
Vānee vidyādāyinee namāmi twām
Namāmi kamalām amalām atulām
Sujalām sufalām mātaram
Vande mātaram
Shyāmalām saralām susmitām bhushitām
Dharaneem bharaneem mātaram.

(From 'Bankim Rachanāvalee')

नमन करूं मैं माँ को!
सुजला, सुफला, मलयजशीतला
शस्य श्यामला माँ को!

जिसकी रातें शुभ्र चाँदनी से हैं पुलकित,
फूले कुसुमों वाले द्रुमदल से जो शोभित
सुहासिनी को, सुभाषिणी को
सुखदा, वरदा माँ को!
नमन करूँ मैं माँ को!

कोटि–कोटि कंठों में तेरा कलकल स्वर,
द्विगुणित कोटि भुजाओं में तलवार प्रखर,
फिर कह सकता कौन कि माँ, तुम हो अबला!
नमन तुम्हारे चरणों में हे तारिणि! सबला!
शत्रु समूह निवारिणि माँ को!
नमन करूँ मैं माँ को!

तुम विद्या हो, धर्म तुम्हीं हो,
अंतर्मन का मर्म तुम्हीं हो,
हर शरीर में प्राण तुम्हीं हो!
शक्ति भुजा की,
भक्ति हृदय की,
सुघड़ मूर्ति मंदिर–मंदिर की!
दुर्गा तुम दश आयुध–धारिणि,
लक्ष्मी हो तुम कमल–विहारिणी,
सरस्वती माँ विद्यादायिनि,

कमला, अमला, अतुला –
सुजला सुफला माँ को;
श्यामला, सरला, सुस्मिता, भूषिता,
धरणी, भरणी माँ को!
नमन करूँ मैं माँ को!

हिन्दी काव्यानुवाद : डा. सुरेश पंत

Mother, I bow to thee!
Rich with the hurrying streams,
Bright with thy orchard gleams,
Cool, with thy winds of delight,
Dark fields waving, Mother of might
Mother free

Glory of moonlight dreams -
Over thy branches and lordly streams, -
Clad in thy blossoming trees,
Mother, giver of ease
Laughing low and sweet!
Mother, I kiss thy feet,
Speaker sweet and low!
Mother, to thee I bow

Who hath said thou art weak in thy lands,
When the swords flash out in crores and crores of hands
And crores and crores of voices roar
Thy dreadful name from shore to shore
With many strengths who are mighty and stored,
To thee I call, Mother and Lord!
To her I cry who ever her foemen brave
Back from plain and sea
And shook herself free

Thou art wisdom, thou art law,
Thou our heart, our soul, our breath
Thou the love divine, the awe
In our hearts that conquers death
Thine the strength that nerves the arm.
Thine the beauty, thine the charm
Every image made divine
In our temples is but thine

Thou art Durga, Lady and Queen,
With her hands that strike and her swords of sheen,
Thou art Lakshmi lotus-throned,
And the Muse a hundred-toned.
Pure and perfect without peer
Mother, lend thine ear
Rich with thy hurrying streams,
Bright with thy orchard gleams,
Dark of hue, O candid fair,
And thy glorious smile divine
Loveliest of all earthly lands,
Showering wealth from well stored hands!
Mother, mother mine
Mother sweet, I bow to thee
Mother great and free!

Poetic Translation by Shri Aurobindo

बंकिमचन्द्र चटर्जी

बंकिमचन्द्र चटर्जी, उन्नीसवीं शताब्दी के विशिष्ट साहित्यकारों में से एक थे। उनका जीवन भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए त्याग और अविरत संघर्ष का एक सतत आख्यान था। उन्हें साहित्य सम्राट के रूप में जाना जाता है। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व तथा दार्शनिक विचारधाराओं का दायरा साहित्य के अतिरिक्त, विज्ञान, शिक्षा, इतिहास, सामाजिक सुधारों तथा राजनिति के क्षेत्र तक फैला हुआ है।

बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म राजा राममोहन राय की मृत्यु के पांच वर्ष पश्चात् 26 जून, 1838 को कांठालपाड़ा नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता राखालचन्द्र कुलीन नागरिक थे और उप–जिलाधीश के पद पर आसीन थे। बंकिमचन्द्र के एक छोटा और दो बड़े भाई थे। उनके बड़े भाई संजीव चन्द्र, साहित्य प्रेमी और 'बंगदर्शन' नामक साहित्यिक पत्रिका के दूसरे संपादन थे।

पिता का कांठालपाड़ा से मिदनापुर स्थानांतरण होने पर बंकिमचन्द्र को मिदनापुर के अंग्रेजी स्कूल में दाखिल करवाया गया, जहां उन्होंने सन् 1844 से 1849 तक पांच वर्ष तक अध्ययन किया। वे एक मेधावी छात्र थे। कांठालपाड़ा वापस आने पर उन्होंने जाने–माने विद्वानों से बंगला और संस्कृत माध्यम में शिक्षा ग्रहण की। उसी वर्ष 1849 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के हुगली कालेज (जो बाद में हुगली मोहसिन कालेज के नाम से जाना गया) में दाखिला दिया। बंकिमचन्द्र ने इस कॉलेज में सात वर्ष तक अध्ययन किया। वे कॉलेज के सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्रों में से एक थे।

सन् 1857 में बंकिमचन्द्र ने कानून के छात्र के रूप में प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया। जब भारत की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई आंरभ हुई, उस समय बंकिमचन्द्र उन्नीस वर्ष के थे। तब बंकिमचन्द्र ने पढ़ाई समाप्त कर कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वे सन् 1858 के प्रथम स्नातक समूह में थे। बंकिमचन्द्र ने तैंतीस वर्ष तक सरकारी नौकरी भी की।

Bankim Chandra Chatterjee

Bankim Chandra Chatterjee was one of the most outstanding personalities of nineteenth century. His life was a saga of ceaseless struggle and sacrifice in the cause of India's freedom movement. Though he is known as a "Sahitya Samrat", his multi-faceted personality and his thoughts and philosophical ideologies travelled beyond the literary world to the field of science, education, history, social reforms and politics.

Bankim Chandra Chatterjee was born at Kantalpara on June 26, 1838, five years after the death of Raja Rammohan Roy. His father Rakhal Chandra was an aristocratic Brahmin. He had the coveted post of Deputy Collector. Bankim Chandra had two elder brothers and one younger brother. His elder Sanjiv Chandra was a lover of literature and was the second editor of the *Bangadarshan.*

Consequent upon his father's transfer from Kantalpara to Midnapore, Bankim Chandra was admitted in English School at Midnapore, where he studied for five years from 1844 to 1849. He was a brilliant student. He came back to Kantalpara and got his instructions in Bengali and Sanskrit from renowned scholars. In the same year, that is 1849 he joined Hooghly College (later named as Hooghly Mohosin College) for further studies. He studied there for seven years and was one of the most outstanding students of the college.

In 1857 Bankim Chandra joined the Presidency College at Kolkata as a student of Law. He was nineteen years of age when India's first war of Independence began. Bankim Chandra was finishing his studies at that time and in the year 1858 he graduated from the University of Calcutta.

It was in the year 1876 that he made his first outstanding contribution to the cause of modern science in India. In that year the Indian Association of the Cultivation of Science was founded by Dr. Mahendra Lal Sircar. When Dr. Sircar was unable to raise sufficient funds for the Association to carry out research and scientific activities, it was Bankim Chandra Chatterjee through his writings in the journal *Bangadarshan* who appealed for the noble cause of Dr. Sircar's scientific work. His efforts yielded fruitful results and enough funds, were collected to run the association. It is a little known fact that Dr. C.V. Raman, India's nobel laureate in physics, was partly a product of this organisation.

Bankim Chandra's work of first fiction to appear in print was a novel 'Rajmohan's Wife', published in 1864. *Durgeshnandini,* a Bengali romantic novel was published in1865, and subsequently, *Kapalkundala* in 1866. Many other works of literature followed in later years. It is however, in *Anandamath,* written in 1882 where we see Bankim's genius as a historical fiction writer.

Bankim Chandra died in 1894 at the age of fifty six years.

सन् 1876 में उन्होंने भारत में आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दिया। उस वर्ष डा. महेन्द्रलाल सरकार ने शोध और वैज्ञानिक गतिविधियों को विकसित करने के लिए इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइन्स का गठन किया था। जब सार्वजनिक अपील किए जाने के बावजूद डा. सरकार कोष एकत्रित करने में सफल नहीं हो पाए तो, बंगदर्शन के लिए लिखने वाले बंकिमचन्द्र ने एक सामान्य स्तर पर पाश्चात्य विज्ञान की हिमायत की तथा डा. सरकार के महान उद्देश्य की सफलता हेतु प्रचार–प्रसार किया। इससे एसोसिएशन चलाने के लिए पर्याप्त कोष एकत्रित हुआ। इस तथ्य को बहुत कम लोग जानते हैं कि भौतिकी में भारत के महान वैज्ञानिक डा. सी. वी. रमन भी एक प्रकार से इसी इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइन्स की उपज थे।

बंकिमचन्द्र का प्रथम मुद्रित कथा–साहित्य 'राजमोहन की पत्नी' शीर्षक उपन्यास था, जो सन् 1864 में क्रमानुसार 'इंडियन फील्ड' में प्रकाशित हुआ था। बंकिमचन्द्र का प्रथम बंगला प्रेमकथा–साहित्य 'दुर्गेशनंदिनी' सन् 1865 में प्रकाशित हुआ और तत्पश्चात् सन् 1866 में 'कपाल कुण्डला' प्रकाशित हुआ। बाद के वर्षो में बंकिमचन्द्र की अन्य अनेक साहित्यिक कृतियाँ प्रकाशित हुई। पर, हम 'आनन्दमठ' (1882) में एक ऐतिहासिक कथा –साहित्य लेखक के रूप में बंकिमचन्द्र की प्रतिभा को देख सकते हैं।

बंकिमचन्द्र का निधन सन् 1894 में छप्पन वर्ष की आयु में हुआ।

बंकिमचन्द्र द्वारा लिखित 'आनन्दमठ' एक राजनैतिक उपन्यास है। यह उपन्यास विदेशी शासन के अत्याचार से सन्यासी सत्यानन्द के नेतृत्व में, मातृभूमि को मुक्त कराने के महान कार्य को समर्पित युवा संगठन की कहानी है, जो स्वयं को मातृभूमि की संतान कहते हैं। ये सभी संतानें, एक गुप्त संगठन की सदस्य हैं, जिसका मुख्य स्थान आनन्दमठ एक वन के बीचोंबीच अवस्थित है। यह उपन्यास 18 वीं शताब्दी के अंत में बंगाल में पड़े भीषण अकाल का जीवन्त व वास्तविक वर्णन तथा संतानों द्वारा किए गए सशस्त्र विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारणों व स्थितियों को प्रस्तुत करता है। अत्यंत उत्कृष्टता से लिखे इस उपन्यास ने धार्मिक तथा देशभक्तिपूर्ण राष्ट्रीय गतिविधियों को पर्याप्त प्रेरक शक्ति प्रदान की और बंकिमचन्द्र को अपने समय के उच्च कोटि के उपन्यासकारों के बीच संस्थापित कर दिया।

Bankim's Anandamath is a political novel. It is the story of a group of young men led by Satyananda, a Sanyasi who are dedicated to the cause of the liberation of their motherland from the tyranny of foreign rule. They call themselves Santaans (children) of the motherland. The Santaans are members of a secret organisation which has the headquarters in the Anandamath, hidden in the heart of a forest. The novel presents a vivid and realistic description of the great famine of Bengal in the late 18th century and actually the causes and conditions which led to the armed revolt of the Santaans. The novel written with great finesse gave tremendous impetus to the religions, patriotic and national activities and placed Bankim Chandra among the top novelists of his times.

वंदे मातरम् की स्वर लिपि

स्थाई

सा	–	रे	–	–	म	प	म	प	–	–	–				
वं	–	दे	–	–	मा	–	त	रम्	–	–	–				
म	–	प	–	–	नि	सां	नि	सां	–	–	–				
वं	–	दे	–	–	मा	–	त	रम्	–	–	–				
सा	रे	नि	–	ध	प	–	–	प	ध	म	–	गं	रे	–	–
सु	ज	लाम्	–	–	–	–	–	सु	फ	ला	–	–	म्	–	–
रे	प	म	म	ग	–	रे	ग	सा	–	–	सा				
म	ल	य	ज	शी	–	–	त	ला	–	–	म्				
सा	–	रे	म	प	म	प	–	प	प	नि	ध	ध प	–	–	प
श	–	स्य	श्या	–	म	ला	–	म्	मा	–	त	र	–	–	म्

अंतरा

म	–	प	–	प नि	–	नि	–	नि	नि	सां	नि	सां	–	–	नि
शु	–	भ्र	–	ज्यो	–	त्स्ना	म्	पु	ल	कि	त	या	–	–	मि
सां	–	–	सां												
नी	–	–	म्												
नि	नि	नि	नि	सां	नि	सां	–	सां	सां रें	सां	नि	नि	ध	सां नि	ध
फु	–	ल्ल	कु	सु	मि	त	–	द्रु	म	द	ल	शो	–	–	भि
ध प	–	–	प												
नी	–	–	म्												
रे	रे	भ	ग	रे	रे	–	–	रे	नि	ध	नि	ध	प	–	ध
सु	हा	–	सि	नी	म्	–	–	सु	म	धु	र	भा	–	–	षि
प	–	–	प												
णी	–	–	म्												
म	प	प नि	नि	नि	नि	नि	नि	–	नि	सां	नि	सां	–	–	सां
सु	ख	दा	म्	व	र	दा	म्	–	मा	–	त	र	–	–	म्
म	–	प	–	–	नि	सां	नि	सां	–	–	सां				
वं	–	दे	–	–	मा	–	त	र	–	–	म				
म	–	प	–	–	नि	सां	नि	सां	–	–	सां				
वं	–	दे	–	–	मा	–	त	र	–	–	म्				

NOTATION OF VANDE MATARAM

Sthayee

Sa	-	Re	-	-	Ma	Pa	Ma	Pa	-	-	-				
Van	-	De	-	-	Ma	-	Ta	Ram	-	-	-				
Ma	-	Pa	-	-	Ni	Sa	Ni	Sa	-	-	-				
Van	-	De	-	-	Ma	-	Ta	Ram	-	-	-				
Sa	Re	Ni	-	Dha	Pa	-	-	Pa	Dha	Ma	-	Ga	Re	-	-
Su	Ja	Lam	-	-	-	-	-	Su	fa	La	-	-	M	-	-
Re	Pa	Ma	Ma	Ga	-	Re	Ga	Sa	-	-	Sa				
Ma	La	Ya	Ja	Shi	-	-	Ta	La	-	-	M				
Sa	-	Re	Ma	Pa	Ma	Pa	-	Pa	Pa	Ni	Dha	Dha Pa	-	-	Pa
Sha	-	Sya	Shya	-	Ma	La	-	M	Ma	-	Ta	Ra	-	-	M

Antara

Ma	-	Pa	-	Pa Ni	-	Ni		Ni	Ni	Sa	Ni	Sa-	-	-	Ni
Shu	-	Bhra	-	Jyo	-	Tsnam	Pu	La	Ki	Ta	Ya	-	-	M	
Sa	-	-	Sa												
Ni	-	-	M												
Ni	Ni	Ni	Ni	Sa	Ni	Sa	-	Sa	Sa Re	Sa	Ni	Ni	Dha	Sa Ni	Dha
Phu	-	LLa	Ku	Su	Mi	Ta	-	Dru	Ma	Da	La	Sho	-	-	Bhi
Dha Pa	-	-	Pa												
Ni	-	-	M												
Re	Re	Ma	Ga	Re	Re	-	-	Re	Ni	Dha	Ni	Dha	Pa	-	Dha
Su	Ha	-	Si	Ni	m	-	-	Su	Ma	Dhu	r	Bha	-	-	Shi
Pa	-	-	Pa												
Ni	-	-	m												
Ma	Pa	Pa Ni	Ni	Ni	Ni	Ni	Ni	-	Ni	Sa	Ni	Sa	-	-	Sa
Su	Kha	Da	M	Va	Ra	Da	M	-	Ma	-	Ta	ra	-	-	m
Ma	-	Pa	-	-	Ni	Sa	Ni	Sa	-	-	Sa				
Van	-	De	-	-	Ma	-	Ta	Ra	-	-	M				
Ma	-	Pa	-	-	Ni	Sa	Ni	Sa	-	-	Sa				
Van	-	De	-	-	Ma	-	Ta	Ra	-	-	M				

छात्रों तथा अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

'वन्दे मातरम्' राष्ट्र गीत केसे बना तथा राष्ट्र गीत को पहली बार कब गाया गया?

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई गीत लिखे व गाए गए, इन गीतों को ढूंढकर इनमें से कुछ गीतों व कविताओं को एकत्रित कीजिए।

'वन्दे मातरम्' पर हमारे देश के प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा दिए गए कथनों तथा सूक्तियों को एकत्रित कीजिए।

बंकिमचंद्र चटर्जी की जीवनी तथा साहित्य पर जानकारी एकत्रित कीजिए।

राष्ट्रीय पर्वों को मनाए जाने के दौरान बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा लिखित उपन्यास 'आनन्दमठ' पर आधारित नाटक तैयार कीजिए।

भारत की विविध प्रादेशिक भाषाओं में 'वन्दे मातरम्' के अनुवादों को एकत्रित कीजिए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा प्रयुक्त नारों को एकत्रित कीजिए, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भारत के लोगों को प्ररित किया।

अपने शब्दों में 'वन्दे मातरम्' गीत का काव्यानुवाद लिखिए।

Creative Activities for Students and Teachers

How did the song 'Vande Mataram' become the national song and when was the national song first sung?

Many songs were written and sung during freedom struggle, identify and collect some of these songs and poems.

Collect quotes and statements made by famous personalities of our country on 'Vande Mataram'

Collect information on the life history (biography) and works of Bankim Chandra Chatterjee.

During the celebration of national festivals, organise plays/dramas based on the novel 'Anandamath' written by Bankim Chandra Chatterjee.

Collect the translations of 'Vande Mataram' in various regional languages of India.

Collect the slogans used by the freedom fighters during the Indian Independence Movement which inspired the people of India to attain the freedom.

Write a poetic translation of the song 'Vande Mataram' in your own words.

About the Centre

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organises a variety of training programmes for administrators, teacher educators, inservice teachers of all levels and students. These aim at sensitising the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The audio and video cassettes on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

The CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

References

Bagchee, Moni, (1977), "Bande Mataram", Bombay.

Banerjee, Surendranath, (1925), "A Nation in Making, 2nd impression", London.

Chatterjee, Bankim Chandra, "Ananda Math".

Constituent Assembly Debates, Vol. XXII : 1, (January 24, 1950).

Dey, S.K., "It is Tagore singing Bande Mataram", in Amrit Bazar Patrika, (August 14, 1968).

Mukherjee, H., and Mukherjee, U., (1957), "Bande Mataram and Indian Nationalism", Kolkata.

Zaidi, A.M., and S.G., (1980), "The Enyclopaedia of the Indian National Congress", New Delhi.

Photo Credits

Press Information Bureau, New Delhi

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

First Edition 1998
Reprint Edition 2015
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2015

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at J.J. Offset Press, Noida, U.P.

NATIONAL FLAG

The story of the origin and adoption of the National Flag is indeed a fascinating one. Personal, racial, and political ideologies have influenced the concept and design of the flag as we see it today.

It is not confirmed, but commonly believed that the first National Flag had three horizontal stripes. The middle yellow colour had *Vande Mataram* in blue written across it in the Devanagari script. Eight lotus flowers were embossed on the top stripe which was of green colour and on the bottom red stripe there was a white sun on the left, and a white crescent and star on the right. Some scholars assert there was no star on the crescent on the flag that was hoisted on August 7, 1906 in the Parsee Bagan Square in Kolkata

In the story of the evolution of the flag, we come across another flag which was unfurled at the International Socialist Congress at Stuttgart, Germany in 1907 by Madame Cama and her band of exiled revolutionaries. This was similar to the first flag except for a few changes. The design of the eight lotus flowers was different, the sun on the bottom red stripe was shifted to the right of the flag and the crescent to the left. There was no star on the crescent. This flag was smuggled into India by Indulal Yagnik, the socialist leader of Gujarat.

In 1917, by the time the third flag was hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak during the Home Rule Movement, our freedom struggle had already taken on a significant momentum. Five red and four green horizontal stripes arranged alternately on the flag on which seven stars in the *saptrishi* configuration were superimposed. On the top left hand corner was the Union Jack and the top right hand corner, a white crescent and star. The inclusion of the Union Jack symbolized the goal of Dominion Status, and hence was not accepted by a large number of people.

Flag of the Home Rule Movement, 1917 hoisted by Dr. Annie Besant and Lokamanya Tilak

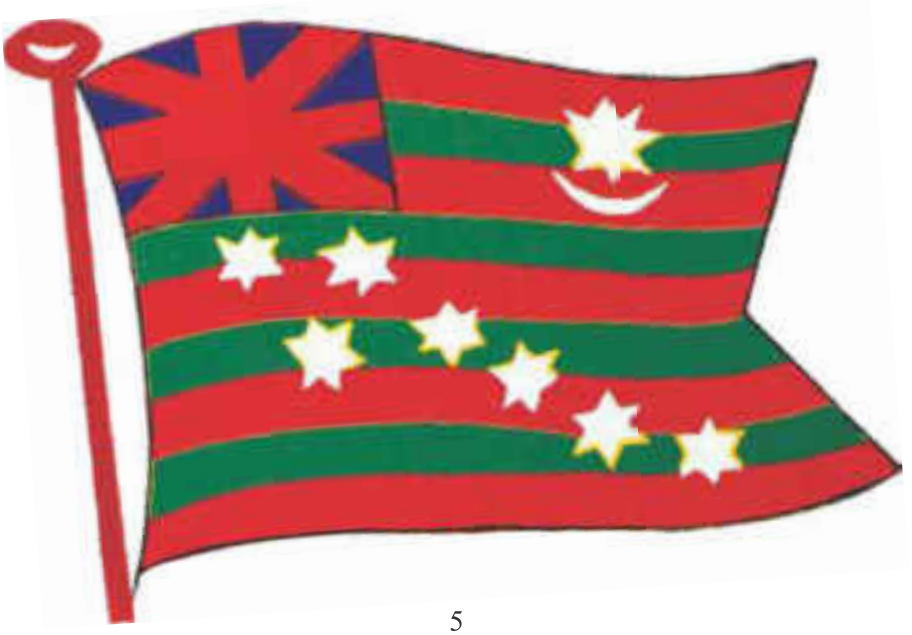

आठ कमल–पुष्पों की परिकल्पना भिन्न थी। निचली लाल पट्टी पर अंकित सूर्य को ध्वज के दायीं ओर तथा अर्धचन्द्र को बायीं ओर अंकित कर दिया गया था। अर्धचन्द्र पर कोई तारा अंकित नहीं था। गुजरात के समाजवादी नेता इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा यह ध्वज भारत में चुपके से लाया गया था।

सन् 1917 में जब गृह शासन आन्दोलन के दौरान लोकमान्य तिलक तथा डा. एनी बेसेण्ट द्वारा तीसरा ध्वज फहराया गया, उसके पहले ही हमारे स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ लिया था। इस ध्वज में पांच लाल तथा चार हरी समस्तर पट्टियां एकान्तर से व्यवस्थित की गई थीं, जिस पर सप्तऋषि की आकृति में सात तारे बने हुए थे। सबसे ऊपरी बायें कोने पर ब्रिटिश ध्वज और ऊपरी दांये कोने पर एक श्वेत अर्धचन्द्र व तारा अंकित था। ब्रिटिश ध्वज को शामिल करना स्वामित्व की स्थिति के ध्येय को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करना था। अतः इसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

सन् 1921 में बेज़वाड़ा (वर्तमान विजयवाड़ा) में संपन्न अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के दौरान आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक ध्वज की परिकल्पना तैयार कर उसे महात्मा गांधी को दिखाया। इसमें दो रंग थे – हरा तथा लाल। प्रगति का परिचायक एक बड़ा–सा चरखा भी अंकित था। गांधीजी ने इसमें एक श्वेत पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया। तत्पश्चात् इस ध्वज में तीन रंग हो गए – सफेद, हरा तथा लाल और बीचोंबीच नीले रंग से चरखे की आकृति इस पर अध्यारोपित कर दी गई। इस ध्वज का सन् 1931 तक संपन्न सभी कांग्रेस अधिवेशनों में उपयोग किया गया, हालांकि कांग्रेस के एक आधिकारिक ध्वज के रूप में इसकी स्वीकृति का कोई प्रमाण हमें प्राप्त नहीं होता।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सन् 1931 में करांची (अब पाकिस्तान में) में संपन्न बैठक में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता से संबंधित प्रस्ताव पारित किया गया, जो आधिकारिक रूप से कांग्रेस को स्वीकार्य हो। ध्वज में निर्धारित रंगों के साम्प्रदायिक अर्थ प्रतिपादन के कारण पहले ही ध्वज में प्रयुक्त रंगों के महत्व पर पर्याप्त बहस हो चुकी थी।

कांग्रेस द्वारा नियुक्त सात सदस्यों की एक समिति ने सादे केसरी ध्वज का सुझाव प्रस्तुत किया, जिसके ऊपरी बांये कोने पर लालिमा युक्त भूरे रंग से चरखे की आकृति बनी हुई थी। इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अस्वीकार कर दिया था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

हमें याद रखना चाहिए कि वर्ष 1931, ध्वज के विकास के इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना थी। इस वर्ष तिरंगे ध्वज का हमारे राष्ट्र ध्वज के रूप में अभिग्रहण किए जाने संबंधी एक प्रस्ताव पारित किया गया। केसरिया, श्वेत तथा हरी पट्टियों से युक्त तिरंगे को स्वीकृत करते हुए प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि इन रंगों का कोई साम्प्रदायिक महत्त्व नहीं है और इसके अर्थ को निम्न रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए :

केसरिया – हिम्मत और त्याग
श्वेत – सत्य और शान्ति
हरा – विश्वास और शौर्य

इस ध्वज की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में चरखे की एक आकृति अध्यारोपित थी। इस ध्वज का आकार तीन चौड़ाई गुणा दो चौड़ाई था। इस प्रस्ताव को पहली बार राष्ट्र के रूप में कांग्रेस की आधिकारिक स्वीकृति प्रदान की गई।

The tricolour approved by Gandhiji, 1921

Flag proposed in AICC session in 1931

During the All India Congress Committee (AICC) meeting at Bezwada (now Vijaywada), in 1921, a youth from Andhra Pradesh designed a flag and took it to Mahatma Gandhi. It had two colours - green and red and a large *charkha* (spinning wheel) symbolising progress. Gandhiji suggested the addition of a white stripe. The flag had three colours - white, green and red and a *charkha* superimposed in blue in the centre. This flag was used at all Congress Sessions till 1931 though one does not find any record of acceptance of this as the official Congress Flag.

In 1931, when the All India Congress Committee met at Karachi (now in Pakistan), a resolution was passed stressing the need for a flag which would be officially acceptable to the Congress. There was already considerable controversy over the significance of the colours in the flag mainly due to the communal interpretations of these colours.

A Committee of seven members appointed by the Congress suggested a plain saffron flag with a *charkha* in reddish brown on the top left hand corner. However, it was not accepted by the All India Congress Committee.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

We should remember that the year 1931 was a landmark in the history of the evolution of the flag. A resolution was passed adopting a tricolour flag as our National Flag. Approving the tricolour with saffron, white and green stripes, the resolution clearly stated that the colours had no communal significance and were to be interpreted thus :

Saffron for courage and sacrifice
White for truth and peace
Green for faith and chivalry

संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 ईस्वी को इस ध्वज को स्वतंत्र भारत के राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। रंग पहले वाले ही रहे तथा ध्वज पर प्रतीक स्वरूप सम्राट अशोक के धर्मचक्र ने चरखे का स्थान ले लिया। यह प्रस्ताव संविधान सभा में पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

"हम कृतसंकल्प हैं कि भारत का राष्ट्र ध्वज समस्तर होगा, जिसमें गहरा केसरी, श्वेत व गहरा हरा रंग समानुपातिक रूप में होगा। श्वेत पट्टी के मध्य में चरखे को प्रस्तुत करने के लिए गहरे नीले रंग में एक चक्र होगा। चक्र की यह परिकल्पना सारनाथ स्थित सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की कंगनी के शीर्ष फलक पर दिखाई देती है। चक्र का व्यास लगभग श्वेत पट्टी की चौड़ाई के बराबर ही होगा। ध्वज की चौड़ाई और लंबाई का अनुपात सामान्यतः 2'x3' होगा।"

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

पंडित नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत ध्वजचक्र एक समकोणात्मक फलक था, जो तीन समकोणात्मक पट्टियों अथवा समान चौड़ाई वाली उप – पट्टियों से बना था। सबसे ऊपरी केसरी और नीचे की पट्टी हरे रंग की थी। बीच की पट्टी श्वेत थी, जिसके मध्य में गहरे नीले रंग से अशोक चक्र की परिकल्पना अध्यारोपित थी। ऐसा सुझाव दिया गया था कि सभी परिस्थितियों में चक्र को ध्वज के दोनों ओर स्क्रीन प्रिंटिंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, अन्यथा दोनों ओर चक्र को मुद्रित, स्टेंसिल अथवा कशीदाकारी द्वारा अंकित किया जाना चाहिए। ध्वज के लिए प्रयुक्त किए गए वस्त्र का ही अध्यारोपण हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

It carried a *charkha* in navy blue on the white band. The size was three breadths by two breadths. This resolution for the first time conferred official Congress recognition on the tricolour as the National Flag.

" On July 22, 1947 the Constituent Assembly adopted this as Independent India's National Flag. The colours remained the same, the Dharmachakra of Emperor Ashoka replaced the *charkha* as the emblem on the flag". This resolution was moved by Pandit Jawaharlal Nehru in the Constituent Assembly.

" Resolved that the National Flag of India shall be a horizontal colour of deep saffron (Kesari), white and dark green in equal proportions. In the centre of the white band there shall be a wheel in navy blue to represent the charkha. The design of the wheel (chakra) which appears on the abacus of the Sarnath Lion Capital of Ashoka.

The diameter of the wheel shall be approximate to the width of the white band. The ratio of the width to the length of the flag shall ordinarily be two breadths by three breadths."

Flag adopted by the Constituent Assembly, 1947

ये तिरंगा हमारा प्राण है
हमारी आन है, हमारी शान है

The flag presented by Pandit Nehru to the Constituent Assembly was a tricolour rectangular panel, made up of three rectangular panels or sub panels of equal width. The colour of the top panel is Indian saffron *(Kesari)* and of the bottom panel Indian green. The middle

भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर – शक संवत्

ऐसा माना जाता है कि कनिष्क के राज्यभिषेक के साथ ही 78 ई. में शक संवत् आंरभ हुआ।

प्रो. एम. एन साहा ने सुझाव दिया कि राजा कनिष्क का 1 वर्ष प्राचीन शक का 201वां वर्ष है। यह सुझाव सही भी हो सकता है, चूंकि ऐसा माना जाता है कि प्राचीन शक संवत् 129 ईसा पू. के बजाय 123 ईसा पूर्व में आरंभ हुआ था। एल. डी. लीउन की भी यही अभिधारणा थी, क्योंकि कनिष्क ने 78 ई. अर्थात 201 घटा 123 में राज्य करना आरंभ किया था।

अभिलेखात्मक विवरण और समकालीन इतिहास में उल्लेख किया गया है कि सात वर्ष की लंबी लड़ाई के बाद पार्थीय शासकों से बैक्ट्रिया जीतने के पश्चात् हूणों के दबाव के कारण जब शक शासक मध्य एशिया से आए, तब 123 ईसा पू. में शक संवत् आंरभ हुआ। इस संवत् को शकों के एक नेता 'एज़स' के नाम के आधार पर शायद 'एज़स' भी कहा जाता है। जब शकों ने 'शकस्थान' छोड़ा, यानि आधुनिक अफ़गानिस्तान से भारत आए, तो वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित हुए। वे मूलतः अपने सिक्कों पर यूनानी भाषा का प्रयोग करते थे, पर बाद में उन्होंने खरोष्ठी और ब्राह्मी का भी प्रयोग करना आरंभ कर दिया। उन्होंने भारतीय महीनों का भी प्रयोग करना आरंभ किया। 78 ई. से आंरभ होने वाला प्राचीन शक संवत् और कुछ नहीं, 200 घटा 123 ईसा पू. से आरंभ होने वाला प्रचीन शक संवत् ही है, ताकि कनिष्क का 1 वर्ष प्राचीन शक संवत् का 201 वर्ष हो।

शक संवत् को शक काल, शक भूप काल, शकेउद्र काल, सालिवाहन शक और संवत् भी कहा जाता है। चन्द्र – सौर गणना के लिए इसके वर्ष चैत्रादि और सौर गणना के लिए मेषादि हैं।

खगोल विज्ञानी वराहमिहिर (मृत्यु 587 ई.) के समय से और शायद उसके भी पहले से भारत भर में भारतीय ज्योतिषियों द्वारा प्रयुक्त सम श्रेष्ठ संवत् शक संवत् है। भारतीय पंचांग निर्माता, अब भी गणनाओं के लिए शक संवत् का ही प्रयोग करते हैं और फिर गणनाओं को अपनी प्रणाली में परिवर्तित करते हैं।

मासिक चंद्र चक्र में नक्षत्रों के नामों के अनुरूप तिथियां और वार्षिक सौर कैलेण्डर में मासों के खण्ड उस समय क्षितिज में नक्षत्रों की स्थिति से लिए गए हैं, और वे यथावत् हैं। महीनों के नाम बदल अवश्य गए हैंः चैत्र (मार्च–अप्रैल), वैशाख (अप्रैल–मई), ज्येष्ठ (मई–जून) .....

भारत ने पश्चिम से सात दिन के सप्ताह की प्रक्रिया को भी अपनाया है और सप्ताह के सात दिनों के नाम भी अनुरूप ग्रहों के अनुसार रखे हैंः सूर्य के आधार पर रविवार; चंद्रमा के आधार पर सोमवार; मंगल के आधार पर मंगलवार; बुध के आधार पर बुधवार; बृहस्पति के आधार पर बृहस्पतिवार; शुक्र के आधार पर शुक्रवार; तथा शान्ति के आधार पर शनिवार।

भारत के सुदीर्घ इतिहास में अनेक युगों तथा प्रणालियों का अनुसरण किया गया।

Scythian head, Kushana dynasty, 2nd century C.E., Mathura

The inscriptional records and contemporary history mentions that Saka Era started in 123 B.C.E when Saka Kings came from Central Asia, because of the pressure of Huns who conquered Bactria from the Parthian emperors after a long battle of seven years. This Era was also referred the 'Azes' Era named after probably one 'Azes', the leader of Sakas. When the Sakas spread from 'Sakasthan' the present modern Afghanistan into India, they began to be influenced by Indian culture. Initially using Greek in their coins, later, they started to use *Kharosthi* and *Brahmi* as well. They also began to use Indian months. The classical Saka Era starting from 78 C.E. is nothing but the old Saka Era starting from 123 B.C.E with 200 omitted, so that the year 1 of Kanishka is year 201 of the old Saka Era.

The Saka Era is also called Saka Kala, Saka Bhupa Kala, Sakeudra Kala, Salivahana Saka and also Saka Samvat. Its years are *Chaitradi* for luni-solar reckoning and *Mesadi* for solar reckoning.

The Saka Era is the Era par excellence which has been used by Indian astronomers all over India in their calculations since the time of the astronomer Varahamihir (died 587 C.E.) or probably earlier. The Indian almanac makers, even now, use the Saka Era for calculations and then convert the calculations to their own system.

The names of the *nakshatras* to which correspond the *tithis* in the monthly lunar cycle and segments of months in the annual solar calendar, are derived from the constellations in the horizon at that time and have remained the same. The names of the months have changed: *Chaitra* (March-April), *Vaisakha* (April-May), *Jyaistha* (May-June)-----

राष्ट्रीय पक्षी

मोर

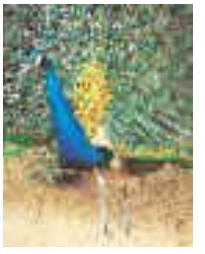

Peacock

NATIONAL BIRD

वन्दे मातरम्

''..... एक महान ऐतिहासिक परंपरा का वाहक गीत–'वन्दे मातरम्' स्पष्ट एवं निर्विवाद रूप से भारत का सर्वप्रथम राष्ट्र गीत है। ये गीत हमारे स्वतंत्रता संग्राम के साथ अंतरंग रूप से जुड़ा है। अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखने हेतु कटिबद्ध इस गीत का स्थान कोई अन्य गीत नहीं ले सकता। यह गीत स्वतंत्रता संघर्ष के भावातिरेक तथा मार्मिकता को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है .....''

(पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 25 अगस्त, 1948 को संसद में दिए गए वक्तव्य से)

राष्ट्र गान से पुराना गीत है–वन्दे मातरम्। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने सन् 1882 में इस गीत को लिखा और अपने उपन्यास 'आनन्दमठ' में प्रकाशित किया। शायद इस गीत की उत्पत्ति काफी समय पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में हुई थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वर्ष 1896 के सत्र में वन्दे मातरम् को पहली बार किसी राजनैतिक अवसर पर गाया गया। इस गीत की सांगीतिक स्वरलिपि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने तैयार की थी।

सन् 1905 में बंगाल के विभाजन ने राष्ट्रीय जागरण का आरंभ स्पष्टतः चिह्नित किया। बाद में बंगाल में चल रहे विभाजन–विरोधी आंदोलन के दौरान संपन्न सभी सभाओं में 'वन्दे मातरम्' गाया जाने लगा, क्योंकि इससे देशभक्ति की भावनाएं उत्पन्न होती थीं। सन् 1906 में बारिसाल में जब बंगाल प्रान्तीय सम्मेलन संपन्न हुआ, उस समय तक यह गीत इतना अधिक लोकप्रिय हो गया था कि इससे मातृभूमि के प्रति प्रेम व उमंग की भावनाएं जागृत हुई। उस समय विभाजन के विरोध को संबल प्रदान करने के लिए होने वाली सभी जन – सभाएं वन्दे मातरम् के गायन से ही आरंभ होती थीं। कांग्रेस सत्र के प्रथम दिन तो स्वयं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने यह गीत गाया था।

"वन्दे मातरम्" अंकित अगस्त 1906 का कलकत्ता में फहराया गया ध्वज

VANDE MATARAM

"....Vande Mataram is obviously and indisputably the premier National Song of India with a great historical tradition; it was intimately connected with our struggle for freedom. That position it is bound to retain and no other song can displace it. It represents the passion and poignancy of that struggle, ..."

[from statement made by Pt. Jawaharlal Nehru in Constituent Assembly on August 25, 1948]

The song, Vande Mataram is older than our National Anthem and was penned by Bankim Chandra Chatterjee in his novel Anandamath published in 1882. The origin, however, dates much earlier perhaps in the seventh decade of the nineteenth century. The first political occasion when Vande Mataram was sung was at the 1896 session of the Indian National Congress. Rabindranath Tagore scored the music for the song.

The partition of Bengal in 1905 marked the beginning of a national awakening. Later on during the anti-partition movement in Bengal, the song Vande Mataram was sung at all gatherings and evoked patriotic feelings. By the time the Bengal provincial conference was held at Barisal in 1906, the song had become very popular as it generated passion and love for the motherland. All the public meetings that were held in Bengal to protest against the partition started with the singing of Vande Mataram. Gurudev Rabindranath Tagore himself sang the song on the opening day of the Congress Session.

Postage Stamp of India (1976) depicting 'Vande Mataram'

'वन्दे मातरम्' की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देख अंग्रेज़ सत्ताधारियों ने तुरंत ही एक आदेश पारित कर दिया कि 'वन्दे मातरम्' का गली–कूँचों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर नारे के रूप में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, पर इसका कोई लाभ नहीं हुआ। धीरे–धीरे 'वन्दे मातरम्' गीत के यही प्रथम दो शब्द, राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रतीक और प्रचार का एक रूप बन गए। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि इन प्राथमिक शब्दों – जिसे मंत्र कहा जा सकता है – ने भारत की जनता को मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर करने के लिए प्रेरित किया। लोगों ने स्वेच्छा से अपना सब कुछ त्याग दिया और शारीरिक तथा मानसिक यातनाएं भी सहीं, जिसके फलस्वरूप हमारे राष्ट्र को स्वतंत्रता मिली।

'वन्दे मातरम्' इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि कांग्रेस कार्यकारी समिति ने उस समय प्रस्ताव पारित किया

''समस्त बातों को मदेनज़र रखते हुए यह समिति सुझाव देती है कि राष्ट्रीय सभाओं में, जहां कहीं भी 'वन्दे मातरम्' गीत गाया जाय, इसके केवल प्रथम दो अनुच्छेद ही गाए जाने चाहिए। साथ ही 'वन्दे मातरम्' के स्थान पर अन्य कोई भी अनापत्तिजनक गीत प्रस्तुत करने की आयोजकों को पूर्ण स्वतंत्रता होगी। ''

तब राष्ट्र गान के रूप में 'वन्दे मातरम्' की उपयुक्तता का गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परामर्श से परीक्षण करने के लिए सन् 1937 में कांग्रेस कार्यकारी समिति ने एक उप – समिति भी गठित की, जिसमें मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस तथा आचार्य नरेन्द्र देव को शामिल किया गया।

'वन्दे मातरम्' के बारे में महात्मा गांधी के विचार

''..... इस गीत का स्रोत कुछ भी रहा हो और केसे तथा कब इस गीत की रचना की गई, यह जाने बिना इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विभाजन के दिनों में बंगाल के मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच यह एक अत्यंत प्रभावशाली लड़ाई का उद्घोष बन गया था। यह एक साम्राज्य – विरोधी उद्घोष था। एक नवयुवक के रूप में, जब मुझे 'आनन्द मठ' अथवा उसके अमर लेखक बंकिम के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी, उस समय 'वन्दे मातरम्' गीत ने मुझे मंत्रामुग्ध कर दिया था और जब मैंने पहली बार इसे गीत रूप में सुना, तो इसके वशीभूत हो गया। मैं इस गीत में निहित विशुद्ध निर्मल राष्ट्रीय भावना से जुड़ गया। सभी समुदायों की मिली–जुली सभा में विशेष रूप से 'वन्दे मातरम्' गाने पर झगड़ा करने का खतरा मैं मोल नहीं लूँगा। इसका कभी गलत उपयोग नहीं होगा। यह गीत करोड़ो के हृदय में प्रतिष्ठापित है। यह गीत बंगाल तथा बंगाल के बाहर, करोड़ों की देशभक्ति को गहराई तक झकझोरता है। इस गीत के चुने हुए अनुच्छेद पूरे राष्ट्र को हम सबके बीच बंगाल की भेंट हैं।''

–हरिजन, 1 जुलाई, 1939

मैडम कामा द्वारा इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस, स्टुटगार्ड में वर्ष 1907 में फहराया गया ध्वज

Soon the British authorities passed the order that Vande Mataram should not be shouted on the streets or in public places ; but to no avail. Gradually, the first two words of the song Vande Mataram became the symbol and a form of propaganda of the nationalist movement. It is a fact that this initial word; the *mantra* inspired the people of India to lay down their lives for their motherland. People willingly sacrificed their all and suffered physical and mental tortures for attaining freedom.

'Vande Mataram' became so popular that the Congress Working Committee at that time resolved that —

"Taking all things into consideration, therefore, this committee recommends that wherever the Vande Mataram is sung at national gatherings, only the first two stanzas should be sung with perfect freedom to the organisers to sing any other song of an unobjectionable character, in addition to, or in place of, the Vande Mataram song."

Then in 1937, a Subcommittee consisting of Maulana Abul Kalam Azad, Jawaharlal Nehru, Subhash Chandra Bose and Acharya Narendra Dev was constituted to examine in consultation with Gurudev Rabindranath Tagore, the suitability of the song as a national anthem.

Mahatma Gandhi's views on Vande Mataram

"... No matter what its source was and how and when it was composed, it had become a most powerful battle cry among Hindus and Musalmans of Bengal during the partition days. It was an anti-imperialist cry. As a lad, when I knew nothing of Anandamath or even Bankim, it's immortal author, Vande Mataram had gripped me, and when I first heard it, sung it, had enthralled me. I associated the purest national spirit with it. It never occurred to me that it was a Hindu song or meant only for Hindus. Unfortunately now we have fallen on evil days. What was pure gold before has become base metal today. In touching it is wisdom not to market pure gold and let it be sold as base metal. I would not make a single quarrel over singing Vande Mataram at a mixed gathering. It will never suffer from misuse. It is enthroned in the hearts of millions. It stirs to its depth the patriotism of millions in and outside Bengal. Its chosen stanzas are Bengali's gift among many others to the whole nation."

-Harijan, July 1, 1939